तमन्नाओं को एक फकत उस क़मीज़ में लपेटकर लखनऊ से कलकत्ता आया था कि इस एक नई कमीज़ को पहनकर दिन-भर मिलों में नौकरी की तलाश में घूमूंगा, शाम को टहलने जाऊंगा और रात को अपने ही हाथों सनलाइट साबुन से उसकी मालिश किया करूंगा। मुर्गी के लिए तकुए का घाव ही बहुत होता है। मेरी कमीज़ का फट जाना और अवध के कन्हैया नवाब वाजिदअली शाह साहब से अंग्रेजों का उनकी तमाम सल्तनत का छीन लेना, बिलकुल एक ही वज़न की दो चीजें थीं।

पैदाइश, रहना-सहना खास लखनऊ का ही ठहरा, अगर कहीं बनारस या मिर्ज़ापुर का असर होता, तो आप यकीन मानिए, उस पान वाले की खैर न थी, जो कम्बख्त दीवार में कील ठोके रहता है। नवाब साहब ने बड़े अफसोस के साथ मेरी तरफ देखकर हमदर्दी से भरे दो-चार अलफाज़ कह दिए। गमगीन था ही, उनकी इस हमदर्दी से हुब्बे-वतनी ने ज़ोर मारा। एकदम एक सेकेण्ड के लिए अपना दुख-दर्द भूलकर अपने शहर की तहज़ीब के खयाल में गर्क हो कुछ यों ही बदहवास-सा हो गया और क़मीज़ की बांह पकड़कर उसी बदहवासी की हालत में जो आगे बढ़ा, तो नवाब साहब भी पलटे। मेरे एक हल्के-से धक्के से उनकी पतली खुशनुमा, नाज़ुक छड़ी हाथ से छूटकर गिर पड़ी।

कसम खा के कहता हूं, शर्म से पानी-पानी हो गया। "आह मुआफ फरमाइएगा," कहकर मैंने लपककर उनकी छड़ी उठाई, दामन से साफ किया, होंठों से चूमा और दोनों हाथों में रखकर उनकी तरफ झुका। झुककर नवाब साहब ने छड़ी उठाई, शुक्रिया अदा किया और फिर फरमाया, "आपकी कमीज़ फट जाने का मुझे निहायत अफसोस हुआ !"

उनके सामने कैसे कहता कि अफसोस की बस अब कुछ पूछिए मत। यहां तो दिल पर छुरियां चल रही हैं। मगर दिली जज़्बात को कलेजे पर हाथ रखके रोका और यों अर्ज़ किया, "अजी वाह, इस ज़री-सी बात के लिए अपने दिल को रंज न पहुंचाएं। कोई खास बात नहीं। मैं जनाब की इस हमदर्दी के लिए शुक्रिया अदा करने की इजाज़त चाहता हूं।"

बड़े तपाक के साथ नवाब साहब ने फरमाया, "वल्ला, आप भी…" फिर एक लहमे के लिए रुककर ज़रा जोश के साथ कहा, "माशाअल्ला,

तमन्नाओं को एक फकत उस क़मीज़ में लपेटकर लखनऊ से कलकत्ता आया था कि इस एक नई कमीज़ को पहनकर दिन-भर मिलों में नौकरी की तलाश में घूमूंगा, शाम को टहलने जाऊंगा और रात को अपने ही हाथों सनलाइट साबुन से उसकी मालिश किया करूंगा। मुर्गी के लिए तकुए का घाव ही बहुत होता है। मेरी कमीज़ का फट जाना और अवध के कन्हैया नवाब वाजिदअली शाह साहब से अंग्रेज़ों का उनकी तमाम सल्तनत का छीन लेना, बिलकुल एक ही वज़न की दो चीज़ें थीं।

पैदाइश, रहना-सहना खास लखनऊ का ही ठहरा, अगर कहीं बनारस या मिर्ज़ापुर का असर होता, तो आप यकीन मानिए, उस पान वाले की खैर न थी, जो कम्बख्त दीवार में कील ठोके रहता है। नवाब साहब ने बड़े अफसोस के साथ मेरी तरफ देखकर हमदर्दी से भरे दो-चार अलफाज़ कह दिए। गमगीन था ही, उनकी इस हमदर्दी से हुब्बे-वतनी ने जोर मारा। एकदम एक सेकेण्ड के लिए अपना दुख-दर्द भूलकर अपने शहर की तहज़ीब के खयाल में गर्क हो कुछ यों ही बदहवास-सा हो गया और क़मीज़ की बांह पकड़कर उसी बदहवासी की हालत में जो आगे बढ़ा, तो नवाब साहब भी पलटे। मेरे एक हल्के-से धक्के से उनकी पतली खुशनुमा, नाज़ुक छड़ी हाथ से छूटकर गिर पड़ी।

कसम खा के कहता हूं, शर्म से पानी-पानी हो गया। "आह मुआफ फरमाइएगा," कहकर मैंने लपककर उनकी छड़ी उठाई, दामन से साफ किया, होंठों से चूमा और दोनों हाथों में रखकर उनकी तरफ झुका। झुककर नवाब साहब ने छड़ी उठाई, शुक्रिया अदा किया और फिर फरमाया, "आपकी कमीज़ फट जाने का मुझे निहायत अफसोस हुआ!"

उनके सामने कैसे कहता कि अफसोस की बस अब कुछ पूछिए मत। यहां तो दिल पर छुरियां चल रही हैं। मगर दिली जज़्बात को कलेजे पर हाथ रखके रोका और यों अर्ज़ किया, "अजी वाह, इस ज़री-सी बात के लिए अपने दिल को रंज न पहुंचाएं। कोई खास बात नहीं। मैं जनाब की इस हमदर्दी के लिए शुक्रिया अदा करने की इजाज़त चाहता हूं।"

बड़े तपाक के साथ नवाब साहब ने फरमाया, "वल्ला, आप भी···" फिर एक लहमे के लिए रुककर ज़रा जोश के साथ कहा, "माशाअल्ला,

नवाव साहव ने वात पलटते हुए कहा, "लखनऊ में आप किस जगह तशरीफ रखते हैं ?"

"फिदवी पाटेनाले पर आपके ज़ेर साये परवरिश पाता है।"

"क्या फरमाया आपने, पाटेनाले पर ? पाटेनाले पर तो मेरे मामूज़ाद भाई भी रहते हैं। गालिवन् आप उनसे वाकिफ भी हों। जनाव फरज़न्द अली साहव उनका इस्म-मुवारक है।"

हलफ उठाकर कहता हूं, इस नाम को अपनी जिन्दगी में पहली ही वार सुना था। वजह यह थी कि पाटेनाले वाला अपना ज़ाती मकान जव खंडहर हो गया, तभी से वालिद बुज़ुर्गवार साहव मय अपने वाल-वच्चों के मुफ्तीगंज में एक किराये के मकान में उठ आए थे; मगर अव इस वक्त तो अपनी, अपने वाप-दादों के वड़प्पन की और नवाव साहव की शान रखनी थी। लिहाज़ा चट से वोल उठा, "वखूवी जानता हूं साहव। और सच तो यह है कि नवाव साहव के यहां ही मेरी चौवीस घण्टे की वैठक है। च्-हा-हा-हा, अल्ला ताला ने क्या नेक तवीयत उनको वख्शी है ! वाह-वाह ! खुदा उन्हें सलामत रक्खे, वड़े ही ज़िन्दादिल आदमी हैं वह भी।"

नवाव साहव ने एक वार फिर वड़े जोश के साथ मेरा हाथ दवाया और वोले, "ओहो, तव तो आप मेरे अज़ीज़ हैं। जनाव का इस्मशरीफ ?"

"खाकसार को 'तस्लीम' लखनवी कहते हैं।"

"अक्खा, आप ही तस्लीम साहव हैं। जनाव से नियाज़ हासिल करने का तो एक अर्से से इश्तियाक था। और फरज़न्द भाई तो आपकी इस कदर तारीफ करते थे कि वस ! यकीन मानिएगा, सचमुच इस वक्त तो तवीयत खुश हो गई भाईजान ! वल्ला देखिए, खुदा की मर्ज़ी ! च्-हा-हा-हा। भई फिर कहूंगा कि खूव मिले भाईजान ! जिन दिनों मैं लखनऊ गया हुआ था, शायद आप वहां तशरीफ नहीं रखते थे।

"जी हां, आपका फरमाना वजा है। उन दिनों देवें-शरीफ का मेला था, वहीं मुशायरे का इन्तज़ाम था और आपका यह गुलाम उस जल्से की सदारत के लिए गया था, वरना आपसे दीदार हासिल हो जाता।"

"और कहिए, फरज़न्द भाई तो मज़े में हैं न ?"

नवाब साहब ने बात पलटते हुए कहा, "लखनऊ में आप किस जगह तशरीफ रखते हैं ?"

"फिदवी पाटेनाले पर आपके ज़ेर साये परवरिश पाता है।"

"क्या फरमाया आपने, पाटेनाले पर ? पाटेनाले पर तो मेरे मामूज़ाद भाई भी रहते हैं। गालिबन् आप उनसे वाकिफ भी हों। जनाब फरज़न्द अली साहब उनका इस्म-मुबारक है।"

हलफ उठाकर कहता हूं, इस नाम को अपनी जिन्दगी में पहली ही बार सुना था। वजह यह थी कि पाटेनाले वाला अपना ज़ाती मकान जब खंडहर हो गया, तभी से वालिद बुज़ुर्गवार साहब मय अपने बाल-बच्चों के मुफ्तीगंज में एक किराये के मकान में उठ आए थे; मगर अब इस वक्त तो अपनी, अपने बाप-दादों के बड़प्पन की और नवाब साहब की शान रखनी थी। लिहाज़ा चट से बोल उठा, "बखूबी जानता हूं साहब। और सच तो यह है कि नवाब साहब के यहां ही मेरी चौबीस घण्टे की बैठक है। च्-हा-हा-हा, अल्ला ताला ने क्या नेक तबीयत उनको बख्शी है ! वाह-वाह ! खुदा उन्हें सलामत रक्खे, बड़े ही ज़िन्दादिल आदमी हैं वह भी।"

नवाब साहब ने एक बार फिर बड़े जोश के साथ मेरा हाथ दबाया और बोले, "ओहो, तब तो आप मेरे अज़ीज़ हैं। जनाब का इस्मशरीफ ?"

"खाकसार को 'तस्लीम' लखनवी कहते हैं।"

"अक्खा, आप ही तस्लीम साहब हैं। जनाब से नियाज़ हासिल करने का तो एक अर्से से इश्तियाक था। और फरज़न्द भाई तो आपकी इस कदर तारीफ करते थे कि बस ! यकीन मानिएगा, सचमुच इस वक्त तो तबीयत खुश हो गई भाईजान ! वल्ला देखिए, खुदा की मर्जी ! च्-हा-हा-हा। भई फिर कहूंगा कि खूब मिले भाईजान ! जिन दिनों मैं लखनऊ गया हुआ था, शायद आप वहां तशरीफ नहीं रखते थे।

"जी हां, आपका फरमाना बजा है। उन दिनों देवें-शरीफ का मेला था, वहीं मुशायरे का इन्तज़ाम था और आपका यह गुलाम उस जल्से की सदारत के लिए गया था, वरना आपसे दीदार हासिल हो जाता।"

"और कहिए, फरज़न्द भाई तो मज़े में हैं न ?"

सब अल्लाह का शुक्र है, आपकी नवाजिश है।"

"लखनऊ में शायद आप अच्छन टांगेवाले को भी जरूर जानते होंगे। जनाब, ऐसा जबर्दस्त पेंच लड़ानेवाला आपको जरा कम मिलेगा। च्-ग्रहा-हा ! अभी हाल ही में जब मैं लखनऊ गया था, फरजन्द भाई ने कहा, 'मियां, इसका भी पेंच देखते जाओ।' हमने हंसकर टाल दिया कि क्या खाकर कोई अब लखनऊ में कनकव्वा उड़ाएगा ! कहां तो साहब यह हाल था कि आप यकीन नहीं लाएंगे, मेरे वालिद साहब मरहूम ने एक बार हुसेनाबाद वाले लड्डन नवाब से मैदान बदा। आप यकीन मानें, आंखों देखी बात अर्ज कर रहा हूं। वो-वो पेंच लड़े थे, कि बस आपसे क्या अर्ज करूं। सारा शहर खड़ा-खड़ा देख रहा था। और साहब, लड्डन नवाब ने जो झल्लाकर पौनतावा जन्न से मैदान में उतारा तो बस सारा शहर एक मुंह से यही कह उठा कि भाई, बाजी इस बार लड्डन नवाब के हाथ रहेगी। मगर वाह रे मेरे अब्बाजान ! खुदा उन्हें जन्नत बख्शे; तीन दिन और तीन रात तक वह ऐसा नचाते रहे कि बस अब आपसे क्या अर्ज करूं। देखनेवालों ने अपनी-अपनी उंगलियां काट लीं। और फिर चौथे दिन उन्होंने नवाब लड्डन को छकाकर वो कन्ने पर से लपेट मारी कि पौनतावा सर-से गायब। यानी कि आप यकीन मानें, बड़े-बड़े सिन-रसीदा बुजुर्गवार भी कह उठे कि भाई, ऐसे पेंच तो हमने जिन्दगी-भर नहीं देखे थे।"

गर्ज कि बातें करते हम लोग जकरिया स्ट्रीट तक पहुंचे ही थे कि एका-एक इस जन्नाटे से पानी आया कि बस आपसे क्या अर्ज करूं। हम लोग एक दूकान के बरामदे के नीचे खड़े हो गए। अनकरीब पन्द्रह मिनट तक हम लोग वहीं खड़े रहे। आखिरकार नवाब साहब ने ऊबकर कहा, "आइए जनाब, अब हम लोग यहां कब तक खड़े रहें ? इसी बिल्डिंग के तीन तल्ले पर मेरे एक अजीज रहते हैं। चलिए, तब तक वहीं आराम किया जाए।"

यह कहते हुए नवाब साहब आगे बढ़े, मैं भी उनके पीछे ही पीछे चला। दो-तीन सीढ़ी घूमकर एक कमरे के दरवाजे पर खड़े हो नवाब साहब ने आवाज लगाई, "अमां बच्छन हैं ?"

सब अल्लाह का शुक्र है, आपकी नवाजिश है।"

"लखनऊ में शायद आप अच्छन टांगेवाले को भी जरूर जानते होंगे। जनाव, ऐसा जवर्दस्त पेंच लड़ानेवाला आपको जरा कम मिलेगा। च्-अहा-हा ! अभी हाल ही में जव मैं लखनऊ गया था, फरजन्द भाई ने कहा, 'मियां, इसका भी पेंच देखते जाओ।' हमने हंसकर टाल दिया कि क्या खाकर कोई अव लखनऊ में कनकव्वा उड़ाएगा ! कहां तो साहव यह हाल था कि आप यकीन नहीं लाएंगे, मेरे वालिद साहव मरहूम ने एक वार हुसेनावाद वाले लड्डन नवाव से मैदान वदा। आप यकीन मानें, आंखों देखी वात अर्ज कर रहा हूं। वो-वो पेंच लड़े थे, कि वस आपसे क्या अर्ज करूं। सारा शहर खड़ा-खड़ा देख रहा था। और साहव, लड्डन नवाव ने जो झल्लाकर पौनतावा जन्न से मैदान में उतारा तो वस सारा शहर एक मुंह से यही कह उठा कि भाई, वाजी इस वार लड्डन नवाव के हाथ रहेगी। मगर वाह रे मेरे अव्वाजान ! खुदा उन्हें जन्नत वख्शे; तीन दिन और तीन रात तक वह ऐसा नचाते रहे कि वस अव आपसे क्या अर्ज करूं। देखनेवालों ने अपनी-अपनी उंगलियां काट लीं। और फिर चौथे दिन उन्होंने नवाव लड्डन को छकाकर वो कन्ने पर से लपेट मारी कि पौनतावा सर-से गायव। यानी कि आप यकीन मानें, वड़े-वड़े सिन-रसीदा वुजुर्गवार भी कह उठे कि भाई, ऐसे पेंच तो हमने जिन्दगी-भर नहीं देखे थे।"

गर्ज कि वातें करते हम लोग जकरिया स्ट्रीट तक पहुंचे ही थे कि एका-एक इस जन्नाटे से पानी आया कि वस आपसे क्या अर्ज करूं। हम लोग एक दूकान के वरामदे के नीचे खड़े हो गए। अनकरीव पन्द्रह मिनट तक हम लोग वहीं खड़े रहे। आखिरकार नवाव साहव ने ऊवकर कहा, "आइए जनाव, अव हम लोग यहां कव तक खड़े रहें ? इसी विल्डिंग के तीन तल्ले पर मेरे एक अज़ीज़ रहते हैं। चलिए, तव तक वहीं आराम किया जाए।"

यह कहते हुए नवाव साहव आगे वढ़े, मैं भी उनके पीछे ही पीछे चला। दो-तीन सीढ़ी घूमकर एक कमरे के दरवाजे पर खड़े हो नवाव साहव ने आवाज़ लगाई, "अमां वच्छन हैं ?"

१८

डाक्टरी साइनबोर्ड

चौड़ी-चौड़ी सड़कों और बड़ी-बड़ी दूकानों वाले हाट-बाट की चमक-दमक पर तो सभी रीझते हैं, पर गली-दर-गलियों की भूलभुलैया में आबाद तिरमुहानी बाज़ार की शोभा को निरखनेवाले कुछ भाग्यवान ही होते हैं। जो तिरमुहानी न गए 'गंजिग' ही करते रहे, उन्हें पांच-छः हज़ार बरस की अटूट परम्परा वाले भारतीय बाज़ार का कोई अंदाज़ ही नहीं लग सकता। कतार में बैठे सुनारों की दूकानों से उठनेवाली हथौड़ियों की सौ-सौ चोटों की ठक-ठक अपनी सामूहिक गूंज में सामने वाले लुहार के घन की चोटों से टक्कर ले रही है। कहीं तरकारी वालों की दूकानों पर ग्राहकों और दूकानदारों के बीच चलती झांव-झांव उस पतली-सी गली में लाखों के मजमे की कौआरोर का मजा दे रही है। कहीं कूड़ा, कहीं कीचड़ ! प्यादों की आवाजाही में आवारा गायों की शतरंजी फीले के समान सीधी और साइकिल वालों की ढाई घरी चाल बराबर किसी न किसीको शह देती चली जाती है। कहीं आटे की चक्की से लगा-बंधा हुल्लड़ है, तो कहीं पंसारी की दूकान का शोर। तीन लंबी-लंबी गलियों तक व्याप्त इस बाज़ार में प्रायः सभी कामचलाऊ वस्तुएं मिल जाती हैं। बिसातखाने, बज़ाज़े, कोर्स पुस्तक-विक्रेता, हलवाई, पनवाड़ी, सिन्धी-रेस्टरां—यहां क्या नहीं है ?

पहली गली में सेठ भजगोविन्ददास साहूकार हैं, जिनकी सतखण्डी हवेली में जगह-जगह बड़े बेपुराने ताले पड़े हैं। उनके एक अदद पुराना नौकर है, जो देखने से मालूम पड़ता है मानो मिस्र के पिरामिडों की खुदाई से कोई ज़िन्दा निकल आनेवाली ममी हो। एक अदद मुनीमजी हैं। तीसरे स्वयं सेठ भजगोविन्ददास तो हैं ही, जो एक अदद होने पर भी सारे शहर से भारी बैठते हैं। उनका इकलौता लड़का और बहू अंग्रेज़ी

९

डाक्टरी साइनबोर्ड

चौड़ी-चौड़ी सड़कों और बड़ी-बड़ी दूकानों वाले हाट-बाट की चमक-दमक पर तो सभी रीझते हैं, पर गली-दर-गलियों की भूलभुलैया में आबाद तिरमुहानी बाज़ार की शोभा को निरखनेवाले कुछ भाग्यवान ही होते हैं। जो तिरमुहानी न गए 'गंजिंग' ही करते रहे, उन्हें पांच-छ: हज़ार बरस की अटूट परम्परा वाले भारतीय बाज़ार का कोई अंदाज़ ही नहीं लग सकता। कतार में बैठे सुनारों की दूकानों से उठनेवाली हथौड़ियों की सौ-सौ चोटों की ठक-ठक अपनी सामूहिक गूंज में सामने वाले लुहार के घन की चोटों से टक्कर ले रही है। कहीं तरकारी वालों की दूकानों पर ग्राहकों और दूकानदारों के बीच चलती झांव-झांव उस पतली-सी गली में लाखों के मजमे की कौआरोर का मज़ा दे रही है। कहीं कूड़ा, कहीं कीचड़! प्यादों की आवाजाही में आवारा गायों की शतरंजी फीले के समान सीधी और साइकिल वालों की ढाई घरी चाल बराबर किसी न किसीको शह देती चली जाती है। कहीं आटे की चक्की से लगा-बंधा हुल्लड़ है, तो कहीं पंसारी की दूकान का शोर। तीन लंबी-लंबी गलियों तक व्याप्त इस बाज़ार में प्राय: सभी कामचलाऊ वस्तुएं मिल जाती हैं। बिसातखाने, बज़ाज़े, कोर्स पुस्तक-विक्रेता, हलवाई, पनवाड़ी, सिन्धी-रेस्टरां—यहां क्या नहीं है?

पहली गली में सेठ भजगोविन्ददास साहूकार हैं, जिनकी सतखण्डी हवेली में जगह-जगह बड़े बेपुराने ताले पड़े हैं। उनके एक अदद पुराना नौकर है, जो देखने से मालूम पड़ता है मानो मिस्र के पिरामिडों की खुदाई से कोई ज़िन्दा निकल आनेवाली ममी हो। एक अदद मुनीमजी हैं। तीसरे स्वयं सेठ भजगोविन्ददास तो हैं ही, जो एक अदद होने पर भी सारे शहर से भारी बैठते हैं। उनका इकलौता लड़का और बहू अंग्रेज़ी

का विस्तर गोल करा दिया। डाक्टर साहब के पास हर आमोखास के आगे रोने के लिए ये तीन विशेप घटनाएं तो हैं ही, और साथ ही अनेक शिकायतें भी हैं, जो समय और परिस्थिति के अनुसार उठती-वैठती रहती हैं। घर, दूकानें बाप-दादों की हैं, जिसमें नुक्कड़ वाली में आपका मतब है और अगल-वगल दो गलियों में पड़नेवाली दूकानों में पुराने किरायेदार हैं, जो कम्बख्त खाली ही नहीं करते कि उन्हें फिर से ऊंचे किराये पर उठा सकें। घर में ऊपर-नीचे दो सिंधी परिवार वसा रखे हैं और आप भी रहते हैं, सो उसमें भी किरायेदारों की आपसी और मकान-मालिक के साथ होनेवाली तकरारें, नल और सण्डास की झांव-झांव, इश्कवाज़ी की घातें, धोखा-धड़ी आदि की शिकायतें हैं। इनकी एक किरायेदारिन ने इन्हें दूर ही से ललचा-ललचाकर इनसे अपना किराया आधा करवा लिया और अब रुख भी नहीं मिलाती। ऊपर से पास-पड़ोस की औरतों में इन्हें वदमाश कह-कर वदनाम करती है। डाक्टर यह दुःख भी जव-तव प्रकट तो करते ही रहते हैं; पर किरायेदार न रखें तो करें क्या? पेट-पालन का यही एक-मात्र साधन है और उसमें भी हाउस टैक्स, वाटर टैक्स आदि पचासों अलसेटें हैं। इधर एक नई शिकायत यह उपजी कि लाइन बोर्ड से एक पपड़ी और उखड़ गई है, जिससे सीधे उनके सुनाम पर प्रहार हुआ है, मक्खनलाल का 'ल' अक्षर ही गायव हो गया है।

तिरमुहानी वाज़ार की तीसरी महान विभूति जनाव वालिद दुनिया-वादी हैं, मां-वाप छुटपन में ही मर गए। चाचा-चाची ने पाला। इनकी एक छोटी वहन भी है। उसके विवाह के खर्च का वहाना लेकर चाचा ने वालिद के माता-पिता द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति हड़प कर ली। कहा-सुनी होने पर चाचा ने वालिद को निकाल दिया। वालिद तव इण्टर में पढ़ते थे। अपना विस्तर, वक्स और किताबें लेकर इसी मुहल्ले की एक वूढ़ी महराजिन के यहां चार रुपये भाड़े पर एक कमरे में रहने लगे। पचास रुपये की दो ट्यूशनें इनके पास थीं, उसीसे गाड़ी खींचते थे। डिस्टिक्शन से इण्टर पास किया, एम० ए० तक शानदार पास हुए, दो वार आई० ए० एस० में वैठ चुके थे। अव की अंतिम वार भी परीक्षा और इण्टरव्यू दे आए हैं, रिजल्ट की प्रतीक्षा है। आदमी वहुत तेज़ हैं। कहते हैं, या तो

का विस्तर गोल करा दिया। डाक्टर साहब के पास हर आमोखास के आगे रोने के लिए ये तीन विशेप घटनाएं तो हैं ही, और साथ ही अनेक शिकायतें भी हैं, जो समय और परिस्थिति के अनुसार उठती-बैठती रहती हैं। घर, दूकानें बाप-दादों की हैं, जिसमें नुक्कड़ वाली में आपका मतब है, और अगल-बगल दो गलियों में पड़नेवाली दूकानों में पुराने किरायेदार हैं, जो कम्बख्त खाली ही नहीं करते कि उन्हें फिर से ऊंचे किराये पर उठा सकें। घर में ऊपर-नीचे दो सिंधी परिवार बसा रखे हैं और आप भी रहते हैं, सो उसमें भी किरायेदारों की आपसी और मकान-मालिक के साथ होनेवाली तकरारें, नल और सण्डास की झांव-झांव, इश्कबाजी की घातें, धोखाधड़ी आदि की शिकायतें हैं। इनकी एक किरायेदारिन ने इन्हें दूर ही से ललचा-ललचाकर इनसे अपना किराया आधा करवा लिया और अब रुख भी नहीं मिलाती। ऊपर से पास-पड़ोस की औरतों में इन्हें बदमाश कहकर बदनाम करती है। डाक्टर यह दुःख भी जब-तब प्रकट तो करते ही रहते हैं; पर किरायेदार न रखें तो करें क्या? पेट-पालन का यही एकमात्र साधन है और उसमें भी हाउस टैक्स, वाटर टैक्स आदि पचासों अलसेटें हैं। इधर एक नई शिकायत यह उपजी कि लाइन बोर्ड से एक पपड़ी और उखड़ गई है, जिससे सीधे उनके सुनाम पर प्रहार हुआ है, मक्खनलाल का 'ल' अक्षर ही गायब हो गया है।

तिरमुहानी बाजार की तीसरी महान विभूति जनाब वालिद दुनियावादी हैं, मां-बाप छुटपन में ही मर गए। चाचा-चाची ने पाला। इनकी एक छोटी बहन भी है। उसके विवाह के खर्च का बहाना लेकर चाचा ने वालिद के माता-पिता द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति हड़प कर ली। कहा-सुनी होने पर चाचा ने वालिद को निकाल दिया। वालिद तब इण्टर में पढ़ते थे। अपना विस्तर, बक्स और किताबें लेकर इसी मुहल्ले की एक बूढ़ी महराजिन के यहां चार रुपये भाड़े पर एक कमरे में रहने लगे। पचास रुपये की दो ट्यूशनें इनके पास थीं, उसीसे गाड़ी खींचते थे। डिस्टिंक्शन से इण्टर पास किया, एम० ए० तक शानदार पास हुए, दो बार आई० ए० एस० में बैठ चुके थे। अब की अंतिम बार भी परीक्षा और इण्टरव्यू दे आए हैं, रिजल्ट की प्रतीक्षा है। आदमी बहुत तेज़ हैं। कहते हैं, या तो

शोकोद्‌गार प्रकट करते ही वह रो पड़ने के लिए बेताब बैठे हैं, मगर वालिद ने उस ओर ध्यान ही न दिया और किशोरी की ओर देखकर यों बात छेड़ी, मानो बातों के किसी लम्बे सिलसिले की ताज़ी कड़ी जोड़ रहे हों। कहने लगे, "साहब दुनिया-भर की हसीन परियों में तीसरा नंबर पाया है उसने। अरे बड़े गज़ब की सुन्दरी है। किशोरी, मैं तुमसे क्या तारीफ करूं!"

मन्नो ने उत्सुक होकर पूछा, "किसकी बात कह रहे हो वालिद, ज़रा हम भी तो सुनें?"

शंभू बोला, "अच्छा तो ये बताओ कि उससे तुम्हारी शादी कब होगी?"

"शादी!" वालिद बोले, "वह परीजमाल और शादी? अरे उस ज़ालिम के लाखों आशिक हैं, लाखों। शेर अर्ज़ है:

एक सिसकता है एक मरता है,
हर तरफ ज़ुल्म हो रहा है यहां।"

"हम बताएं वालिद?" मन्नो ने कहा।

"बताओ बेटा।"

"इस लक्खी माशूक के अत्याचारों के विरुद्ध आशिकों का एक विराट जलूस निकलवा दो।"

"अरे मैं तो निकलवा देता डियर, पर सुना जाता है, शहरे-इश्क के गिर्द, मजारें ही मजारें हो गई हैं।" वालिद दुःखी स्वर बनाकर बोले।

किशोरी बोला, "वालिद, इससे तो यही समझ में आता है कि वह सबको संखिया दे देती है।"

डाक्टर अब तो बुरी तरह से चिढ़ उठे थे, खीझकर बोले, "कहां मिलती है संखिया? मुझे भी दिलवा दो?"

"उसकी संखिया आपसे खाई न जाएगी चाचा, उसे देखते ही इंसान बस मर जाना चाहता है।" वालिद ने बीड़ी सुलगाई।

"मैं भी मरना चाहता हूं।" डाक्टर तड़पकर बोले।

"आप तो पहले ही से अपनी किरायेदारिन पर मर चुके हैं।"

"उसका नाम न लो वालिद। उस हरामज़ादी ने मुझे जीवन का

शोकोद्गार प्रकट करते ही वह रो पड़ने के लिए बेताव बैठे हैं, मगर वालिद ने उस ओर ध्यान ही न दिया और किशोरी की ओर देखकर यों वात छेड़ी, मानो वातों के किसी लम्बे सिलसिले की ताज़ी कड़ी जोड़ रहे हों। कहने लगे, "साहव दुनिया-भर की हसीन परियों में तीसरा नंवर पाया है उसने। अरे वड़े गजव की सुन्दरी है। किशोरी, मैं तुमसे क्या तारीफ करूं!"

मन्नो ने उत्सुक होकर पूछा, "किसकी वात कह रहे हो वालिद, ज़रा हम भी तो सुनें?"

शंभू वोला, "अच्छा तो ये वताओ कि उससे तुम्हारी शादी कव होगी?"

"शादी!" वालिद वोले, "वह परीजमाल और शादी? अरे उस ज़ालिम के लाखों आशिक हैं, लाखों। शेर अर्ज है:

एक सिसकता है एक मरता है,
हर तरफ ज़ुल्म हो रहा है यहां।"

"हम वताएं वालिद?" मन्नो ने कहा।

"वताओ वेटा।"

"इस लक्खी माशूक के अत्याचारों के विरुद्ध आशिकों का एक विराट जलूस निकलवा दो।"

"अरे मैं तो निकलवा देता डियर, पर सुना जाता है, शहरे-इश्क के गिर्द, मजारें ही मजारें हो गई हैं।" वालिद दुःखी स्वर वनाकर वोले।

किशोरी वोला, "वालिद, इससे तो यही समझ में आता है कि वह सवको संखिया दे देती है।"

डाक्टर अव तो वुरी तरह से चिढ़ उठे थे, खीझकर वोले, "कहां मिलती है संखिया? मुझे भी दिलवा दो?"

"उसकी संखिया आपसे खाई न जाएगी चाचा, उसे देखते ही इंसान वस मर जाना चाहता है।" वालिद ने वीड़ी सुलगाई।

"मैं भी मरना चाहता हूं।" डाक्टर तड़पकर वोले।

"आप तो पहले ही से अपनी किरायेदारिन पर मर चुके हैं।"

"उसका नाम न लो वालिद। उस हरामजादी ने मुझे जीवन का

अठन्नी के पीछे डाक्टर फर्नीचर-पलट की तड़प देखकर भी वालिद खामोश बैठे अखबार ही पढ़ते रहे । वालिद को उकसाने की आशा ही से तो डाक्टर यह बकवास कर रहे थे, जब वे न बोले तो डाक्टर ने अपना सब्रो-करार छोड़कर कहा, "वालिद ! अजी सुनते हो "

"हां बेटा···अ···अ···जी डाकसाब ?" वालिद ने सिर उठाकर कहा, "तुम्हारे रहते ये···मेरा सत्यानाश कर गया···"

'एक अठन्नी में ही सत्यानाश हो गया चाचा ?" वालिद ने पूछा।

डाक्टर गर्माए, "बात एक अठन्नी की नहीं है जी, तुम समझते क्यों नहीं हो ! इसने मेरी आती लक्ष्मी में मांजी मार दी । पिछले डेढ़ सालों में, जब से क्या नाम है कि मेरा कम्पाउण्डर रमुआ शाला मेरा स्टेथेस्कोप और दवाएं चुरा ले गया, तब से यह पहली अठन्नी का बिल बना था, सो भी ये डकारे जाता है। बात अठन्नी की नहीं है बेटा, बात तो यह है कि मेरे घर आती हुई लक्ष्मी इसने अपनी टेंट में बांध रक्खी है। जब तक वो नहीं आती, तब तक नया मरीज़ भी मेरे पास नहीं आएगा।"

"डाकसाब, बस यही हम नहीं मान सकते। यह 'सुपरस्टिशन' है, 'साइंटिफिकली' गलत है।" वालिद बोलकर फिर बीड़ी सुलगाने लगे। बत्ती डाक्टर साहब के हिये में भी सुलग उठी, बोले, "तुम आजकल के पढ़े-लिखे साइंस को क्या समझो जी ! हमारी इण्डियन साइंस को जर्मनी वाले समझते थे। सब पोथियां लेकर चले गए। उसीसे सीख-सीख के ये आज राकेट उड़ा रहे हैं।"

"मगर आपके जमाने में साइंस अवश्य अच्छी पढ़ाई जाती होगी," एक ने चहकाया। डाक्टर चहके, "मेरे ज़माने में जो साइंस एर्थ क्लास में पढ़ाई जाती थी, वह अब एम० एस-सी० में नहीं पढ़ाई जाती, जनाब। मैं जब कलकत्ता के होम्योपैथिक कालेज में पढ़ने गया, तो जो साल-भर का कोर्स था, वह मैंने तीन महीने में हिफ्ज़ कर लिया, और प्रोफेसर से कहा कि नया कोर्स पढ़ाइए। वह दंग रह गया। प्रिंसपल ने मेरा इम्तहान लिया, वह भी दंग रह गए। बोले, 'अरे भाई, क्या तुम बी० एस-सी० या एम० एस-सी० पास करके हमारे यहां होम्योपैथी पढ़ने आए हो ?'

अठन्नी के पीछे डाक्टर फर्नीचर-पलट की तड़प देखकर भी वालिद खामोश बैठे अखबार ही पढ़ते रहे । वालिद को उकसाने की आशा ही से तो डाक्टर यह बकवास कर रहे थे, जब वे न बोले तो डाक्टर ने अपना सब्रो-करार छोड़कर कहा, "वालिद ! अजी सुनते हो "

"हां बेटा···अ···अ···जी डाकसाब ?" वालिद ने सिर उठाकर कहा, "तुम्हारे रहते ये···मेरा सत्यानाश कर गया···"

' एक अठन्नी में ही सत्यानाश हो गया चाचा ?" वालिद ने पूछा ।

डाक्टर गर्माए, "बात एक अठन्नी की नहीं है जो, तुम समझते क्यों नहीं हो ! इसने मेरी आती लक्ष्मी में मांजी मार दी । पिछले डेढ़ सालों में, जब से क्या नाम है कि मेरा कम्पाउण्डर रमुआ साला मेरा स्टेथेस्कोप और दवाएं चुरा ले गया, तब से यह पहली अठन्नी का बिल बना था, सो भी ये डकारे जाता है । बात अठन्नी की नहीं है बेटा, बात तो यह है कि मेरे घर आती हुई लक्ष्मी इसने अपनी टेंट में बांध रक्खी है । जब तक वो नहीं आती, तब तक नया मरीज़ भी मेरे पास नहीं आएगा ।"

"डाकसाब, बस यही हम नहीं मान सकते । यह 'सुपरस्टिशन' है, 'साइंटिफिकली' गलत है ।" वालिद बोलकर फिर बीड़ी सुलगाने लगे । बत्ती डाक्टर साहब के हिये में भी सुलग उठी, बोले, "तुम आजकल के पढ़े-लिखे साइंस को क्या समझो जी ! हमारी इण्डियन साइंस को जर्मनी वाले समझते थे । सब पोथियां लेकर चले गए । उसीसे सीख-सीख के ये आज राकेट उड़ा रहे हैं ।"

"मगर आपके ज़माने में साइंस अवश्य अच्छी पढ़ाई जाती होगी," एक ने चहकाया । डाक्टर चहके, "मेरे ज़माने में जो साइंस एर्थ क्लास में पढ़ाई जाती थी, वह अब एम० एस-सी० में नहीं पढ़ाई जाती, जनाब । मैं जब कलकत्ता के होम्योपैथिक कालेज में पढ़ने गया, तो जो साल-भर का कोर्स था, वह मैंने तीन महीने में हिब्ज़ कर लिया, और प्रोफेसर से कहा कि नया कोर्स पढ़ाइए । वह दंग रह गया । प्रिंसपल ने मेरा इम्तहान लिया, वह भी दंग रह गए । बोले, 'अरे भाई, क्या तुम बी० एस-सी० या एम० एस-सी० पास करके हमारे यहां होम्योपैथी पढ़ने आए हो ?'

रहे हैं। बड़े गाजे-वाजे से आया; मगर ये ऐसे कँडे से चला कि वे कानी कौड़ी तक न पा सके।"

"तब तो चाचा, अगर इसको सर न किया तो कुछ न किया। खैर, आपकी अठन्नी तो आज शाम को आ ही जाएगी, मगर उसके साथ व्याज भी वसूल होके ही रहेगा।"

सेठ भजगोविन्द सुवह-शाम लक्ष्मीनारायणजी के दर्शन किए विना भोजन नहीं करते। इसके लिए उन्हें दो वक्त गली से गुज़रना भी पड़ता है। सवेरे दर्शन करते हुए निकलते हैं, तो लौटते वक्त तरकारी खरीदते हैं और शाम को लौटते हुए एक आने के सादे पान लेते हैं। उनकी वाईं टेंट में खोटी रेज़गारी वंधी होती है और दाहिनी में खरी। कोशिश यही करते हैं कि नकद पैसा न देना पड़े, और यदि देना ही पड़ जाए तो खोटा सिक्का चले।

वालिद ने उस शाम को थोड़ा-सा प्रबंध किया। सेठजी जूते घिस जाने के फेर में नंगे पैर तो निकलते ही हैं, सो उनको आते देखकर उनके रास्ते में आगे-आगे केले के छिलके विछाते चले। वालिद ने बड़े सब्र से काम लिया था। सेठ एक से वचे दूसरे को छलांग गए, तीसरा पैरों के नीचे आते-आते रह गया, पर पांचवें या छठे पर तो धोंप से गिर ही पड़े। वाज़ार में लेना-बचाना और हंसी के कहकहों की धूम मच गई। मगर वालिद ने जो सोचा था वह न हुआ। फेंटे से कसी उनकी टेंट ढीली न पड़ी। इसपर वालिद ने, जो उनको वचाने के वहाने उनकी कमर को सहारा दे रहे थे, गड़ाप से उनकी टेंट में हाथ डाल ही तो दिया, रेज़गारी विखर गई। खनाका सुनते ही उठते-उठते सेठजी हाय मारकर धम् से वैठ गए। वालिद पैसे वटोरने लगे। डा० मक्खन ने ललकारा, "इससे वेटा, मेरी अठन्नी ले लेना।"

सेठ भजगोविन्द तड़पे, "हाय, तुम कैसे नीच हो गए डाक्टर! हाय, मेरी तो कूल्हे की हड्डी टूट गई और तुम्हें अपनी अठन्नी की पड़ी हैगी। लाओ, लाओ, मेरे पैसे झट से दो।"

इसपर वालिद ने चट से शेर पढ़ा :

रहे हैं। बड़े गाजे-बाजे से आया; मगर ये ऐसे कंडे से चला कि वे कानी कौड़ी तक न पा सके।"

"तब तो चाचा, अगर इसको सर न किया तो कुछ न किया। खैर, आपकी अठन्नी तो आज शाम को आ ही जाएगी, मगर उसके साथ ब्याज भी वसूल होके ही रहेगा।"

सेठ भजगोविन्द सुबह-शाम लक्ष्मीनारायणजी के दर्शन किए बिना भोजन नहीं करते। इसके लिए उन्हें दो वक्त गली से गुजरना भी पड़ता है। सवेरे दर्शन करते हुए निकलते हैं, तो लौटते वक्त तरकारी खरीदते हैं और शाम को लौटते हुए एक आने के सादे पान लेते हैं। उनकी बाईं टेंट में खोटी रेज़गारी बंधी होती है और दाहिनी में खरी। कोशिश यही करते हैं कि नकद पैसा न देना पड़े, और यदि देना ही पड़ जाए तो खोटा सिक्का चले।

वालिद ने उस शाम को थोड़ा-सा प्रबंध किया। सेठजी जूते घिस जाने के फेर में नंगे पैर तो निकलते ही हैं, सो उनको आते देखकर उनके रास्ते में आगे-आगे केले के छिलके बिछाते चले। वालिद ने बड़े सब्र से काम लिया था। सेठ एक से बचे दूसरे को छलांग गए, तीसरा पैरों के नीचे आते-आते रह गया, पर पांचवें या छठे पर तो धोंप से गिर ही पड़े। बाज़ार में लेना-बचाना और हंसी के कहकहों की धूम मच गई। मगर वालिद ने जो सोचा था वह न हुआ। फेंटे से कसी उनकी टेंट ढीली न पड़ी। इसपर वालिद ने, जो उनको बचाने के बहाने उनकी कमर को सहारा दे रहे थे, गड़ाप से उनकी टेंट में हाथ डाल ही तो दिया, रेज़गारी बिखर गई। खनाका सुनते ही उठते-उठते सेठजी हाय मारकर धम् से बैठ गए। वालिद पैसे बटोरने लगे। डा० मक्खन ने ललकारा, "इससे बेटा, मेरी अठन्नी ले लेना।"

सेठ भजगोविन्द तड़पे, "हाय, तुम कैसे नीच हो गए डाक्टर! हाय, मेरी तो कूल्हे की हड्डी टूट गई और तुम्हें अपनी अठन्नी की पड़ी हैगी। लाओ, लाओ, मेरे पैसे झट से दो।"

इसपर वालिद ने चट से शेर पढ़ा:

बेचनेवालों के गिरोह में भी शामिल है। वालिद ने, दिन में सब ब्योंत बैठाकर मन्नो को डाक्टर की किरायेदारिन के पास भेजा और कहलाया कि तुम्हारे पति को पुलिस गिरफ्तार कर ले गई है। उन्होंने दो सौ पचास रुपये मंगाए हैं। किरायेदारिन ने घबराकर दे दिए। रुपये मिलते ही वालिद डाक्टर के यहां पहुंचे, कहा, "जो-जो दवाएं लेनी हों, ले लीजिए।" स्टेथेस्कोप दिलाया और नया साइनबोर्ड बनाने का आर्डर भी दे आए। डाक्टर बोले, "बेटा, जैसा तुम मेरे साथ कर रहे हो, वैसा ईश्वर भी तुम्हारा भला करे। तुमने मेरे लिए बहुत खरच कर दिया।"

वालिद बोले, "चाचा, मेरा इसमें कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर। जरा रसीदी टिकट लगाकर बेंसीमल चायवाले के नाम दस महीने के बाकी किराये की रसीद चुकता काट दीजिए। अपनी किरायेदारिन को हमारी चाची बनाने के चकमे में आकर आपने पिछले दस महीनों में किराये की जो रकम काट दी थी, वो मैंने अपटूडेट वसूल कर ली है। रसीद में लिख दीजिएगा, कि पचास रुपये महीने की दर से बाकी किराया वसूल पाया और आइंदा उससे आंख न लड़ाइएगा।"

डाक्टर कृतज्ञता से और ऊभचूभ हो गए। उनके मतब में वालिद की शानदार विदाई-पार्टी हुई। अफसोस केवल इसी बात का रहा कि तब तक नया साइनबोर्ड बनकर नहीं आया था। वालिद के नगर से विदा होने के बाद ही आया। डाक्टर के साइनबोर्ड में एच० एम० डी० (कलकत्ता), बी० एम० डी० (कोयम्बत्तूर), और एच० एम० बी० (कैलिफोर्निया) के अतिरिक्त डी० बी० पी० और डी० एम० ए० की नई डिग्रियां भी मौजूद थीं। डाक्टर पहले तो इन दो नई डिग्रियों के जुड़ने से प्रसन्न हुए, पर बाद में डी० बी० पी० के अर्थ 'डाक्टर बमपुलिस' और डी० एम० ए० के अर्थ 'डाक्टर आफ मुहल्ला अनाथालय' मुहल्ले वालों से सुनकर वे अब वालिद को आशीर्वाद के साथ-साथ गालियां भी दिया करते हैं।

बेचनेवालों के गिरोह में भी शामिल है। वालिद ने, दिन में सब ब्योंत बैठाकर मन्नो को डाक्टर की किरायेदारिन के पास भेजा और कहलाया कि तुम्हारे पति को पुलिस गिरफ्तार कर ले गई है। उन्होंने दो सौ पचास रुपये मंगाए हैं। किरायेदारिन ने घबराकर दे दिए। रुपये मिलते ही वालिद डाक्टर के यहां पहुंचे, कहा, "जो-जो दवाएं लेनी हों, ले लीजिए।" स्टेथेस्कोप दिलाया और नया साइनबोर्ड बनाने का आर्डर भी दे आए। डाक्टर बोले, "बेटा, जैसा तुम मेरे साथ कर रहे हो, वैसा ईश्वर भी तुम्हारा भला करे। तुमने मेरे लिए बहुत खरच कर दिया।"

वालिद बोले, "चाचा, मेरा इसमें कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर। ज़रा रसीदी टिकट लगाकर बंसीमल चायवाले के नाम दस महीने के बाकी किराये की रसीद चुकता काट दीजिए। अपनी किरायेदारिन को हमारी चाची बनाने के चकमे में आकर आपने पिछले दस महीनों में किराये की जो रकम काट दी थी, वो मैंने अपटूडेट वसूल कर ली है। रसीद में लिख दीजिएगा, कि पचास रुपये महीने की दर से बाकी किराया वसूल पाया और आइंदा उससे आंख न लड़ाइएगा।"

डाक्टर कृतज्ञता से और ऊभचूभ हो गए। उनके मतब में वालिद की शानदार विदाई-पार्टी हुई। अफसोस केवल इसी बात का रहा कि तब तक नया साइनबोर्ड बनकर नहीं आया था। वालिद के नगर से विदा होने के बाद ही आया। डाक्टर के साइनबोर्ड में एच० एम० डी० (कलकत्ता), बी० एम० डी० (कोयम्बत्तूर), और एच० एम० बी० (कैलिफोर्निया) के अतिरिक्त डी० बी० पी० और डी० एम० ए० की नई डिग्रियां भी मौजूद थीं। डाक्टर पहले तो इन दो नई डिग्रियों के जुड़ने से प्रसन्न हुए, पर बाद में डी० बी० पी० के अर्थ 'डाक्टर बमपुलिस' और डी० एम० ए० के अर्थ 'डाक्टर आफ मुहल्ला अनाथालय' मुहल्ले वालों से सुनकर वे अब वालिद को आशीर्वाद के साथ-साथ गालियां भी दिया करते हैं।

घना थी कि एक पान के दो टुकड़े करके खाते थे। एक जान दो कालिब थे। और चचायार जो थे वो हमारे फलासफेला हुए। उनमें लखनऊ के सी० आई० पी०यों के तीनों गुन मौजूद थे। वे शाह कलन्दरी, बांकपन और शायरी के काकटेल थे—नम्बरी चकल्लसी। शायर वो ऐसे थे कि जैसे मिस्त्री का काम जाननेवाला साइकल-चोर होता है। औरों के कहे हुए अशआरों की चूलें भिड़ाकर चचायार अपनी शेर की खाट बनाते थे। उनका एक शेर अर्ज है, मुलाहिज़ा हो :

चकल्लसों की कमी नहीं 'चच्चा'
'डैश' अब वेहिसाब मिलते हैं।

(चचायार ने एक आम फहम अतिरिक्त शब्द का प्रयोग किया था, हमने उसकी जगह डैश लगा दिया।)

खैर, चकल्लस की इस फिलासफी के समर्थक न तो हम पहले थे और न आज हैं मगर चकल्लस की किस्मों को हमारे चचायार ने पांच प्रकार की माना था। (१) भांत-भांत की चकल्लस, (२) बैठे-बिठाए की चकल्लस, (३) मुफ्त की चकल्लस मोल लेना या बेकार की चकल्लस में पड़ना। (४) खुदाई चकल्लस—और नम्बर पांच की चकल्लस का नाम है, वही (डैश)—चकल्लस।'

हमारे चचायार को बैठे-बिठलाए की चकल्लस सूझती थी, कहना चाहिए उन्हें उसकी धुन उठती थी। इस चकल्लस शब्द में जिन-जिन अर्थों की गूंज उठती है उन सभीमें माहिर थे—यानी झगड़ा-फसाद कराने में पूरे नारद मुनि, किसी भी तरह की झंझटें मोल लेने में या किसी तरह की झंझट खड़ी करने में हरदम 'आ बैल मुझे मार वाली अदा में' तैयार रहनेवाले और चुहल-चकल्लस में तो उनका पूछना ही क्या, वालिद जहानाबादी ही ठहरे।

एक बार एक मित्र की बरात में गए थे। वापसी में हम लोगों ने सामान, बुजुर्ग पार्टी और वकील चचा शादी में पाया हुआ 'चुंगी का माल' यानी नई दुल्हन—यह सब तो एक कम्पार्टमेंट में जमा दिए और हम लोगों ने आजादी से एक दूसरे डिब्बे में आसन जमाया। रेल के साथ चलनेवाले टिकट चेकर साहब चूंकि हमारे ही आदमी थे इसलिए पूरा

घना थी कि एक पान के दो टुकड़े करके खाते थे। एक जान दो कालिब थे। और चचायार जो थे वो हमारे फलासफेलों हुए। उनमें लखनऊ के बी० आई० पी०ओं के तीनों गुन मौजूद थे। वे शादी कलन्दरी, बांकपन और शायरी के काकटेल थे—नम्बरी चकल्लसी। शायर वो ऐसे थे कि जैसे मिस्त्री का काम जाननेवाला साइकल-चोर होता है। औरों के कहे हुए अशआरों की चूलें भिड़ाकर चचायार अपनी शेर की खाट बनाते थे। उनका एक शेर अर्ज है, मुलाहिजा हो :

चकल्लसों की कमी नहीं 'चच्चा'
'डैश' अब बेहिसाब मिलते हैं।

(चचायार ने एक आम फहम शारितेरियत शब्द का प्रयोग किया था, हमने उसकी जगह डैश लगा दिया।)

खैर, चकल्लस की इस फिलासफी के समर्थक न तो हम पहले थे और न आज हैं मगर चकल्लस की किस्मों को हमारे चचायार ने पांच प्रकार की माना था। (१) भांत-भांत की चकल्लस, (२) बैठे-बिठाए की चकल्लस, (३) मुफ्त की चकल्लस मोल लेना या बेकार की चकल्लस में पड़ना। (४) खुदाई चकल्लस—और नम्बर पांच की चकल्लस का नाम है, वही (डैश)—चकल्लस।'

हमारे चचायार को बैठे-बिठलाए की चकल्लस सूझती थी, कहना चाहिए उन्हें उसकी धुन उठती थी। इस चकल्लस शब्द में जिन-जिन अर्थों की गूंज उठती है उन सभीमें माहिर थे—यानी झगड़ा-फसाद कराने में पूरे नारद मुनि, किसी भी तरह की झंझटें मोल लेने में या किसी तरह की झंझट खड़ी करने में हरदम 'आ बैल मुझे मार वाली अदा में' तैयार रहनेवाले और चुहल-चकल्लस में तो उनका पूछना ही क्या, वालिद जहानाबादी ही ठहरे।

एक बार एक मित्र की बरात में गए थे। वापसी में हम लोगों ने सामान, बुजुर्ग पार्टी और वकील चचा शादी में पाया हुआ 'चुंगी का माल' यानी नई दुल्हन—यह सब तो एक कम्पार्टमेंट में जमा दिए और हम लोगों ने आजादी से एक दूसरे डिब्बे में आसन जमाया। रेल के साथ चलनेवाले टिकट चेकर साहब चूंकि हमारे ही आदमी थे इसलिए पूरा

नौशा हुज़ूर बोलते-बोलते एकाएक भौंकने लगे और उधर से उनके बाप भी पीछे की सीट से बोले, "हम हन।"

"भई, तुम्हारा लड़का अंग्रेज़ी बड़ी गलत बोलता है, इसको दस रुपै की चपरासगीरी भी न मिल सकेगी, तुमने बेकार शादी की इसकी।" चचा की बात और कहने की अदा ने लोगों को हंसा दिया, वे यात्री जो कि इस बरात के आ जाने से कष्ट पा रहे थे, नौशे की इस दुर्गत पर हंस उठे। हम लोगों ने उसकी अंग्रेज़ी की नकलें उतारीं। तब तो फिर नौशे की बौखलाहट देखते ही बनी, कदम सहमे हुए पीछे हटते जाते थे और उनकी अंग्रेज़ी और हाथ आगे बढ़ते जाते थे। और उनकी तरफ के बड़े बूढे उन्हें समझा-बुझाकर ले गए और आई बात पार पड़ गई। हम लोग फिर ताश में रम गए। अगले स्टेशन पर नौशा साहब कब बाहर गए यह तो हममें से कोई न देख सका लेकिन एकाएक जब वे टिकट चेकर को अपने साथ लाकर हमारी ओर संकेत करके बोले, "ये लोग बगैर टिकट है" तब हमने उन्हें देखा। हमारे उड़ाए मजाकों के नहले पर अपने टिकट चेकर के दहले को लादने की खुशी में उनका चेहरा सन्तोष और शान से दमदमा रहा था। शायद हमारी आपसी बातचीत में उन्होंने सुन लिया होगा कि हममें से अनेक बगैर टिकट चल रहे हैं। लेकिन टिकट चेकर साहब ने जब हम लोगों को देखा तो उल्टे घूमकर उन्हींसे टिकट की फरमाइश कर बैठे। हम लोगों ने उनका फिर तो खूब ही मजाक उड़ाया। चचा ताश छोड़कर नौशे के पीछे ही पड़ गए। मगर अब उसकी बोलती बंद हो गई थी। फिर स्टेशन आया। नौशा फिर उतरा। चचा बोले, "अबकी साला पुलिस बुलाने गया होगा।" हमारा एक साथी उतरकर उनकी टोह लेने गया और खबर लाया कि नौशा जी नौशी के कम्पार्टमेण्ट के आगे खड़े होकर सिगरेट फूंक रहे हैं। दूसरे-तीसरे स्टेशन पर नौशा फिर गए। हर बार हमारे गोयन्दे ने खबर दी कि अपनी दुलहिनी के डिब्बे से टिककर खड़े हैं। चौथे स्टेशन पर चचायार भी उनके पीछे-पीछे गए। हम उनके साथ हो लिए। चचा ने रेलवे पुलिस के एक सिपाही के हाथ में चुपके से एक अठन्नी टिकाई और कहा कि मेरे भतीजे की बरात लौट रही है, और वो आवारा छोकरा दुल्हन की खिड़की के पास जा-जाकर

नौशा हुजूर बोलते-बोलते एकाएक भौंकने लगे और उधर से उनके बाप भी पीछे की सीट से बोले, "हम हन।"

"भई, तुम्हारा लड़का अंग्रेज़ी बड़ी गलत बोलता है, इसको दस रुपै की चपरासगीरी भी न मिल सकेगी, तुमने बेकार शादी की इसकी।" चचा की बात और कहने की अदा ने लोगों को हंसा दिया, वे यात्री जो कि इस बरात के आ जाने से कष्ट पा रहे थे, नौशे की इस दुर्गत पर हंस उठे। हम लोगों ने उसकी अंग्रेज़ी की नकलें उतारीं। तब तो फिर नौशे की बौखलाहट देखते ही बनी, कदम सहमे हुए पीछे हटते जाते थे और उनकी अंग्रेज़ी और हाथ आगे बढ़ते जाते थे। और उनकी तरफ के बड़े बूढ़े उन्हें समझा-बुझाकर ले गए और आई बात पार पड़ गई। हम लोग फिर ताश में रम गए। अगले स्टेशन पर नौशा साहब कब बाहर गए यह तो हममें से कोई न देख सका लेकिन एकाएक जब वे टिकट चेकर को अपने साथ लाकर हमारी ओर संकेत करके बोले, "ये लोग बगैर टिकट है" तब हमने उन्हें देखा। हमारे उड़ाए मज़ाकों के नहले पर अपने टिकट चेकर के दहले को लादने की खुशी में उनका चेहरा सन्तोष और शान से दमदमा रहा था। शायद हमारी आपसी बातचीत में उन्होंने सुन लिया होगा कि हममें से अनेक बगैर टिकट चल रहे हैं। लेकिन टिकट चेकर साहब ने जब हम लोगों को देखा तो उल्टे घूमकर उन्हींसे टिकट की फरमाइश कर बैठे। हम लोगों ने उनका फिर तो खूब ही मज़ाक उड़ाया। चचा ताश छोड़कर नौशे के पीछे ही पड़ गए। मगर अब उसकी बोलती बंद हो गई थी। फिर स्टेशन आया। नौशा फिर उतरा। चचा बोले, "अबकी साला पुलिस बुलाने गया होगा।" हमारा एक साथी उतरकर उनकी टोह लेने गया और खबर लाया कि नौशा जी नौशी के कम्पार्टमेण्ट के आगे खड़े होकर सिगरेट फूंक रहे हैं। दूसरे-तीसरे स्टेशन पर नौशा फिर गए। हर बार हमारे गोयन्दे ने खबर दी कि अपनी दुलहिनी के डिब्बे से टिककर खड़े हैं। चौथे स्टेशन पर चचायार भी उनके पीछे-पीछे गए। हम उनके साथ हो लिए। चचा ने रेलवे पुलिस के एक सिपाही के हाथ में चुपके से एक अठन्नी टिकाई और कहा कि मेरे भतीजे की बरात लौट रही है, और वो आवारा छोकरा दुल्हन की खिड़की के पास जा-जाकर

बाई जी अपनी पवित्रता का नखरा दिखलाती हुई बोलीं, "ये भैया लोक को गन्दी-गन्दी बातें बकने में लाज-शरम मुलींच नहीं आती। इसी तरह बंगाली-गुजराती आदि के बाज़-बाज सरल शब्द हिन्दी वालों के कानों को भद्दे और अश्लील लगते हैं। इसलिए अर्ज़ है कि 'नेशनल इंटीग्रेशन' का ध्यान रखते हुए इन शब्दों की चकल्लस में इन्सान को ज़रा समझ-बूझकर ही पड़ना चाहिए। अगर देस-भेस की चाल समझ के न चले तो ईश्वर न करे, नसीबे दुश्मनां किसीका भी वही हाल हो सकता है जो हमारे एक पुराने मुलाकाती बंगाली डॉक्टर साहब का हुआ था। उनका नाम उनके बाप ने राष्ट्रीयता के बहाव में देशबन्धु चितरंजनदास की स्मृति में रक्खा था देशबन्धुदास। बड़े होने पर देशबन्धु जी को अपने नाम के साथ जुड़ा 'दास' शब्द खटका, उसे निकाल फेंका। अपने साइन-बोर्ड पर उन्होंने लिखवाया, 'डॉ० डी० बोन्धु'। मैंने उसे देखकर कहा, "डॉक्टर साहब, हमारे यहां बन्धु कहते हैं।" डॉक्टर बन्धु तन गए, बोले, "हिन्दी उच्चारोन गोलोत हॉय। हमरा बांगाली लोक बाड़ा-बाड़ा विद्वान होता है। गोलोत नहीं बोलने शकता।" हमने उनके ये तेवर देखे तो समझ गए, नादान तो हैं ही, मगरूर भी हैं। फिर भी समझाते हुए कहा, "डॉक्टर साहब, ये मसला विद्वानों का नहीं आम जनता के स्वभाव का है। मैं भी अगर अपने घर से बाहर निकलकर कहीं परदेस जाऊं तो मुझे भी वहां का चलन, रिवाज और बातचीत समझनी होगी।" खैर, वे न माने और पब्लिक की ज़बान पर चढ़कर वे 'बोन्धू' से भोंदू हो गए।

अब वे दोष देते हैं कि हमने लोगों को सिखाया है। उनकी मां हमारे घर आकर खूब कोसाकाटी कर गईं। हम अजब हैरान कि अच्छा तमाशा है। ये तो भलमानसाहत में बैठे-बिठाए खामखां की चकल्लस में पड़के होम करते हाथ जला लिए। लेकिन डॉ० भोंदू की नादानियों से ये हमने मॉरल निकाला—क्योंकि हर बात में मॉरल निकालना उन दिनों ज़रूरी समझा जाता था—कि जो न माने बड़ों की सीख, ठिकरा लेके मांगे भीख। डॉ० भोन्दू की तरह ही हमारे एक तिरंगे दिल्लीपाल माननीय भी सारे भारत से अपने नाम का प्रादेशिक उच्चारण कराने पर तुल गए थे, ये क्या अब भी तुले हुए हैं मगर क्या निवेदन करूं, जनवाणी पर ऐसी

बाई-जी अपनी पवित्रता का नखरा दिखलाती हुई बोलीं, "ये भैया लोक को गन्दी-गन्दी बातें बकने में लाज-शरम मुलींच नहीं आती। इसी तरह बंगाली-गुजराती आदि के बाज़-बाज़ सरल शब्द हिन्दी वालों के कानों को भद्दे और अश्लील लगते हैं। इसलिए अर्ज़ है कि 'नेशनल इंटीग्रेशन' का ध्यान रखते हुए इन शब्दों की चकल्लस में इन्सान को ज़रा समझ-बूझकर ही पड़ना चाहिए। अगर देस-भेस की चाल समझ के न चले तो ईश्वर न करे, नसीबे दुश्मनां किसीका भी वही हाल हो सकता है जो हमारे एक पुराने मुलाकाती बंगाली डॉक्टर साहब का हुआ था। उनका नाम उनके बाप ने राष्ट्रीयता के बहाव में देशबन्धु चितरंजनदास की स्मृति में रक्खा था देशबन्धुदास। बड़े होने पर देशबन्धु जी को अपने नाम के साथ जुड़ा 'दास' शब्द खटका, उसे निकाल फेंका। अपने साइन-बोर्ड पर उन्होंने लिखवाया, 'डॉ० डी० बोन्धु'। मैंने उसे देखकर कहा, "डॉक्टर साहब, हमारे यहां बन्धु कहते हैं।" डॉक्टर बन्धु तन गए, बोले, "हिन्दी उच्चारोन गोलोत हॉय। हमरा बांगाली लोक बाड़ा-बाड़ा विद्वान होता है। गोलोत नहीं बोलने शकता।" हमने उनके ये तेवर देखे तो समझ गए, नादान तो हैं ही, मगरूर भी हैं। फिर भी समझाते हुए कहा, "डॉक्टर साहब, ये मसला विद्वानों का नहीं आम जनता के स्वभाव का है। मैं भी अगर अपने घर से बाहर निकलकर कहीं परदेस जाऊं तो मुझे भी वहां का चलन, रिवाज और बातचीत समझनी होगी।" खैर, वे न माने और पब्लिक की ज़बान पर चढ़कर वे 'बोन्धू' से भोंदू हो गए।

अब वे दोष देते हैं कि हमने लोगों को सिखाया है। उनकी मां हमारे घर आकर खूब कोसाकाटी कर गईं। हम अजब हैरान कि अच्छा तमाशा है। ये तो भलमानसाहत में बैठे-बिठाए खामखां की चकल्लस में पड़के होम करते हाथ जला लिए। लेकिन डॉ० भोंदू की नादानियों से ये हमने मॉरल निकाला—क्योंकि हर बात में मॉरल निकालना उन दिनों ज़रूरी समझा जाता था—कि जो न माने बड़ों की सीख, ठिकरा लेके मांगे भीख। डॉ० भोन्दू की तरह ही हमारे एक तिरंगे दिल्लीपाल माननीय भी सारे भारत से अपने नाम का प्रादेशिक उच्चारण कराने पर तुल गए थे, वे क्या अब भी तुले हुए हैं मगर क्या निवेदन करूं, जनवाणी पर ऐसी

५

पीपल-परी की दास्तान

है दुनिया दुरंगी मकारा सराय,
कहीं खूब-खूबां कहीं हाय-हाय ।

ऐ दिले-नेक, आशिके-दास्तान, दुई को छोड़कर यकरंग हो जा क्योंकि लिखा है कि अल्लाह एक है। वह रहीम है, करीम है, अपने बंदों की फरियाद सुनता है। सदियों पहले आसफउद्दौला के ज़माने में जब यह मुहल्ला आबाद हुआ तो लोगों ने कहा कि यहां खुदा का साया भी हो। फौरन धरती फोड़कर दरख्ते-पीपल उग आया। सदियों उसमें कटे कनकौवे उलझे, कौवों ने बसेरा लिया। चोरों ने उसकी शाखों-शाखों जाकर लोगों के घरों की जमा-पूंजी उड़ाई। निठल्लों की बन आई। दिन-भर उसीके साये में बैठकर इधर-उधर आंखें लड़ाईं। दिन को लौंडों का और रात को कुत्तों का शोर रहा, बहरहाल सदियों से इस पीपल का बड़ा ज़ोर रहा।

मगर ठहर, ऐ दिले-नेक, आशिके-दास्तान, दुई को छोड़कर यकरंग हो जा। कायदे-अदब को न भूल। शाहे-ज़माना को याद कर कि जिनके डर से भागकर तख्तो-ताज के पुराने मालिकान अब ताश के पत्तों में जा समाए हैं। उनके वारिस अब दुनिया में फकत चार हैं। एक गप्तालिस के भाई कप्तालिस हैं, दूसरे सालियों के शौकीन सोसालिस हैं, तीसरे कमीनेस्त और चौथे शाहंशाह डैम-ओ-कुरसी हैं। इन्हीं चौथे शाहंशाह की हुकूमत इस वक्त हिन्दुस्तान में है। हरसू भले-बुरे डैमों की ही धूम है—भाखरा-नंगल डैम, रिहंद डैम, अक्ल डैम, ईमानदारी डैम और आम इन्सान डैमफूल है। हरसू गरीबी और भुखमरी का बोलबाला है। ऐ चार सौ बीसी, फकत तेरा ही सहारा है। ऐ बड़े-बड़ों की रहनुमा, इस पीपल की फुनगी पर उतर आ, तभी इस किस्से का भी गुज़ारा है।

६

पीपल-परी की दास्तान

है दुनिया दुरंगी मकारा सराय,
कहीं खूब-खूबां कहीं हाय-हाय।

ऐ दिले-नेक, आशिके-दास्तान, दुई को छोड़कर यकरंग हो जा क्योंकि लिखा है कि अल्लाह एक है। वह रहीम है, करीम है, अपने बंदों की फरियाद सुनता है। सदियों पहले आसफउद्दौला के ज़माने में जब यह मुहल्ला आबाद हुआ तो लोगों ने कहा कि यहां खुदा का साया भी हो। फौरन धरती फोड़कर दरख्ते-पीपल उग आया। सदियों उसमें कटे कनकौवे उलझे, कौवों ने बसेरा लिया। चोरों ने उसकी शाखों-शाखों जाकर लोगों के घरों की जमा-पूंजी उड़ाई। निठल्लों की बन आई। दिन-भर उसीके साये में बैठकर इधर-उधर आंखें लड़ाईं। दिन को लौंडों का और रात को कुत्तों का शोर रहा, बहरहाल सदियों से इस पीपल का बड़ा ज़ोर रहा।

मगर ठहर, ऐ दिले-नेक, आशिके-दास्तान, दुई को छोड़कर यकरंग हो जा। कायदे-अदब को न भूल। शाहे-ज़माना को याद कर कि जिनके डर से भागकर तख्तो-ताज के पुराने मालिकान अब ताश के पत्तों में जा समाए हैं। उनके वारिस अब दुनिया में फकत चार हैं। एक गप्तालिस के भाई कप्तालिस हैं, दूसरे सालियों के शौकीन सोसालिस हैं, तीसरे कमीनेस्त और चौथे शाहंशाह डैम-ओ-कुरसी हैं। इन्हीं चौथे शाहंशाह की हुकूमत इस वक्त हिन्दुस्तान में है। हरसूं भले-बुरे डैमों की ही धूम है—भाखरा-नंगल डैम, रिहंद डैम, अक्ल डैम, ईमानदारी डैम और आम इन्सान डैमफूल है। हरसूं गरीबी और भुखमरी का बोलबाला है। ऐ चार सौ बीसी, फकत तेरा ही सहारा है। ऐ बड़े-बड़ों की रहनुमां, इस पीपल की फुनगी पर उतर आ, तभी इस किस्से का भी गुज़ारा है।

गई। दोनों पांव थर-थर कांपते हुए भी जाम हो गए, जिस्म पत्थर हो गया और खौफ बिजली के करेंट-सा उसमें भरता रहा। एकाएक फिर अंधेरा घुप हुआ, धरती पर एक धमाका हुआ और पेड़ के चारों ओर घुंघरू छमाछम यों दौड़ने लगे मानो कोई अल्हड़ शोख हसीना चकफेरियां ले रही हो।

ऐ किस्सा पढ़नेवाले दोस्तो, आप हैरत में होंगे कि ये अचानक क्या हो गया और अब आगे क्या होनेवाला है मगर होता है वही जो मंजूरे-खुदा होता है। बेचारे अब्दुल्ला सेठ के नसीब में आज की रात यही बदा होगा कि आसेबी चक्कर में पड़ें। इस दरख्ते-पीपल पर आज करीब छह महीनों से एक भुतनी रहती है। उसके मारे बड़े-बड़ों की हवा गुम है। मुहल्ले के सिरताज सबजजी के पेशकार जनाब मीरन साहब की तरफ से कई बार बुरी गत बन चुकी है। दुनिया-भर के भूत-जिन्नात को बस में करनेवाले बड़े सरनाम मौलवी कुतुबुद्दीन, बरजबाने-आम मौलवी कुदबुद्दी, का घर एकदम पीपल से लगा हुआ ही है। उनके घर में कभी ढेला पड़ता है, कभी पटापट बारूद के गोले फूटते हैं, कभी आग लगती है, कभी मौलवी साहब नीचे और चारपाई ऊपर होती है और एक बार तो दाढ़ी मूंडकर उनका मुंह भी काला किया जा चुका है। इन दो के अलावा आज ये तीसरे अब्दुल्ला सेठ फंसे।

गली में इस वारदात की भनक तो कई कानों में पड़ी मगर ऐसे में भला कौन पास आता! जरा देर बाद जी कड़ा करके इधर से गफ्फार बिजली वाले ने अपने बाहर की लाइट खोली, उधर से बसंतू कहार वगैरह आए। देखा तो सेठ जूता-मोजा पहने लंगोटा बांधे, नंगे बदन गली में चारों खाने चित, बेहोश पड़े हैं। उनका कुरता, शेरवानी, पाजामा, टोपी, चमड़े का बैग वगैरह सब गायब हैं। पास ही उनका कारिंदा भी उसी हालत में पड़ा है, फकत उसकी एक तरफ की मूंछ और भौं पर गहरा बालसफा लोशन रगड़ दिया गया था सो उठाते ही वे झड़ पड़ीं। बसंतू को यह देखकर भरी दहशत में भी हंसी आ गई। इन लोगों के हौसले को देखकर और लोग भी आगे बढ़ आए थे।

इस पीपल की परी को तो सभी जानते हैं। जब जीती-जागती थी

गई। दोनों पांव थर-थर कांपते हुए भी जाम हो गए, जिस्म पत्थर हो गया और खौफ बिजली के करेंट-सा उसमें सरीता रहा। एकाएक फिर अंधेरा घुप हुआ, धरती पर एक धमाका हुआ और पेड़ के चारों ओर घुंघरू छमाछम यों दौड़ने लगे मानो कोई अल्हड़ शोख हसीना नकफेरियां ले रही हो।

ऐ किस्सा पढ़नेवाले दोस्तो, आप हैरत में होंगे कि ये यकायक क्या हो गया और अब आगे क्या होनेवाला है मगर होता है वही जो मंजूरे-खुदा होता है। बेचारे अब्दुल्ला सेठ के नसीब में आज की रात यही बदा होगा कि आसेबी चक्कर में पड़ें। इस दरख्ते-पीपल पर आज करीब छह महीनों से एक भुतनी रहती है। उसके मारे बड़े-बड़ों की हवा गुम है। मुहल्ले के सिरताज सबजजी के पेशकार जनाब मीरन साहब की तन से कई बार बुरी गत बन चुकी है। दुनिया-भर के भूत-जिन्नात को बस में करनेवाले बड़े सरनाम मौलवी कुतुबुद्दीन, बरजबाने-आम मौलवी कुदबुद्दी, का घर एकदम पीपल से लगा हुआ ही है। उनके घर में कभी ढेला पड़ता है, कभी पटापट बारूद के गोले फूटते हैं, कभी आग लगती है, कभी मौलवी साहब नीचे और चारपाई ऊपर होती है और एक बार तो दाढ़ी मूंडकर उनका मुंह भी काला किया जा चुका है। इन दो के अलावा आज ये तीसरे अब्दुल्ला सेठ फंसे।

गली में इस वारदात की भनक तो कई कानों में पड़ी मगर ऐसे में भला कौन पास आता! जरा देर बाद जी कड़ा करके इधर से गफ्फार बिजली वाले ने अपने बाहर की लाइट खोली, उधर से बसंतू कहार वगैरह आए। देखा तो सेठ जूता-मोजा पहने लंगोटा बांधे, नंगे बदन गली में चारों खाने चित, बेहोश पड़े हैं। उनका कुरता, शेरवानी, पाजामा, टोपी, चमड़े का बैग वगैरह सब गायब हैं। पास ही उनका कारिंदा भी उसी हालत में पड़ा है, फकत उसकी एक तरफ की मूंछ और भौं पर गहरा बालसफा लोशन रगड़ दिया गया था सो उठाते ही वे झड़ पड़ीं। बसंतू को यह देखकर भरी दहशत में भी हंसी आ गई। इन लोगों के हौसले को देखकर और लोग भी आगे बढ़ आए थे।

इस पीपल की परी को तो सभी जानते हैं। जब जीती-जागती थी

शरवती अपने-आप ही में एक से दो हो गई : ऊपरवाली शरवती चरवांक थी और भीतरवाली संजीदा। जो भीतर वाली थी वह घर के भीतर ही रहना चाहती थी। मगर कौन रखता? जब छोटी थी तब रात के वक्त किसीकी दहलीज़-दालान में दुबककर पड़ रहती थी। अगर अब वह बड़ी और बदनाम हो चली थी। हर घर की माओं, बीवियों को अपने कुंवारे-जवान बच्चों या बिगड़े-दिल शौहरों के खुदा-न-ख्वास्ता हाथ-बेहाथ हो जाने के डर से उसे अपने यहां सुलाने में गुरेज़ था। करीब-करीब हर जगह, हर रात सोने के लिए टंटा मचता। पैरों पड़कर, रोकर किसी न किसी तरह कहीं न कहीं पनाह पाती ही रही मगर फिर उसके लिए पनाह पाना भी एक अहम सवाल हो गया था।

अब्दुल्ला सेठ लखपती आदमी शरीफ खान्दान के थे। उनके वालिद बसरा-बगदाद से आकर यहां बसे थे। मोतियों का खास कारबार था। अब्दुल्ला सेठ की बीवी बड़ी नेक, हसीन और शरीफ थी। अब्दुल्ला सेठ यों तो हर तरह से भले, इन्साफ-पसंद, संजीदा और दिल वाले थे मगर बाज़ारू लड़कों के पीछे दीवाने रहने के सबब से अपनी बीवी को कभी चैनो-करार न दे पाए। एक लड़की थी, उसीका मुंह देखकर वह जीती और खुश रहती थी। शरवती उन्हींके पांव पकड़कर रोई। अब्दुल्ला सेठ की बीवी को दया आ गई, अपने पास रख लिया। वो दो-ढाई साल शरवती की तब तक की ज़िंदगी में सबसे उम्दा गुज़रे। अब्दुल्ला सेठ की बीवी ने शरवती को सदा घर के काम-काज में ही रक्खा; कभी बाहर नहीं भेजा। घर के किसी नौकर की मजाल न थी जो शरवती को छेड़ देता। लड़की बड़े सलीके में पड़ गई। पढ़ना-लिखना, सीना-पिरोना आ गया। खाना बनाने में हाथ सधने लगा। अलम्-सुकून में और साफ-सुथरी रहने की वजह से शरवती के चेहरे पर ऐसा निखार आ गया था कि बाहर वाला अनजान उसे धोखे में अब्दुल्ला सेठ ही की दूसरी लड़की समझता था। पर शरवती की बदनसीबी से अब्दुल्ला सेठ की बीवी अचानक दिक होकर मर गई। हालांकि मरने से पहले बीवी ने अपने शौहर से वादा कराया था कि शरवती की कहीं शादी करा देंगे मगर अब्दुल्ला सेठ को एक मुद्दत तक उस फिक्र को साधने की फुरसत न मिली, हालांकि यह नेक इरादा

शरवती अपने-आप ही में एक से दो हो गई : ऊपरवाली शरवती चरवांक थी और भीतरवाली संजीदा। जो भीतर वाली थी वह घर के भीतर ही रहना चाहती थी। मगर कौन रखता ? जब छोटी थी तब रात के वक्त किसीकी दहलीज़-दालान में दुबककर पड़ रहती थी। अगर अब वह बड़ी और बदनाम हो चली थी। हर घर की माओं, बीवियों को अपने कुंवारे-जवान बच्चों या बिगड़े-दिल शौहरों के खुदा-न-ख्वास्ता हाथ-बेहाथ हो जाने के डर से उसे अपने यहां सुलाने में गुरेज़ था। करीब-करीब हर जगह, हर रात सोने के लिए टंटा मचता। पैरों पड़कर, रोकर किसी न किसी तरह कहीं न कहीं पनाह पाती ही रही मगर फिर उसके लिए पनाह पाना भी एक अहम सवाल हो गया था।

अब्दुल्ला सेठ लखपती आदमी शरीफ खान्दान के थे। उनके वालिद बसरा-बगदाद से आकर यहां बसे थे। मोतियों का खास कारबार था। अब्दुल्ला सेठ की बीवी बड़ी नेक, हसीन और शरीफ थी। अब्दुल्ला सेठ यों तो हर तरह से भले, इन्साफ-पसंद, संजीदा और दिल वाले थे मगर बाजारू लड़कों के पीछे दीवाने रहने के सबब से अपनी बीवी को कभी चैनो-करार न दे पाए। एक लड़की थी, उसीका मुंह देखकर वह जीती और खुश रहती थी। शरवती उन्हींके पांव पकड़कर रोई। अब्दुल्ला सेठ की बीवी को दया आ गई, अपने पास रख लिया। वो दो-ढाई साल शरवती की तब तक की ज़िंदगी में सबसे उम्दा गुज़रे। अब्दुल्ला सेठ की बीवी ने शरवती को सदा घर के काम-काज में ही रक्खा; कभी बाहर नहीं भेजा। घर के किसी नौकर की मजाल न थी जो शरवती को छेड़ देता। लड़की बड़े सलीके में पड़ गई। पढ़ना-लिखना, सीना-पिरोना आ गया। खाना बनाने में हाथ सधने लगा। अलम्-सुकून में और साफ-सुथरी रहने की वजह से शरवती के चेहरे पर ऐसा निखार आ गया था कि बाहर वाला अनजान उसे धोखे में अब्दुल्ला सेठ ही की दूसरी लड़की समझता था। पर शरवती की बदनसीबी से अब्दुल्ला सेठ की बीवी अचानक दिक होकर मर गई। हालांकि मरने से पहले बीवी ने अपने शौहर से वादा कराया था कि शरवती की कहीं शादी करा देंगे मगर अब्दुल्ला सेठ को एक मुद्दत तक उस फिक्र को साधने की फुरसत न मिली, हालांकि यह नेक इरादा

पड़ोस के घर में चली गई। सब हाल कहा। हमदर्द पड़ोसी कानूनी सलाह के वास्ते पेशकार साहब को बुला लाया। उस बहाने से दोनों में जान-पहचान हुई और फिर तो ऐसी चालें चली गईं कि मीरन साहब अक्सर अपनी रातें मौलवी साहब के यहां गुजारने लगे। बाद में मौलवी साहब को सब कुछ मालूम हो गया मगर वे दबे रहे। मौलवी ने औरत से बदला ले लिया। मीरन साहब को कुछ रोज के वास्ते एक दूसरी आसेबी चक्कर की चिड़िया के जाल में फंसा दिया और उस औरत को धीमे असर वाला जहर देकर रफ्ता-रफ्ता मार डाला। तब से 'मुफ्तुल्ले-ऐयाश' बेचारे मीरन साहब के वास्ते बीवी उर्फ घर की मुर्गी को छोड़कर दिलबस्तगी का और कोई सामान न रहा।

सेठ अब्दुल्ला के सूने घर में खिली शरबती की जवानी को देखकर मीरन साहब अपने काबू में न रह सके। दोस्त को दबाने लगे। उन्होंने अपनी बीवी को शरबती की शादी के बाबत किए गए वादे की दुहाई दी। मीरन साहब ने कहा कि मौलवी कुतुबउद्दीन से करा देंगे। इस तरह शरबती मौलवी कुदबुद्दी की बीवी और मीरन साहब का खिलवाड़ बनी।

शुरू-शुरू में तो शरबती का चेहरा देखकर मौलवी कुदबुद्दी को बुढ़-भस को रीझने और मन बहलाने का शग्ल मिला मगर बाद में बात-बात पर चिढ़कर उसे बेंतों से नीली-पीली बनाने लगे। वह चीखती-चिल्लाती तो आप भी जोर-जोर से अरबी-फारसी के मंतर बूंकने लगते। लोगों से कहते कि उसका भूत झाड़ता हूं। चिढ़ इस बात की थी कि मीरन साहब से कभी धेले की आस न थी और ऊपर से शरबती के खाने-पहरने का खर्च सहना पड़ता था। पुरानी बीवी तरह-तरह के खाने पकाने में होशियार थी, शरबती के पास वह हुनर कहां! मौलवी कुदबुद्दी दरअस्ल बड़े बुज़दिल थे, मीरन साहब की पेशकारी का रौब उन्हें ख्वाहमख्वाह हर-दम दबाए रखता था। शरबती मीरन साहब से मौलवी साहब की शिकायत करती तो वे तसल्लियां देते थे कि जल्द ही दूसरी जगह तुम्हारा इंतज़ाम कर रहा हूं।

शरबती दबी बिल्ली-सी घुटते-घुटते एक दिन शेरनी बन गई। सुबह का वक्त था। बैठके में गंडे-तावीज़ वालों की भीड़ लगी थी। मौलवी

पड़ोस के घर में चली गई। सब हाल कहा। हमदर्द पड़ोसी कानूनी सलाह के वास्ते पेशकार साहब को बुला लाया। उस बहाने से दोनों में जान-पहचान हुई और फिर तो ऐसी चालें चली गईं कि मीरन साहब अक्सर अपनी रातें मौलवी साहब के यहां गुज़ारने लगे। बाद में मौलवी साहब को सब कुछ मालूम हो गया मगर वे दबे रहे। मौलवी ने औरत से बदला ले लिया। मीरन साहब को कुछ रोज के वास्ते एक दूसरी आसेबी चक्कर की चिड़िया के जाल में फंसा दिया और उस औरत को धीमे असर वाला ज़हर देकर रफ्ता-रफ्ता मार डाला। तब से 'मुफ्तुल्ले-ऐयाश' बेचारे मीरन साहब के वास्ते बीवी उर्फ घर की मुर्गी को छोड़कर दिलबस्तगी का और कोई सामान न रहा।

सेठ अब्दुल्ला के सूने घर में खिली शरबती की जवानी को देखकर मीरन साहब अपने काबू में न रह सके। दोस्त को दबाने लगे। उन्होंने अपनी बीवी को शरबती की शादी के बाबत किए गए वादे की दुहाई दी। मीरन साहब ने कहा कि मौलवी कुतुबउद्दीन से करा देंगे। इस तरह शरबती मौलवी कुदबुद्दी की बीवी और मीरन साहब का खिलवाड़ बनी।

शुरू-शुरू में तो शरबती का चेहरा देखकर मौलवी कुदबुद्दी को बुढ़-भस को रीझने और मन बहलाने का शग्ल मिला मगर बाद में बात-बात पर चिढ़कर उसे बेंतों से नीली-पीली बनाने लगे। वह चीखती-चिल्लाती तो आप भी जोर-जोर से अरबी-फारसी के मंतर फूंकने लगते। लोगों से कहते कि उसका भूत झाड़ता हूं। चिढ़ इस बात की थी कि मीरन साहब से कभी धेले की आस न थी और ऊपर से शरबती के खाने-पहरने का खर्च सहना पड़ता था। पुरानी बीवी तरह-तरह के खाने पकाने में होशि-यार थी, शरबती के पास वह हुनर कहां! मौलवी कुदबुद्दी दरअस्ल बड़े बुज़दिल थे, मीरन साहब की पेशकारी का रौब उन्हें ख्वाहमख्वाह हर-दम दबाए रखता था। शरबती मीरन साहब से मौलवी साहब की शिका-यत करती तो वे तसल्लियां देते थे कि जल्द ही दूसरी जगह तुम्हारा इंतज़ाम कर रहा हूं।

शरबती दबी बिल्ली-सी घुटते-घुटते एक दिन शेरनी बन गई। सुबह का वक्त था। बैठके में गंडे-ताबीज वालों की भीड़ लगी थी। मौलवी

दो वाहर वाले भी मौजूद थे। शरवती दरवाज़े की ओट हो गई और कुंडी खटखटाकर गफ्फार को वुलाया। शरवती ने उसके पांव पकड़ लिए। अपने आंसुओं को रूमाल से ढंककर उस नौजवान की खूराके-दिल के लिए अदाओं की लुभावनी प्लेटें सजा दीं। शरवती का पुराना जादू तो सवके सर पर चढ़ा हुआ था ही, फिर वरसों वाद देखने को मिली, गफ्फार मड़ी पर चढ़ गया। उसे अपने घर में छिपाकर पनाह दी।

इधर मौलवी कुदवुद्दी मैयत का सारा इंतजाम करके चार-छह आदमियों के साथ घर लौटे तो देखा कि लाश लापता थी। वैठकखाने का दरवाजा खुला पाकर उन्हें यकीन हो गया कि शरवती ज़हर की पुड़िया निकली, दगा दे गई। वड़े घवराए। दौड़े हुए मीरन साहव के यहां गए। कहा कि सरकार, तुम्हींने दर्द दिया था, तुम्हीं दवा देना। मीरन वोले कि खैर, तुम झूठा जनाजा ही निकलवा दो ताकि उसकी खवरे-मौत कानूनन पुख्ता हो जाए। तावूतवालों को रिश्वत देने के वहाने कभी घेला न खर्च करनेवाले मीरन साहव से भी मौलवी साहव कुछ न कुछ झटक ही लाए। यों मामला रफा-दफा हुआ। कुछ लोग मज़ाक में मातमपुर्सी करने मौलवी साहव के यहां आए। चार-छह रोज़ तक शरवती के मरने का चर्चा मुटल्ले सुलेमान की दूकान पर और लोगों की ज़वानों पर रस का वायस वनकर चढ़ा रहा।

इधर शरवती गफ्फार से वोली कि मियां वाकायदा शादी करके रक्खोगे तो रहूंगी, वर्ना अव इस जिंदगी में दिलचस्पी नहीं। यों भी मर तो चुकी ही हूं, दरियाए-गोमती में जाके डूव मरूंगी। गफ्फार ने फौरन उसे सीने से लगाया। कहा कि मैं शरीफ हूं। अगर तुम वफादारी निभाओगी तो मेरी ओर से कोई शिकायत न पाओगी। मगर भूतनी से शादी न करूंगा। तुम्हें अगर ज़िंदा न किया तो नाम गफ्फार नहीं। शरवती ने प्यार के जोश में अपनी दोनों वांहों को गफ्फार का गलहार वना दिया और वोली कि अगर तुम मेरी ओर से इस मुवे मौलवी और निगोड़े मीरन से इंतकाम लोगे तो तुम्हारे पैरों की जूती वनने के वास्ते जिस्म के टुकड़े काटकर हाज़िर कर दूंगी।

गफ्फार मियां कारसाज़ थे। एक रात अपनी छत से पीपल पर चढ़े

दो बाहर वाले भी मौजूद थे। शरवती दरवाज़े की ओट हो गई और कुंडी खटखटाकर गफ्फार को बुलाया। शरवती ने उसके पांव पकड़ लिए। अपने आंसुओं को रूमाल से ढंककर उस नौजवान की खूराके-दिल के लिए अदाओं की लुभावनी प्लेटें सजा दीं। शरवती का पुराना जादू तो सबके सर पर चढ़ा हुआ था ही, फिर बरसों बाद देखने को मिली, गफ्फार भड़ी पर चढ़ गया। उसे अपने घर में छिपाकर पनाह दी।

इधर मौलवी कुदबुद्दी मैयत का सारा इंतजाम करके चार-छह आदमियों के साथ घर लौटे तो देखा कि लाश लापता थी। बैठकखाने का दरवाजा खुला पाकर उन्हें यकीन हो गया कि शरवती ज़हर की पुड़िया निकली, दगा दे गई। बड़े घबराए। दौड़े हुए मीरन साहब के यहां गए। कहा कि सरकार, तुम्हींने दर्द दिया था, तुम्हीं दवा देना। मीरन बोले कि खैर, तुम झूठा जनाज़ा ही निकलवा दो ताकि उसकी खबरे-मौत कानूनन पुख्ता हो जाए। ताबूतवालों को रिश्वत देने के बहाने कभी धेला न खर्च करनेवाले मीरन साहब से भी मौलवी साहब कुछ न कुछ झटक ही लाए। यों मामला रफा-दफा हुआ। कुछ लोग मज़ाक में मातमपुर्सी करने मौलवी साहब के यहां आए। चार-छह रोज़ तक शरबती के मरने का चर्चा मुटल्ले सुलेमान की दूकान पर और लोगों की ज़बानों पर रस का बायस बनकर चढ़ा रहा।

इधर शरवती गफ्फार से बोली कि मियां बाकायदा शादी करके रक्खोगे तो रहूंगी, वर्ना अब इस ज़िंदगी में दिलचस्पी नहीं। यों भी मर तो चुकी ही हूं, दरियाए-गोमती में जाके डूब मरूंगी। गफ्फार ने फौरन उसे सीने से लगाया। कहा कि मैं शरीफ हूं। अगर तुम वफादारी निभाओगी तो मेरी ओर से कोई शिकायत न पाओगी। मगर भूतनी से शादी न करूंगा। तुम्हें अगर ज़िंदा न किया तो नाम गफ्फार नहीं। शरवती ने प्यार के जोश में अपनी दोनों बांहों को गफ्फार का गलहार बना दिया और बोली कि अगर तुम मेरी ओर से इस मुवे मौलवी और निगोड़े मीरन से इंतकाम लोगे तो तुम्हारे पैरों की जूती बनने के वास्ते जिस्म के टुकड़े काटकर हाज़िर कर दूंगी।

गफ्फार मियां कारसाज़ थे। एक रात अपनी छत से पीपल पर चढ़े

चूल्हे में जाते ही भक से जल उठी, धुआं-धंसक उड़ी। इसके बाद मुहल्ले में कोई उन्हें पानी लेने-देने का भी रवादार न रहा।

इधर मीरन साहब का यह हाल हुआ कि एक दिन रात में उनके सिनेमा से लौटकर आने के वक्त उनकी गली के नावदान का पत्थर हट गया और वे गड़ाप से उसमें जा समाए। एक बार रात में अनकरीब साढ़े बारह-एक बजे अपने इजलास के हुजूर जज साहब के चंद मेहमानों को अंग्रेज़ी सिनेमा दिखलाने के बाद अब दूसरी खास दावत में शरीक होने के लिए अपने खास-उल-खास अज़ीज़ दोस्त सेठ अब्दुल्ला के यहां जा रहे थे। शाम को सेठ के यहां ही इस वक्त आने की बात तय हो चुकी थी। बड़े मगन थे। सीटी बजाते गली के सुनसान को मस्ती से गुंजाते बेहोश चले आ रहे थे कि अंधेरे में पीपल से एक खाली कनस्तर इनके आगे गिरा। ये ठिठके, तभी गहन अंधेरे में पीछे से एक भूत ने आके इन्हें दबोच लिया। जब तक ये संभलें-संभलें कि वह तेल-चिक्कन काला भुजंग इनकी गर्दन पर सवार। घिघिया के धम् से गिरे। कंधे पर कटार-सी चुभनी थी कि फिर होश कायम न रख सके। वारदात के बाद पांच मिनट तक कहीं जूं भी न रेंगी। फिर इधर से गफ्फार अपनी छत की मुंडेर से झांककर बोला, "अमां बसंतू चच्चा होत्।"

"हां बेटा, घबराना नहीं। हम महजूद हन। औ' ऊपर पीपल के पास ठड़े होने का कोई काम नहीं। नीचे जाओ फौरन।" सफेद बुर्राक बड़ी-बड़ी मूंछोंवाले बसंतू कहार की बुजुर्गाना फटकार-भरी कड़ियल आवाज़ गली में ज़रा दूर से आई।

"नहीं, मैंने कहा कि अब लैट जला के देखने में कोई हरजा तो नहीं-नां!" गफ्फार ने फिर कहा।

"अबे, नीचे उतर लौंडे! वो पीपल वाली है, बेटा! नीचे से लैट दिखा आके। मैं आता हूं।"

बसंतू कहार के डर से शरबती और गफ्फार को गुपचुप हंसी आई। बुजुर्ग के प्यार पर गफ्फार के मन में अदब जागा। खुदा का नाम ज़ोर-ज़ोर से लेके गफ्फार ने अपने घर के दरवाज़े की लाइट खोली, फिर दरवाज़ा खोला और लंबी डोरी में दो सौ पावर का बल्ब लगाकर आगे

चूल्हे में जाते ही भक से जल उठी, धुआं-धंसक उड़ी। इसके बाद मुहल्ले में कोई उन्हें पानी लेने-देने का भी रवादार न रहा।

इधर मीरन साहब का यह हाल हुआ कि एक दिन रात में उनके सिनेमा से लौटकर आने के वक्त उनकी गली के नाबदान का पत्थर हट गया और वे गड़ाप से उसमें जा समाए। एक बार रात में अनकरीब साढ़े बारह-एक बजे अपने इजलास के हुज़ूर जज साहब के चंद मेहमानों को अंग्रेज़ी सिनेमा दिखलाने के बाद अब दूसरी खास दावत में शरीक होने के लिए अपने खास-उल-खास अज़ीज़ दोस्त सेठ अब्दुल्ला के यहां जा रहे थे। शाम को सेठ के यहां ही इस वक्त आने की बात तय हो चुकी थी। बड़े मगन थे। सीटी बजाते गली के सुनसान को मस्ती से गुंजाते बेहोश चले आ रहे थे कि अंधेरे में पीपल से एक खाली कनस्तर इनके आगे गिरा। ये ठिठके, तभी गहन अंधेरे में पीछे से एक भूत ने आके इन्हें दबोच लिया। जब तक ये संभलें-संभलें कि वह तेल-चिक्कन काला भुजंग इनकी गर्दन पर सवार। घिघिया के धम् से गिरे। कंधे पर कटार-सी चुभनी थी कि फिर होश कायम न रख सके। वारदात के बाद पांच मिनट तक कहीं जूं भी न रेंगी। फिर इधर से गफ्फार अपनी छत की मुंडेर से झांककर बोला, "अमां वसंतू चच्चा होत्।"

"हां बेटा, घबराना नहीं। हम महजूद हन। औ' ऊपर पीपल के पास ठड़े होने का कोई काम नहीं। नीचे जाओ फौरन।" सफेद बुर्राक बड़ी-बड़ी मूंछोंवाले वसंतू कहार की बुज़ुर्गाना फटकार-भरी कड़ियल आवाज़ गली में ज़रा दूर से आई।

"नहीं, मैंने कहा कि अब लैट जला के देखने में कोई हरजा तो नहीं-नां!" गफ्फार ने फिर कहा।

"अबे, नीचे उतर लौंडे! वो पीपल वाली है, बेटा! नीचे से लैट दिखा आके। मैं आता हूं।"

वसंतू कहार के डर से शरबती और गफ्फार को गुपचुप हंसी आई। बुजुर्ग के प्यार पर गफ्फार के मन में अदब जागा। खुदा का नाम ज़ोर-ज़ोर से लेके गफ्फार ने अपने घर के दरवाज़े की लाइट खोली, फिर दरवाज़ा खोला और लंबी डोरी में दो सौ पावर का बल्ब लगाकर आगे

मीरन साहब घर से लेकर बाहर तक मुंह दिखलाने के काबिल न रह गए। मौलवी कुदबुद्दी के दरवाज़े तो चौबीसों घंटे बंद रहने लगे। शरबती के आसेब ने उनपर यह असर तो ज़रूर डाला कि बुढ़ापे में आकर जानो-ईमान से रोज़े-नमाज़ के पाबंद हो गए। पांचों वक्त जांनमाज़ बिछने लगी, तसबीह हरदम फिरने लगी, आंखें सदा खौफे-खुदा से ऊपर ही टंगी रहने लगीं। होंठों से हर वक्त ही बुदबुदाते थे, "जल तू जलाल तू, आई बला को टाल तू।"

बहरहाल यों ही कभी पेशकार मीरन साहब के घर के नौकर, शरबती के पुराने चाहनेवाले टेसुआ को साधकर कुछ तमाशे करवा देते और कभी मौलवी साहब पर करम हो जाता। कभी-कभी आधी रात के वक्त पीपल के पेड़ से घुंघुरुओं की झनकार, खिलखिलाकर हंसना, नक्की सुरों में न जाने किस ज़बान में भूतिया तरानों के झलक-पलक प्रोग्राम से पब्लिक को सहमा दिया जाता और कभी मुटल्ले सुलेमान के लिए धमकियों-भरी बातचीत सुनाई पड़ती। चुड़ैल शरबती कहती कि वह थुलथुल मेढक अगर मुहल्ले के पांच गरीब लड़कों और पांच लड़कियों की साल-भर की फीस हरएक के घर इकट्ठी न पहुंचा देगा तो उसकी तोंद काटकर उसका नगाड़ा बनाकर यहीं पीपल तले बजाऊंगी।

पीपल की परी के ये करिश्मे पिछले कुछ महीनों के दौरान में हुए तो कुल जमा कुछ ही मगर उनका हुल्लड़ बहुत बंधा। शरबती के आसेब ने अपनी और आसपास की कई गलियों के गरीबों का भला करवाया और उसके जस की अजब चांदनी-सी फैली गई।

शरबती अब अपना बदला ले चुकी थी। गफ्फार इतने दिनों के साथ में उसपर जान देने लगा था। शरबती उसकी हर खिदमत में रही मगर अपने को बचाकर रही। अपने ऊपर जब्र करने के बावजूद गफ्फार पर इस बात का गहरा असर पड़ा। साज़िश में मिलाने के सबब से मीरन साहब के घर के नौकर टेसुआ और अब्दुल्ला सेठ के छोकरे रहीमा को भी असलियत का पता था, कुछ-कुछ भंगी का लौंडा भी जानता था। इन सबका आपस में हंसी के मारे पेट फूलता था। राज़ ज्यादह दिनों तक छिपा रखना मुमकिन न था। पर गफ्फार को जोश चढ़ आया कि

मीरन साहब घर से लेकर बाहर तक मुंह दिखलाने के काबिल न रह गए। मौलवी कुदबुद्दी के दरवाज़े तो चौबीसों घंटे बंद रहने लगे। शरबती के आसेब ने उनपर यह असर तो ज़रूर डाला कि बुढ़ापे में आकर जानो-ईमान से रोज़े-नमाज़ के पाबंद हो गए। पांचों वक्त जांनमाज़ बिछने लगी, तसबीह हरदम फिरने लगी, आंखें सदा खौफे-खुदा से ऊपर ही टंगी रहने लगीं। होंठों से हर वक्त ही बुदबुदाते थे, "जल तू जलाल तू, आई बला को टाल तू।"

बहरहाल यों ही कभी पेशकार मीरन साहब के घर के नौकर, शरबती के पुराने चाहनेवाले टेसुआ को साधकर कुछ तमाशे करवा देते और कभी मौलवी साहब पर करम हो जाता। कभी-कभी आधी रात के वक्त पीपल के पेड़ से घुंघरुओं की झनकार, खिलखिलाकर हंसना, नक्की सुरों में न जाने किस ज़बान में भूतिया तरानों के झलक-पलक प्रोग्राम से पब्लिक को सहमा दिया जाता और कभी मुटल्ले सुलेमान के लिए धमकियों-भरी बातचीत सुनाई पड़ती। चुड़ैल शरबती कहती कि वह थुलथुल मेढक अगर मुहल्ले के पांच गरीब लड़कों और पांच लड़कियों की साल-भर की फीस हरएक के घर इकट्ठी न पहुंचा देगा तो उसकी तोंद काटकर उसका नगाड़ा बनाकर यहीं पीपल तले बजाऊंगी।

पीपल की परी के ये करिश्मे पिछले कुछ महीनों के दौरान में हुए तो कुल जमा कुछ ही मगर उनका हुल्लड़ बहुत बंधा। शरबती के आसेब ने अपनी और आसपास की कई गलियों के गरीबों का भला करवाया और उसके जस की अजब चांदनी-सी फैली गई।

शरबती अब अपना बदला ले चुकी थी। गफ्फार इतने दिनों के साथ में उसपर जान देने लगा था। शरबती उसकी हर खिदमत में रही मगर अपने को बचाकर रही। अपने ऊपर जब्र करने के बावजूद गफ्फार पर इस बात का गहरा असर पड़ा। साजिश में मिलाने के सबब से मीरन साहब के घर के नौकर टेसुआ और अब्दुल्ला सेठ के छोकरे रहीमा को भी असलियत का पता था, कुछ-कुछ भंगी का लौंडा भी जानता था। इन सबका आपस में हंसी के मारे पेट फूलता था। राज़ ज्यादह दिनों तक छिपा रखना मुमकिन न था। पर गफ्फार को जोश चढ़ आया कि

५

वनफशा बेगम के नूरेनज़र

लखनऊ के नवाब मर गए मगर औलादें छोड़ गए हैं; नवाबी न रही मगर उसके खंडहरों में अब भी पुराने उल्लू बोलते हैं। यकीन न हो तो गुलज़ार बाग चले जाइए। कौन बड़ी दूर है। कहीं से बस का टिकट कटाइए, सीधे शहर के छोर तक चले जाइए, आगे नदी पड़ेगी, नाव वाले को टका उतराई और दस नये पैसे बख्शीश के दीजिए और फिर उस पार नाक की सीध में चलते ही चले जाइए। दायें मुड़ेंगे तो मरघट पड़ेगा, बायें बढ़ेंगे तो चिनहट पड़ेगा, बस उसी गांव से लगा हुआ गुलज़ार बाग है।

यों तो गुलज़ार बाग में अब न गुल रहे और न बुलबुल। एक मील के घेरे में उसकी टूटी चहारदीवारी की ईंटें जाबजा बिखरी पड़ी हैं। अन्दर बारहदरी की टूटी शहतीरों पर जब बिसखोपड़े नहीं दौड़ते तब गिलहरियां अपनी दुमें ऊंची उठाए आगे के चुन्ने-मुन्ने पंजों से अपनी मूंछें साफ करती हैं। हम्माम में सितारों ने जाबजा अपने भिटे खोद रखे हैं। जगह-जगह कमर-कमर तक घास उगी खड़ी है। चारों ओर धतूरे और भटकटैया के फूलों का जंगल उगा हुआ है। यह देखकर कौन कह सकता है कि आज से अट्ठाईस-तीस बरस पहले तक यही जगह मीठी बोलियां बोलनेवाली चिड़ियों और मीठी तानें लेनेवाली नाजनियों से हर वक्त ही गूंजा करती थी।

दुल्लू नवाब ने अपने खानदानी दुश्मन अच्छन नवाब की इकलौती बेवा को अपने इश्क के चंगुल में फंसाकर इसी बाग और बारहदरी में बड़े-बड़े ऐश किए थे। उनकी ब्याहता वनफशा बेगम इसी बाग के पच्छुम तरफ पुरानी कोठी में कोसा-काटी, जादू-टोने किया करती थीं। सौत ने ऐसा कंपा डाला था कि बनफशा बेगम का कोई दांव ही न लग पाता था।

५

बनफशा बेगम के नूरेनजर

लखनऊ के नवाब मर गए मगर औलादें छोड़ गए हैं; नवाबी न रही मगर उसके खंडहरों में अब भी पुराने उल्लू बोलते हैं। यकीन न हो तो गुलज़ार बाग चले जाइए। कौन बड़ी दूर है। कहीं से बस का टिकट कटाइए, सीधे शहर के छोर तक चले जाइए, आगे नदी पड़ेगी, नाव वाले को टका उतराई और दस नये पैसे बख्शीश के दीजिए और फिर उस पार नाक की सीध में चलते ही चले जाइए। दायें मुड़ेंगे तो मरघट पड़ेगा, बायें बढ़ेंगे तो चिनहट पड़ेगा, बस उसी गांव से लगा हुआ गुलज़ार बाग है।

यों तो गुलज़ार बाग में अब न गुल रहे और न बुलबुल। एक मील के घेरे में उसकी टूटी चहारदीवारी की ईंटें जाबजा बिखरी पड़ी हैं। अन्दर बारहदरी की टूटी शहतीरों पर जब बिसखोपड़े नहीं दौड़ते तब गिलहरियां अपनी दुमें ऊंची उठाए आगे के चुन्ने-मुन्ने पंजों से अपनी मूंछें साफ करती हैं। हम्माम में सितारों ने जाबजा अपने भिटे खोद रखे हैं। जगह-जगह कमर-कमर तक घास उगी खड़ी है। चारों ओर धतूरे और भटकटैया के फूलों का जंगल उगा हुआ है। यह देखकर कौन कह सकता है कि आज से अट्ठाईस-तीस बरस पहले तक यही जगह मीठी बोलियां बोलनेवाली चिड़ियों और मीठी तानें लेनेवाली नाज़नियों से हर वक्त ही गूंजा करती थी।

दुल्लू नवाब ने अपने खानदानी दुश्मन अच्छन नवाब की इकलौती बेवा को अपने इश्क के चंगुल में फंसाकर इसी बाग और बारहदरी में बड़े-बड़े ऐश किए थे। उनकी ब्याहता बनफशा बेगम इसी बाग के पच्छुम तरफ पुरानी कोठी में कोसा-काटी, जादू-टोने किया करती थीं। सौत ने ऐसा कंपा डाला था कि बनफशा बेगम का कोई दांव ही न लग पाता था।

शरीफ हैं, दिल-दरिया हैं, इन्हें मुन्नी बेगम और मुसाहबीन बहकाए हुए हैं। महरी ने इस ख़ान्दान की एक पुरानी कहानी सुनाई, कि नवाब बड़े बहादुर थे मगर इसी तरह वे भी बुरी सोहबत में पड़ गए थे। उधर बादशाह पर दुश्मन का धावा हुआ, इधर ये नशे में आठों पहर धुत्त। सब लोग समझा-समझा के हार गए मगर वहां सुनता कौन था—बल्कि नशे के आलम में नेक सलाहों का मज़ाक उड़ाया जाता। बेगम साहबा थीं, इन्हीं दुल्लू नवाब की सात पुश्तों में कोई दादी-परदादी। मुग़ल की बेटी, दबंग और बड़ी आनबान वाली थीं। एकाएक मर्दाने में चाबुक लेकर पहुंच गईं, मुसाहबों, नाचने वालियों पे जो दनादन चाबुक बरसाने लगीं तो भगदड़ पड़ी। नवाब साहब को अपने हाथों ज़िरह-बख्तर पहनाया, तलवार दी और कहा कि सुर्खरू होकर लौटिए और फिर वही रागरंग कीजिए, मैं दखल न दूंगी। ऐसी दबंग थीं।

बनफशा बेगम को यह सुनकर मानो अपनी घुटन का इलाज मिल गया। एक नजूमी ने बताया था कि साल-भर में लड़का होगा और अगर अब न हुआ तो कभी न होगा। साल बीता जा रहा था और ओझा, सयाने, मौलवी, पंडित कोई भी नवाब साहब को बेगम साहबा के पास न सके थे। लिहाजा बेगम साहबा ने इस खान्दान की पुरखिन से सबक लेकर डोली मंगवाई और साथ हण्टर के गुलजार बाग पहुंच गईं। पुरखिन बेगम ने तो मुसाहबों की मरम्मत की थी मगर बनफशा बेगम ने अपनी सौत को हण्टरनाच नचाया। दुल्लू नवाब बचाने उठे तो उनपर भी चाबुक बरसे। मुन्नी बेगम बेहोश हो गईं और बनफशा बेगम अपने शौहर को मार से रिझाकर अपने यहां ले आईं और कमरे में ताला डालकर हर वक्त अपनी नजरों के सामने रखा।

इस तरह बनफशा बेगम के नूरेनजर दुन्नू मियां पैदा हुए।

बाद में मुन्नी बेगम और दुल्लू नवाब कभी मिल न सके। उधर वो मरीं, इधर ये मरे। इलाके लुट गए, बाकी कर्ज़ में गए। अब बनफशा बेगम हैं, उनके लख्तेजिगर दुन्नू नवाब हैं। कल्लो पीर अली हैं। दो आमों के बाग हैं, थोड़ी-सी खेती है—न किसीसे लेना न देना, न कहीं जाना न आना। इतने बरसों में बनफशा बेगम बहुत मजबूर होकर एकाध बार ही

शरीफ हैं, दिल-दरिया हैं, इन्हें मुन्नी बेगम और मुसाहबीन बहकाए हुए हैं। महरी ने इस खान्दान की एक पुरानी कहानी सुनाई, कि नवाब बड़े बहादुर थे मगर इसी तरह वे भी बुरी सोहबत में पड़ गए थे। उधर बादशाह पर दुश्मन का धावा हुआ, इधर ये नशे में आठों पहर धुत्त। सब लोग समझा-समझा के हार गए मगर वहां सुनता कौन था—बल्कि नशे के आलम में नेक सलाहों का मज़ाक उड़ाया जाता। बेगम साहबा थीं इन्हीं दुल्लू नवाब की सात पुश्तों में कोई दादी-परदादी। मुगल की बेटी दबंग और बड़ी आनबान वाली थीं। एकाएक मर्दाने में चाबुक लेकर पहुंच गई, मुसाहबों, नाचने वालियों पे जो दनादन चाबुक बरसाने लगी तो भगदड़ पड़ी। नवाब साहब को अपने हाथों ज़िरह-बख्तर पहनाया तलवार दी और कहा कि सुर्खरू होकर लौटिए और फिर वही रागरंग कीजिए, मैं दखल न दूंगी। ऐसी दबंग थीं।

बनफशा बेगम को यह सुनकर मानो अपनी घुटन का इलाज मिल गया। एक नजूमी ने बताया था कि साल-भर में लड़का होगा और अगर अब न हुआ तो कभी न होगा। साल बीता जा रहा था और ओझा सयाने, मौलवी, पंडित कोई भी नवाब साहब को बेगम साहबा के पास न सके थे। लिहाजा बेगम साहबा ने इस खान्दान की पुरखिन से सबक लेकर डोली मंगवाई और साथ हण्टर के गुलजार बाग पहुंच गई। पुरखिन बेगम ने तो मुसाहबों की मरम्मत की थी मगर बनफशा बेगम ने अपनी सौत को हण्टरनाच नचाया। दुल्लू नवाब बचाने उठे तो उनपर भी चाबुक बरसे। मुन्नी बेगम बेहोश हो गई और बनफशा बेगम अपने शौहर को मार से रिझाकर अपने यहां ले आई और कमरे में ताला डालकर हर वक्त अपनी नजरों के सामने रखा।

इस तरह बनफशा बेगम के नूरेनजर दुन्नू मियां पैदा हुए।

बाद में मुन्नी बेगम और दुल्लू नवाब कभी मिल न सके। उधर वे मरीं, इधर ये मरे। इलाके लुट गए, बाकी कर्ज़ में गए। अब बनफशा बेगम हैं, उनके लख्तेजिगर दुन्नू नवाब हैं। कल्लो पीर अली हैं। दो आमों के बाग हैं, थोड़ी-सी खेती है—न किसीसे लेना न देना, न कहीं जाना न आना। इतने बरसों में बनफशा बेगम बहुत मजबूर होकर एकाध बार ही

ह—

वजह से बच्चा न बनाए रखतीं तो अब तक आप दो बच्चों के बाप हो जाते।"

सत्ताईस-अट्ठाईस बरस के बच्चे दुन्नू नवाब सुन-सुनकर कभी शरमाते, कभी खि:-खि:-खि: हंसते, कभी मुंह में उंगली देकर ताज्जुब में पड़ जाते। डाक्टर रिज़वी भी हंसकर बोले, "अरे बरखुरदार, ये सन् '५७ है—सन् उन्नीस सौ सत्तावन ईस्वी—समझे म्यां। इन्कलाब करो, ये चेहरे का जंगल साफ कराओ, शहर में जाकर रहो, गंजिग करो, सिनेमा देखो, महब्बत के गीत गाओ···"

दरवाज़े की आड़ से बनफशा बेगम रोने, गरजने और कोसने लगीं। बड़े डाक्टर ने साहबज़ादे से कहा, "अगर आपकी वालिदा माजिदा आपको ज़बर्दस्ती नन्हा-मुन्ना बनाएं तो मुझे खबर कीजिएगा, मैं उन्हें पागलखाने भिजवा दूंगा।"

इस बात पर तो कहर बरपा हो गया, मगर बनफशा बेगम फिर दुन्नू नवाब को अपने बस में न कर सकीं। उन्होंने आठों पहर का रोना-मचलना ठाना—सैर करेंगे, बाहर जाएंगे, दूल्हन लाएंगे।

अम्मीजान के लिए यह नई मुसीबत आई। एक बार पीर अली को साथ लेकर खुद सिनेमा दिखा लाईं मगर वह तो रोज़-रोज़ मचलने लगे। हर बार इस बुढ़ापे में बेगम साहबा बेचारी कहां तक सिनेमा देखें, कहां तक सैर करें। हर जगह वह जा भी नहीं सकतीं और लड़के को नज़र-ओट भी नहीं किया जाता। सबसे बड़ी मुसीबत तो दूल्हन थी। कोई रिश्ता ही न मिलता था। रिश्तेदार आला खान्दान के लोग दुन्नू मियां को अपना दामाद बनाने को राज़ी ही न होते थे, कहते थे कि भेड़िये की मांद में पला बच्चा है, न आदमियों की बोली समझे न चाल ढाल।

खैर, बमुश्किल तमाम एक गरीब मगर शरीफ की लड़की से रिश्ता तय किया। धूमधाम से बारात गई। बनफशा बेगम ने दिल खोल दिया। चांद-सी दूल्हन घर आ गई।

मगर बेचारी बनफशा बेगम की किस्मत में सुकून तो लिखा ही नहीं है। शादी के बाद हफ्ता-भर भी न बीता था कि दूल्हन के पेट में दर्द उठा। बेचारी तड़प-तड़प गई। फिर वही बड़े-बड़े डाक्टर आए, कहा कि

वजह से बच्चा न बनाए रखतीं तो अब तक आप दो बच्चों के बाप हो जाते।"

सत्ताईस-अट्ठाईस बरस के बच्चे दुन्नू नवाब सुन-सुनकर कभी शरमाते, कभी खि:-खि:-खि: हंसते, कभी मुंह में उंगली देकर ताज्जुब में पड़ जाते। डाक्टर रिज़वी भी हंसकर बोले, "अरे बरखुरदार, ये सन् '५७ है—सन् उन्नीस सौ सत्तावन ईस्वी—समझे म्यां। इन्कलाब करो, ये चेहरे का जंगल साफ कराओ, शहर में जाकर रहो, गंजिंग करो, सिनेमा देखो, मुहब्बत के गीत गाओ···"

दरवाज़े की आड़ से बनफशा बेगम रोने, गरजने और कोसने लगीं। बड़े डाक्टर ने साहबज़ादे से कहा, "अगर आपकी वालिदा माजिदा आपको ज़बर्दस्ती नन्हा-मुन्ना बनाएं तो मुझे खबर कीजिएगा, मैं उन्हें पागलखाने भिजवा दूंगा।"

इस बात पर तो कहर बरपा हो गया, मगर बनफशा बेगम फिर दुन्नू नवाब को अपने बस में न कर सकीं। उन्होंने आठों पहर का रोना-मचलना ठाना—सैर करेंगे, बाहर जाएंगे, दूल्हन लाएंगे।

अम्मीजान के लिए यह नई मुसीबत आई। एक बार पीर अली को साथ लेकर खुद सिनेमा दिखा लाईं मगर वह तो रोज-रोज मचलने लगे। हर बार इस बुढ़ापे में बेगम साहबा बेचारी कहां तक सिनेमा देखें, कहां तक सैर करें। हर जगह वह जा भी नहीं सकतीं और लड़के को नजर-ओट भी नहीं किया जाता। सबसे बड़ी मुसीबत तो दूल्हन थी। कोई रिश्ता ही न मिलता था। रिश्तेदार आला खान्दान के लोग दुन्नू मियां को अपना दामाद बनाने को राज़ी ही न होते थे, कहते थे कि भेड़िये की मांद में पला बच्चा है, न आदमियों की बोली समझे न चाल ढाल।

खैर, बमुश्किल तमाम एक गरीब मगर शरीफ की लड़की से रिश्ता तय किया। धूमधाम से बारात गई। बनफशा बेगम ने दिल खोल दिया। चांद-सी दूल्हन घर आ गई।

मगर बेचारी बनफशा बेगम की किस्मत में सुकून तो लिखा ही नहीं है। शादी के बाद हफ्ता-भर भी न बीता था कि दूल्हन के पेट में दर्द उठा। बेचारी तड़प-तड़प गई। फिर वही बड़े-बड़े डाक्टर आए, कहा कि

६

हाजी कुल्फीवाला

जागता है खुदा और सोता है आलम।
कि रिश्ते में क़िस्सा है निंदिया का बालम॥
ये क़िस्सा है सादा नहीं है कमाल॥
न लफ़्ज़ों में जादू बयां में जमाल॥
सुनी कह रहा हूं न देखा है हाल।
फिर भी न शक के उठाएं सवाल॥
कि क़िस्से पे लाज़िम है सच का असर।
यहीं झूठ भी आके बनता हुनर॥
छापे का किस्सागो अर्ज़ करता है कि—

एक है चौक नखास का इलाका और एक हैं हाजी मियां बुलाकी कुल्फीवाले। पिचासी-छियासी बरस की उमर है; दोहरा थका बदन है। पट्टेदार बाल, गलमुच्छे और आदाब अर्ज़ करते हुए उनके हाथ उठाने के अंदाज़ में वह लखनऊ मिल जाता है जो आम तौर पर अब खुद लखनऊ को ही देखना नसीब नहीं होता। किसी ज़माने में हाजी मियां बुलाकी की बरफ़ और निमिष खाने के लिए गोंडा, बहराइच, बलरामपुर, कानपुर और दूर-दूर से रईस शौकीन गर्मी-सर्दी के मौसमों में दो बार लखनऊ तशरीफ लाते थे। बुलाकी की बदौलत चार नाचने-गानेवालियों, उनके लगुए-भगुओं और चार किस्म के सौदागरों का भी भला हो जाता था। बुलाकी मियां ने हज़ारों रुपये पैदा किए। पक्का दो-मंज़िला मकान बनवाया। दो बार हज कर आए। पहले लड़के और फिर लड़की की शादी धूमधाम से की। न लड़की रही न लड़का; पंद्रह-बीस बरसों के आटे-पाटे में हाजी पिस गए।

लड़की का गम लड़के के दम पर सह लिया। लड़का भी ऐसा

हाजी कुल्फ़ीवाला

जागता है खुदा और सोता है आलम।
कि रिश्ते में क़िस्सा है निंदिया का बालम॥
ये क़िस्सा है सादा नहीं है कमाल॥
न लफ़्ज़ों में जादू बयां में जमाल॥
सुनी कह रहा हूं न देखा है हाल।
फिर भी न शक के उठाएं सवाल॥
कि क़िस्से पे लाज़िम है सच का असर।
यहीं झूठ भी आके बनता हुनर॥
छापे का किस्सागो अर्ज़ करता है कि—

एक है चौक नखास का इलाका और एक हैं हाजी मियां बुलाकी कुल्फ़ीवाले। पिचासी-छियासी बरस की उमर है; दोहरा धका बदन है। पट्टेदार बाल, गलमुच्छे और आदाब अर्ज़ करते हुए उनके हाथ उठाने के अंदाज़ में वह लखनऊ मिल जाता है जो आम तौर पर अब खुद लखनऊ को ही देखना नसीब नहीं होता। किसी ज़माने में हाजी मियां बुलाकी की बरफ और निमिष खाने के लिए गोंडा, बहराइच, बलरामपुर, कानपुर और दूर-दूर से रईस शौकीन गर्मी-सर्दी के मौसमों में दो बार लखनऊ तशरीफ लाते थे। बुलाकी की बदौलत चार नाचने-गानेवालियों, उनके लगुए-भगुओं और चार किस्म के सौदागरों का भी भला हो जाता था। बुलाकी मियां ने हज़ारों रुपये पैदा किए। पक्का दो-मंज़िला मकान बनवाया। दो बार हज कर आए। पहले लड़के और फिर लड़की की शादी धूमधाम से की। न लड़की रही न लड़का; पंद्रह-बीस बरसों के आटे-पाटे में हाजी पिस गए।

लड़की का गम लड़के के दम पर सह लिया। लड़का भी ऐसा

सके। परदे की ओट में दुलहिन भी रो पड़ी। उसकी सिसकी सुनकर हाजी बुलाकी तेज़ी से बाहर चले आए। गली से बाहर आकर नख़ास-बाज़ार में पहली आवाज़ लगी, 'कुल्फी मलाई की बरफ !' गला भर-भर आया।

दूसरी आवाज़ में ही बुलाकी मियां ने अपने-आपको संभाल लिया। वह इंसान ही क्या जो मुसीबत न झेल सके। घंटे के हिसाब से एक इक्का तय किया और उम्र-भर के बरते हुए बाजार को छोड़कर हज़रतगंज, जापलिंग रोड और पंचबंगलियों की तरफ चले। हिन्दुस्तान को आज़ादी बस मिलनेवाली ही थी। नया दौर शुरू हो चुका था। एक आला हाकिमे-ज़माना के वालिद बुज़ुर्गवार का दिया हुआ सार्टीफिकट भी उनके रजिस्टर में मौजूद था। उन्हींकी कोठी का नंबर पूछते-पूछते जा पहुंचे। इक्का कोठी से बाहर ही खड़ा करवाया और रजिस्टर लिए अंदर गए। अर्दली से पूछा तो मालूम हुआ कि साहब पीछे वाले बगीचे में फुरसत से बैठे हैं। अर्दली को दुआएं दीं और कहा कि ज़री ये खत हुज़ूर की ख़िदमत में पेश कर दो; मेरे बुढ़ापे पे तरस खाओ। अर्दली को रजिस्टर खोलकर दिया और खत पर हाथ रखकर बतला भी दिया। हाकिमे-ज़माना बाप की लिखावट बरसों बाद अचानक देखकर बहुत खुश हुए, रजिस्टर के दूसरे सार्टीफिकट पढ़ने लगे, फिर बुलाकी मियां को बुलवा लिया।

हाजी बुलाकी मियां महज़ खालिस माल से ही नहीं बल्कि अपनी बातों और अदब-कायदे से भी ग्राहकों को खुश करते हैं। हाकिमे-ज़माना, उनकी बेगम साहबा और दोनों जवान बेटियों के हाथ में तश्तरियां पहुंचीं नहीं कि हाजी बुलाकी ले उड़े : "कुल्फी में हुज़ूर दूध औटाने और शकर मिलाने में ही सिफ्त होती है। कुल्फी की तारीफ तो तब है जब कि यहां खोली जाए और बनारसी बाग में जाकर खाई जाए। इतनी देर में अगर कुल्फी गल जाए तो फिर हुज़ूर वह शौकीनों के खाने काबिल नहीं। और बात सरकार यहीं तक नहीं, कुल्फी जमाने के फेर में अगर इतनी बरफ डाल दी कि खानेवाले के दांत गले और ज़बान ठिठुरी तो फिर हुज़ूर सिफ्त क्या रही ! आजकल के कुल्फ़ी वाले लखनऊ के पुराने हुनर को नहीं

सके। परदे की ओट में दुलहिन भी रो पड़ी। उसकी सिसकी सुनकर हाजी बुलाकी तेज़ी से बाहर चले आए। गली से बाहर आकर नखास-बाजार में पहली आवाज़ लगी, 'कुल्फी मलाई की बरफ !' गला भर-भर आया।

दूसरी आवाज में ही बुलाकी मियां ने अपने-आपको संभाल लिया। वह इंसान ही क्या जो मुसीबत न झेल सके। घंटे के हिसाब से एक इक्का तय किया और उम्र-भर के बरते हुए बाजार को छोड़कर हजरतगंज, जापलिंग रोड और पंचबंगलियों की तरफ चले। हिन्दुस्तान को आजादी बस मिलनेवाली ही थी। नया दौर शुरू हो चुका था। एक आला हाकिमे-ज़माना के वालिद बुजुर्गवार का दिया हुआ सार्टीफिकट भी उनके रजिस्टर में मौजूद था। उन्हींकी कोठी का नंबर पूछते-पूछते जा पहुंचे। इक्का कोठी से बाहर ही खड़ा करवाया और रजिस्टर लिए अंदर गए। अर्दली से पूछा तो मालूम हुआ कि साहब पीछे वाले बगीचे में फुरसत से बैठे हैं। अर्दली को दुआएं दीं और कहा कि ज़री ये खत हुज़ूर की खिदमत में पेश कर दो; मेरे बुढ़ापे पे तरस खाओ। अर्दली को रजिस्टर खोलकर दिया और खत पर हाथ रखकर बतला भी दिया। हाकिमे-ज़माना बाप की लिखावट बरसों बाद अचानक देखकर बहुत खुश हुए, रजिस्टर के दूसरे सार्टीफिकट पढ़ने लगे, फिर बुलाकी मियां को बुलवा लिया।

हाजी बुलाकी मियां महज़ खालिस माल से ही नहीं बल्कि अपनी बातों और अदब-कायदे से भी ग्राहकों को खुश करते हैं। हाकिमे-ज़माना, उनकी बेगम साहबा और दोनों जवान बेटियों के हाथ में तश्तरियां पहुंचीं नहीं कि हाजी बुलाकी ले उड़े : "कुल्फी में हुज़ूर दूध औटाने और शकर मिलाने में ही सिफ्त होती है। कुल्फी की तारीफ तो तब है जब कि यहां खोली जाए और बनारसी बाग में जाकर खाई जाए। इतनी देर में अगर कुल्फी गल जाए तो फिर हुज़ूर वह शौकीनों के खाने काबिल नहीं। और बात सरकार यहीं तक नहीं, कुल्फी जमाने के फेर में अगर इतनी बरफ डाल दी कि खानेवाले के दांत गले और ज़बान ठिठुरी तो फिर हुज़ूर सिफ्त क्या रही ! आजकल के कुल्फ़ी वाले लखनऊ के पुराने हुनर को नहीं

धीरे-धीरे दो पोतों को हाकिमे-जमाना की बदौलत मुस्तकिल चपरासियों में भरती करवाया। मुहल्ले-पड़ोस और रिश्तेदारों के कई लड़कों को छोटे-मोटे काम दिलाए। बड़ी इज्जत बढ़ गई। खुदा का शुक्र है, बूढ़ी ज़िंदा है, बहू है, बड़े पोते की बहू है। अल्लाह के फज़लो-करम से उसके आगे भी दो बच्चे हैं। छोटे पोते की शादी भी पारसाल कर दी मगर वह लड़की बड़ी कल्लेदराज़ है। सुख-चैन के चांद में बस यही एक गहन लग गया है वरना हाजी बुलाकी अब अपना गम भूल चुके हैं।

एक दिन किसी वक्त की नामी नाचनेवाली मुश्तरीबाई का आदमी उन्हें बुलाने आया। हाजी दोपहर के वक्त उसके यहां गए। उन्होंने मुश्तरी को बच्ची से जवान और बूढ़ी होते देखा था। उसका ज़माना देखा था कि रईसों-नवाबों के पलक-पांवड़ों पर चलती थी। अब भी पुरानी लाखों की माया है मगर ज़माना अब तवायफों का नहीं रहा। लड़कियों को बी० ए०, एम० ए० पास कराया है मगर अब गाड़ी आगे नहीं चलती। दर-असल मुश्तरी चाहती है कि दोनों की कहीं शादियां कर दे। यही नामुमकिन लगता है। हारकर दोनों को आदाब-तहज़ीब सिखाई और थोड़ी-बहुत नाच और गाने की तालीम भी दिलवा दी है। कचोट लड़कियों के जी में भी है, मुश्तरी के मन में भी। आजकल सहारनपुर का एक रईस-ज़ादा दोनों लड़कियों का नया-नया दोस्त हुआ है। उसे शादी करने से एतराज़ नहीं क्योंकि उसकी मां एक योरोपियन नर्स थी, जिसे उसके वालिद ने मुसलमान बनाकर अपनी कानूनी बीवी बनाया था। वह लड़का जब लखनऊ आता है तो फलां-फलां अफसर के घर मेहमान होता है। उनके यहां हाजी की निमिष खा चुका है, हाजी को जानता है। मुश्तरी हाजी बुलाकी की बातों के कमाल को जानती है। बाप की तरह उनके पैर पकड़कर कहा, "उस लड़के को अपने शीशे में उतार लें हाजी साहब तो बड़ा सवाब होगा। मैं जानती हूं, आयंदा जमाने में ये ज़िदगी इन लड़कियों से न सधेगी। अब इस पेशे में इज्जत नहीं रही। एक से पार पाऊं तो दूसरी के हाथ पीले करने का रास्ता खुले।"

हाजी बुलाकी मान गए। दूसरे दिन शाम को मुश्तरी के यहां जा पहुंचे। बड़ी आवभगत हुई। सहारनपुरी रईसज़ादा वहां मौजूद था, दोनों

धीरे-धीरे दो पोतों को हाकिमे-ज़माना की बदौलत मुस्तकिल चपरासियों में भरती करवाया। मुहल्ले-पड़ोस और रिश्तेदारों के कई लड़कों को छोटे-मोटे काम दिलाए। बड़ी इज़्ज़त बढ़ गई। खुदा का शुक्र है, बूढ़ी ज़िंदा है, बहू है, बड़े पोते की बहू है। अल्लाह के फ़ज़लो-करम से उसके आगे भी दो बच्चे हैं। छोटे पोते की शादी भी पारसाल कर दी मगर वह लड़की बड़ी कल्लेदराज़ है। सुख-चैन के चांद में बस यही एक गहन लग गया है वरना हाजी बुलाकी अब अपना ग़म भूल चुके हैं।

एक दिन किसी वक्त की नामी नाचनेवाली मुश्तरीबाई का आदमी उन्हें बुलाने आया। हाजी दोपहर के वक्त उसके यहां गए। उन्होंने मुश्तरी को बच्ची से जवान और बूढ़ी होते देखा था। उसका ज़माना देखा था कि रईसों-नवाबों के पलक-पांवड़ों पर चलती थी। अब भी पुरानी लाखों की माया है मगर ज़माना अब तवायफ़ों का नहीं रहा। लड़कियों को बी० ए०, एम० ए० पास कराया है मगर अब गाड़ी आगे नहीं चलती। दर-असल मुश्तरी चाहती है कि दोनों की कहीं शादियां कर दे। यही नामुम-किन लगता है। हारकर दोनों को आदाब-तहज़ीब सिखाई और थोड़ी-बहुत नाच और गाने की तालीम भी दिलवा दी है। कचोट लड़कियों के जी में भी है, मुश्तरी के मन में भी। आजकल सहारनपुर का एक रईस-ज़ादा दोनों लड़कियों का नया-नया दोस्त हुआ है। उसे शादी करने से एतराज़ नहीं क्योंकि उसकी मां एक योरोपियन नर्स थी, जिसे उसके वालिद ने मुसलमान बनाकर अपनी कानूनी बीवी बनाया था। वह लड़का जब लखनऊ आता है तो फलां-फलां अफ़सर के घर मेहमान होता है। उनके यहां हाजी की निमिष खा चुका है, हाजी को जानता है। मुश्तरी हाजी बुलाकी की बातों के कमाल को जानती है। बाप की तरह उनके पैर पकड़कर कहा, "उस लड़के को अपने शीशे में उतार लें हाजी साहब तो बड़ा सवाब होगा। मैं जानती हूं, आयंदा ज़माने में ये ज़िंदगी इन लड़कियों से न सधेगी। अब इस पेशे में इज़्ज़त नहीं रही। एक से पार पाऊं तो दूसरी के हाथ पीले करने का रास्ता खुले।"

हाजी बुलाकी मान गए। दूसरे दिन शाम को मुश्तरी के यहां जा पहुंचे। बड़ी आवभगत हुई। सहारनपुरी रईसज़ादा वहां मौजूद था, दोनों

हुजूर समझदारी मांगती है। अब कुल्फियों को ही ले लीजिए—एक-एक ठंडा रेशा मुंह की गर्मी पाते ही पहले तो खिले और फिर धीरे-धीरे घुलता जाए। ज्यों-ज्यों घुले त्यों-त्यों मिठास बढ़ती जाए। जो खुशबू या जो मसाले डाले हों वे अपनी जगह पर बोलें।···यही मजा इश्क का भी है। सरकार का रुतवा आला है मगर उम्र में हुजूर मेरे बच्चों के बच्चे के बराबर हैं। मेरी बातें आज़मा देखिएगा।"

हुजूर पर हाजी की बातों का सुरूर गंठने लगा। हाजी बुलाकी कुल्फियां खिलाते चले। लड़कियों और मुश्तरी की तारीफ करते चले, "लड़कियां रतन हैं मगर खुदा के इंसाफ से जिस पेशे में जनम लिया है उसमें बेचारियों को बेकुसूर घुटना होगा। कहां तो ये पढ़ी-लिखी तहज़ीब-याफ्ता लड़कियां, और कहां आज के ज़माने का दोज़ख !···

"हुजूर, यह मुश्तरी बड़ी नेक लड़की है। इसने अपना ज़माना देखा है। मगर मैं इसके मुंह पर कहता हूं कि अभी तो लड़कियों का मुंह देखकर इस फिराक में है कि इनकी शादियां हो जाएं। मगर, खुदा मेरी इन बच्चियों को हर खतरे से बचाए, महज़ बात के तौर पर ही कह रहा हूं कि बाद में हारकर यही मुश्तरी लड़कियों से कहेगी कि पेशा करो, यारों को ठगो और अगर मेरे कहे मुताबिक तुम लोग नहीं करोगी तो घर से निकलो। अरे हुजूर, झूठ नहीं कहता, अपनी लड़कियों के हक में इन नायकाओं से बढ़कर कोई बुरा नहीं होता। रुपयों की लूट के पीछे दीवानी ये और कुछ भी नहीं सोचतीं। आपको एक किस्सा सुनाता हूं गरीब-परवर। एक नौजवान रईस थे। एक तवायफ से उनका दिल मिल गया। उसे निहाल कर दिया। मगर नायका का पेट इतने से ही न भरा। एक और बूढ़े भोंदू रईस को भी फंसा लिया। लड़की लाख कहे कि अम्मां मुझसे बेवफाई न कराओ मगर अम्मां झिड़क-झिड़क दें। कहें कि ऐसा सदा से होता आया है। खैर हुजूर, होते-करते एक दिन नौजवान रईस को भी पता चल गया। वह चार गुंडों को लेकर उसके कोठे पर चढ़ आया। तवायफ की नाक काटी, बूढ़े की तोंद में करौली घुपी। बड़ा वावेला, तोबा-तिल्ला मचा। खैर, किस्सा खत्म हुआ मगर बेचारी लड़की नाक कटने के बाद दीनो-दुनिया, किसी अरथ की न रही। बतलाइए, भला उसका क्या

हुज़ूर समझदारी मांगती है। अब कुल्फियों को ही ले लीजिए—एक-एक ठंडा रेशा मुंह की गर्मी पाते ही पहले तो खिले और फिर धीरे-धीरे घुलता जाए। ज्यों-ज्यों घुले त्यों-त्यों मिठास बढ़ती जाए। जो खुशबू या जो मसाले डाले हों वे अपनी जगह पर बोलें।...यही मज़ा इश्क का भी है। सरकार का रुतबा आला है मगर उम्र में हुज़ूर मेरे बच्चों के बच्चे के बराबर हैं। मेरी बातें आज़मा देखिएगा।"

हुज़ूर पर हाजी की बातों का सुरूर गंठने लगा। हाजी बुलाकी कुल्फियां खिलाते चले। लड़कियों और मुश्तरी की तारीफ करते चले, "लड़कियां रतन हैं मगर खुदा के इंसाफ से जिस पेशे में जनम लिया है उसमें बेचारियों को बेकुसूर घुटना होगा। कहां तो ये पढ़ी-लिखी तहज़ीब-याफ्ता लड़कियां, और कहां आज के ज़माने का दोज़ख!...

"हुज़ूर, यह मुश्तरी बड़ी नेक लड़की है। इसने अपना ज़माना देखा है। मगर मैं इसके मुंह पर कहता हूं कि अभी तो लड़कियों का मुंह देखकर इस फिराक में है कि इनकी शादियां हो जाएं। मगर, खुदा मेरी इन बच्चियों को हर खतरे से बचाए, महज बात के तौर पर ही कह रहा हूं कि बाद में हारकर यही मुश्तरी लड़कियों से कहेगी कि पेशा करो, यारों को ठगो और अगर मेरे कहे मुताबिक तुम लोग नहीं करोगी तो घर से निकलो। अरे हुज़ूर, झूठ नहीं कहता, अपनी लड़कियों के हक में इन नायकाओं से बढ़कर कोई बुरा नहीं होता। रुपयों की लूट के पीछे दीवानी ये और कुछ भी नहीं सोचतीं। आपको एक किस्सा सुनाता हूं गरीब-परवर। एक नौजवान रईस थे। एक तवायफ से उनका दिल मिल गया। उसे निहाल कर दिया। मगर नायका का पेट इतने से ही न भरा। एक और बूढ़े मोंदू रईस को भी फंसा लिया। लड़की लाख कहे कि अम्मां मुझसे बेवफाई न कराओ मगर अम्मां झिड़क-झिड़क दें। कहें कि ऐसा सदा से होता आया है। खैर हुज़ूर, होते-करते एक दिन नौजवान रईस को भी पता चल गया। वह चार गुंडों को लेकर उसके कोठे पर चढ़ आया। तवायफ की नाक काटी, बूढ़े की तोंद में करौली घुपी। बड़ा वावेला, तोबा-तिल्ला मचा। खैर, किस्सा खत्म हुआ मगर बेचारी लड़की नाक कटने के बाद दीनो-दुनिया, किसी अरथ की न रही। बतलाइए, भला उसका क्या

५

जुलाब की गोली

"कल तो जनाब वो हंगामा मच गया कि उफ ! उफ !! अजी बस पूछिए मत ! वह तो कहिए कि खुदा ने कुछ नजर-बंद से बचा ही लिया—मौके पर हम न थे—वरना तलवारों पर मूठें ही बचतीं या धड़ों पर सिर ही सलामतियां मनाते नजर आते।

" 'सुना साहब चौक में गुल खिला।' एक ने कहा, 'कोठा उलट गया।' दूसरे ने उसमें कुछ सुधार किया, कहने लगे, 'अजी नहीं भाईजान, उलटा नहीं, बस उलटकर रह गया।' तीसरे तशरीफ लाए, दिल पर हाथ रक्खा, जरा-सी एक सर्द आह खींची, कुछ आंखों में नमी थी, कुछ गले में गुबार उभरे थे, बोले, 'हाय ! छुन्नन कोठे से गिर पड़ी। बीच बाजार में कई सिरों पर गिरी। दिल था सो उछल के निकल पड़ा, आंखें जो फिरीं तो फिर मिलना नसीब न हुआ, धुरपद का खयाल गले में अटक के ही रह गया। उसके सच्चे आशिकों ने जो सुना तो इस वक्त खबर यह है कि अपने-अपने घरों में उनकी लाशें फांसी के फंदों में लटक रही हैं।'

" बी छुन्नन का नाम ! और हमारा नाम उसके आशिकों की लिस्ट में। अजी सुनना था कि दिल पे बन आई। अब लाख-लाख सर्द आहें निकालने की कोशिश कर रहे हैं, आंखों में सावन-भादों बसाना चाहते हैं, मगर जान है कि कम्बख्त निकलने को नहीं आती। इधर आशिकी के नाम पर बट्टा लगता है, और घर में फांसी लगाने लायक जगह नहीं। इरादा यह भी हुआ कि खबर लानेवाले साहब को ही हलाल करके रख दें। सरकार खुद ही हमारे लिए फांसी का इन्तजाम कर देगी। वह तो कहिए कि हजरत किस्मत के धनी निकले। हम पैदाइशी बेकार हैं, सब्जी बनती ही नहीं, घर में छुरी रक्खी ही किसलिए जाए ? और अब तो खुदा के फजल से चेहरे पर नूर भी है। पनामा ब्लेड क्या, उसकी एक किर्च भी

५

जुलाब की गोली

"कल तो जनाब वो हंगामा मच गया कि उफ ! उफ !! अजी बस पूछिए मत ! वह तो कहिए कि खुदा ने कुछ नज़र-बंद से बचा ही लिया—मौके पर हम न थे—वरना तलवारों पर मूठें ही बचतीं या धड़ों पर सिर ही सलामतियां मनाते नज़र आते।

" 'सुना साहब चौक में गुल खिला।' एक ने कहा, 'कोठा उलट गया।' दूसरे ने उसमें कुछ सुधार किया, कहने लगे, 'अजी नहीं भाईजान, उलटा नहीं, बस उलटकर रह गया।' तीसरे तशरीफ लाए, दिल पर हाथ रक्खा, ज़रा-सी एक सर्द आह खींची, कुछ आंखों में नमी थी, कुछ गले में गुबार उभरे थे, बोले, 'हाय ! छुन्नन कोठे से गिर पड़ी। बीच बाज़ार में कई सिरों पर गिरी। दिल था सो उछल के निकल पड़ा, आंखें जो फिरीं तो फिर मिलना नसीब न हुआ, धुरपद का खयाल गले में अटक के ही रह गया। उसके सच्चे आशिकों ने जो सुना तो इस वक्त खबर यह है कि अपने-अपने घरों में उनकी लाशें फांसी के फंदों में लटक रही हैं।'

" बी छुन्नन का नाम ! और हमारा नाम उसके आशिकों की लिस्ट में। अजी सुनना था कि दिल पे बन आई। अब लाख-लाख सर्द आहें निकालने की कोशिश कर रहे हैं, आंखों में सावन-भादों बसाना चाहते हैं, मगर जान है कि कम्बख्त निकलने को नहीं आती। इधर आशिकी के नाम पर बट्टा लगता है, और घर में फांसी लगाने लायक जगह नहीं। इरादा यह भी हुआ कि खबर लानेवाले साहब को ही हलाल करके रख दें। सरकार खुद ही हमारे लिए फांसी का इन्तज़ाम कर देगी। वह तो कहिए कि हज़रत किस्मत के धनी निकले। हम पैदाइशी बेकार हैं, सब्ज़ी बनती ही नहीं, घर में छुरी रक्खी ही किसलिए जाए ? और अब तो खुदा के फज़ल से चेहरे पर नूर भी है। पनामा ब्लेड क्या, उसकी एक किर्च भी

चिल्ले की रात फकत मजलिसी-रईसों के कीमती गर्म कपड़ों का ध्यान करके काट दी। बीच-बीच में छुन्नन के सुरीले गले की दाद जब दी जाती तो हम जी उठते। तबीयत इस तरह बाग-बाग हो उठती, कि हम गोया अपनी खास बीबी की ही तारीफ सुन रहे हों।

"तारों ने झपकी ली और महफिल उठी। रईस रुखसत हुए और हमारी आंखें बी छुन्नन के इन्तजार में बिछ गईं। चिड़ियों ने चहकना शुरू किया। नवाब छुन्नन को डोले तक खुद पहुंचाने तशरीफ लाए। हमने झुककर सलाम किया। नवाब समझे, हमने उनकी इज्जत बढ़ाई। उन्होंने जवाब दिया। बी छुन्नन ने तभी एक बार हमसे भी नजरें मिलाई थीं।

"वो दिन है और आज का रोज़—कलेजे में जो तीर धंसा तो अब निकलता ही नहीं। अब ये खबर जो सुनी तो क्या नाम है कि उस्ताद के कलाम का निचोड़, कि मौत तो किसी न किसी दिन आ ही मिलेगी मगर रात की नींद तो हमारे लिए छुन्नन हो गई!

"गम किसी तरह भी गलत ही न हो। इरादा किया, जाकर आखिरी बार की झांकी लें, मगर सुना कि लाश कोठे पर उठ गई। बात सुनने के लिए जो सिर उठाया था सो उठाए ही रहे। फिर एक बात दिमाग में आई तो खुद उठे। गिड़गिड़ाते हुए जाकर बेगम से कहा, 'एक चवन्नी दे दो।' बेगम खुदा जाने क्यों, उस दिन मुझपर मिहरबान थीं या क्या—बहरहाल बात-बात में चहकी पड़ती थीं! गमककर उठीं। पहले पान की दो बीड़ियां लगाकर खिलाईं; फिर कमर से बटुआ निकाल चार चेहरेशाही पकड़ा दिए।

"अजी जिंदगी में न कभी देखी न सुनी। ऐसी सखावत कि राजा करन भी मात। अब साहब गम को तो किया जेरे-पाकिट और चमक के पूछता हूं, 'बेगम, मुझे?'

"मुस्करा के बोलीं, 'हां!'

"अब हम हैं कि कलेजा थामे खड़े हैं और लक-लक बेगम के चेहरे पर आंखें चिपकी हैं।

"और कैसे अर्ज़ करूं कि अपने मुंह से कहते शर्म आती है। आप

चिल्ले की रात फकत मजलिसी-रईसों के कीमती गर्म कपड़ों का ध्यान करके काट दी। बीच-बीच में छुन्नन के सुरीले गले की दाद जब दी जाती तो हम जी उठते। तबीयत इस तरह बाग-बाग हो उठती, कि हम गोया अपनी खास बीबी की ही तारीफ सुन रहे हों।

"तारों ने झपकी ली और महफिल उठी। रईस रुखसत हुए और हमारी आंखें बी छुन्नन के इन्तज़ार में बिछ गईं। चिड़ियों ने चहकना शुरू किया। नवाब छुन्नन को डोले तक खुद पहुंचाने तशरीफ लाए। हमने झुककर सलाम किया। नवाब समझे, हमने उनकी इज्ज़त बढ़ाई। उन्होंने जवाब दिया। बी छुन्नन ने तभी एक बार हमसे भी नज़रें मिलाई थीं।

"वो दिन है और आज का रोज़—कलेजे में जो तीर धंसा तो अब निकलता ही नहीं। अब ये खबर जो सुनी तो क्या नाम है कि उस्ताद के कलाम का निचोड़, कि मौत तो किसी न किसी दिन आ ही मिलेगी मगर रात की नींद तो हमारे लिए छुन्नन हो गई!

"गम किसी तरह भी गलत ही न हो। इरादा किया, जाकर आखिरी बार की झांकी लें, मगर सुना कि लाश कोठे पर उठ गई। बात सुनने के लिए जो सिर उठाया था सो उठाए ही रहे। फिर एक बात दिमाग में आई तो खुद उठे। गिड़गिड़ाते हुए जाकर बेगम से कहा, 'एक चवन्नी दे दो।' बेगम खुदा जाने क्यों, उस दिन मुझपर मिहरबान थीं या क्या—बहरहाल बात-बात में चहकी पड़ती थीं! गमककर उठीं। पहले पान की दो बीड़ियां लगाकर खिलाईं; फिर कमर से बटुआ निकाल चार चेहरेशाही पकड़ा दिए।

"अजी ज़िंदगी में न कभी देखी न सुनी। ऐसी सखावत कि राजा करन भी मात। अब साहब गम को तो किया ज़ेरे-पाकिट और चमक के पूछता हूं, 'बेगम, मुझे?'

"मुस्करा के बोलीं, 'हां!'

"अब हम हैं कि कलेजा थामे खड़े हैं और लक-लक बेगम के चेहरे पर आंखें चिपकी हैं।

"और कैसे अर्ज़ करूं कि अपने मुंह से कहते शर्म आती है। आप

से कटती थीं। मेरे दिल पर चोट तो लगी, मगर चुप रहा।…"

पूरे दो घण्टे बाद मियां की मेल ट्रेन रुकी। यह कोई एक हफ्ते पहले की बात है। कम्पनी बाग में कोने की बेंच पर बैठा एक मजमून लिख रहा था। अचानक यह महीन-से मियां तशरीफ लाए। पहले कुछ तकल्लुफ किया। बेमौके आ टपकने की मुआफी मांगी। मगर मजबूरी ज़ाहिर की—दिमाग परीशन होने की वजह से वह भी सन्नाटे की जगह बैठकर ठंडे होना चाहते थे। बेंच के एक कोने में बैठने की इजाज़त मांगी। फिर किस्से शुरू किए और फिर धीरे से इस आशिक-बयानी पर उतर आए।

थोड़े ही में कह दूं, हज़रत मुझसे फिर इस कदर खुश हुए कि उसी वक्त अपने घर चलने के लिए मजबूर किया। कहने लगे, "अगर आप तशरीफ न ले चले तो मैं समझूंगा कि गरीबों का दुनिया में कोई नहीं।"

लिहाज़ा साहब, मैं गरीबों का सब कुछ बन उनके दौलतखाने पर गया। गली, मकान सब कुछ वाजिब ही वाजिब था। मगर हम थे कि कुछ तकल्लुफ में बैठे बातें कर रहे थे। एकाएक हज़रत दो मिनट की इजाज़त लेकर कहीं बाहर गए।

इसी बीच में जनाब, दरवाज़े के पीछे फिरोज़ाबाद की कारीगरी झुनझुना उठी। पहले एक आवाज़ ने होश फना किए, फिर एक गोरे-से हाथ ने निकलकर मेरे दिल की हरकत बन्द की। हाथ में एक खत था, जो मुझे पढ़कर सुनाने के लिए दिया गया। खत जो पढ़ने लगा तो दिमाग की बातें झनझना उठीं।

…धीरे-धीरे…क्या अर्ज़ करूं। बस, यही समझ लें कि अब मैं भी मियां की बेगम के रिश्तेदारों में हूं। हफ्ते-भर में तीन बार तो अपनी इस खालाज़ाद बहन से मिल आया हूं। रिश्तेदारी दिन-ब-दिन रंग पकड़ रही है जनाब!

से कटती थीं। मेरे दिल पर चोट तो लगी, मगर चुप रहा।···"

पूरे दो घण्टे बाद मियां की मेल ट्रेन रुकी। यह कोई एक हफ्ते पहले की बात है। कम्पनी बाग में कोने की बेंच पर बैठा एक मजमून लिख रहा था। अचानक यह महीन-से मियां तशरीफ लाए। पहले कुछ तकल्लुफ किया। बेमौके आ टपकने की मुआफी मांगी। मगर मजबूरी ज़ाहिर की—दिमाग परीशन होने की वजह से वह भी सन्नाटे की जगह बैठकर ठंडे होना चाहते थे। बेंच के एक कोने में बैठने की इजाज़त मांगी। फिर किस्से शुरू किए और फिर धीरे से इस आशिक-बयानी पर उतर आए।

थोड़े ही में कह दूं, हज़रत मुझसे फिर इस कदर खुश हुए कि उसी वक्त अपने घर चलने के लिए मजबूर किया। कहने लगे, "अगर आप तशरीफ न ले चले तो मैं समझूंगा कि गरीबों का दुनिया में कोई नहीं।"

लिहाजा साहब, मैं गरीबों का सब कुछ बन उनके दौलतखाने पर गया। गली, मकान सब कुछ वाजिब ही वाजिब था। मगर हम थे कि कुछ तकल्लुफ में बैठे बातें कर रहे थे। एकाएक हज़रत दो मिनट की इजाज़त लेकर कहीं बाहर गए।

इसी बीच में जनाब, दरवाज़े के पीछे फिरोज़ाबाद की कारीगरी झुनझुना उठी। पहले एक आवाज़ ने होश फना किए, फिर एक गोरे-से हाथ ने निकलकर मेरे दिल की हरकत बन्द की। हाथ में एक खत था, जो मुझे पढ़कर सुनाने के लिए दिया गया। खत जो पढ़ने लगा तो दिमाग की बातें झनझना उठीं।

···धीरे-धीरे···क्या अर्ज़ करूं। बस, यही समझ लें कि अब मैं भी मियां की बेगम के रिश्तेदारों में हूं। हफ्ते-भर में तीन बार तो अपनी इस खालाज़ाद बहन से मिल आया हूं। रिश्तेदारी दिन-ब-दिन रंग पकड़ रही है जनाब !

आजकल सैकड़ों कर्मचारियों के बीवी-बच्चों का पेट भरते हैं, बल्कि मुनियां उनके गले में भी गेंद का हार बनकर इठला रही है, जिनके दिल के बुतकदे में हर वक्त शहनाई बजा करती है। यानी यह कि हमारे दोस्त सरूपचन्द भी अक्सर वहां पर अपना सेंट से बसा हुआ रेशमी रूमाल गिरा आते हैं।

शुरुआत यों ही, रफ्ता-रफ्ता, हुई थी। मुनियां अपनी साड़ी का पल्ला कंधे पर डाले हुए ज़रा अदा से जा रही थी। सरूपचन्द उसकी इस मस्तानी चाल पर मरकर रह गए, फिर ज़रा लपककर उसके आगे से घूरते हुए निकले। सीने पर हाथ रखा, गर्दन लटकाई, एक ठंडी सांस निकल बड़ी और बस खेल खत्म। मुनियां न तो मुस्कराई, न ठुमकी। हां, उसने इन्हें देख-भर लिया, और वह भी लापरवाही के साथ।

दूसरे दिन सरूपचन्द उस गली से दो-तीन बार गुज़रे। एक बार चिकन का चुन्नटदार कुरता पहनकर, एक बार शेरवानी और चूड़ीदार पायजामे में, और तीसरी बार पतलून की शिकन ठीक करते हुए।

तीसरे दिन, ठीक बारह बजे, जब मुनियां अपनी धोती सुखा रही थी, सरूपचन्द ने उससे पूछा, "अरे भाई, आलू क्या भाव दिए ?"

मुनियां ने इनकी तरफ देखकर कहा, "चार पैसे सेर।"

"अमां गजब करती हो तुम तो। टके सेर तो मंडी में बिकते हैं।"

"तो ले लो न जाके मंडी में !"

सरूपचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "मंडी में जाएं तो तुम हमें गालियां न सुनाओगी ?"

"हमें क्या पड़ी बाबू, जो तुम्हें गालियां सुनाएं ! यह तो सौदा है, जहां पटे खरीद लो। हम तो चार पैसे सेर बेचते हैं।"

धोती सुखाते हुए मुनियां की करधनी में लटका हुआ गुच्छा बोला, 'झन्न।'

सरूपचन्द की दिल की सारंगी का तार टूट गया। ठंडी सांस ले बोले, "अच्छा भाई, तुम मालिक हो, चाहे जो दाम ले लो।" कहकर सरूपचन्द ने अपना रेशमी रूमाल उसकी डलिया पर फैला दिया।

तराज़ू पर आलू तौलते हुए मुनियां ने कहा, "बाबू, रूमाल तो बड़ा

आजकल सैकड़ों कर्मचारियों के बीवी-बच्चों का पेट भरते हैं, बल्कि मुनियां उनके गले में भी गेंद का हार बनकर इठला रही है, जिनके दिल के बुतकदे में हर वक्त शहनाई बजा करती है। यानी यह कि हमारे दोस्त सरूपचन्द भी अक्सर वहां पर अपना सेंट से बसा हुआ रेशमी रूमाल गिरा आते हैं।

शुरुआत यों ही, रफ्ता-रफ्ता, हुई थी। मुनियां अपनी साड़ी का पल्ला कंधे पर डाले हुए ज़रा अदा से जा रही थी। सरूपचन्द उसकी इस मस्तानी चाल पर मरकर रह गए, फिर ज़रा लपककर उसके आगे से घूरते हुए निकले। सीने पर हाथ रखा, गर्दन लटकाई, एक ठंडी सांस निकल बड़ी और बस खेल खत्म। मुनियां न तो मुस्कराई, न ठुमकी। हां, उसने इन्हें देख-भर लिया, और वह भी लापरवाही के साथ।

दूसरे दिन सरूपचन्द उस गली से दो-तीन बार गुज़रे। एक बार चिकन का चुन्नटदार कुरता पहनकर, एक बार शेरवानी और चूड़ीदार पायजामे में, और तीसरी बार पतलून की शिकन ठीक करते हुए।

तीसरे दिन, ठीक बारह बजे, जब मुनियां अपनी धोती सुखा रही थी, सरूपचन्द ने उससे पूछा, "अरे भाई, आलू क्या भाव दिए ?"

मुनियां ने इनकी तरफ देखकर कहा, "चार पैसे सेर।"

"अमां गजब करती हो तुम तो। टके सेर तो मंडी में बिकते हैं।"

"तो ले लो न जाके मंडी में !"

सरूपचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "मंडी में जाएं तो तुम हमें गालियां न सुनाओगी ?"

"हमें क्या पड़ी बाबू, जो तुम्हें गालियां सुनाएं ! यह तो सौदा है, जहां पटे खरीद लो। हम तो चार पैसे सेर बेचते हैं।"

धोती सुखाते हुए मुनियां की करधनी में लटका हुआ गुच्छा बोला, 'झन्न।'

सरूपचन्द की दिल की सारंगी का तार टूट गया। ठंडी सांस ले बोले, "अच्छा भाई, तुम मालिक हो, चाहे जो दाम ले लो।" कहकर सरूपचन्द ने अपना रेशमी रूमाल उसकी डलिया पर फैला दिया।

तराज़ू पर आलू तौलते हुए मुनियां ने कहा, "बाबू, रूमाल तो बड़ा

सरूपचन्द बस हकलाकर रह गए।

"कैसे तकलीफ की ?"

"अरे बड़ी दूर से चला आ रहा हूं। बड़ी प्यास लगी है। ज़रा पानी तो पिला दो मेरी रानी।"

"देखो बाबू, ज़रा इतना आगे बढ़ो कि निभ जाए। पास ही तो पौसाल है। वहां पानी क्यों नहीं पी लिया ?"

"भई पौसाल में हमसे नहीं पिया जाता। वो ब्राह्मन साला बांस के नले से पानी पिलाता है।"

मुनियां पानी लाने चली गई और लुटिया उनके सामने बढ़ाते हुए कहा, "तो यहां लुटिया में पीने के लिए चले आए। अच्छा लो।"

पानी पीकर सरूपचन्द ने जेब से रूमाल निकालते हुए कहा,"मुनियां, जेब बड़ी भारी हो रही है। ये पांच रुपये रख लो। फिर ले लूंगा।"

मुनियां कुछ बोली नहीं, चुपचाप हाथ बढ़ाकर रुपये ले लिए।

"एक पान खिला दो, मेरी रानी।"

मुनियां चुपचाप खड़ी रही। पीछे कोठरी में कोई कराहा। सरूपचन्द ने हक्का-बक्का होकर पूछा, "कौन है ?"

"अच्छा-अच्छा, घबराओ मत। शाम को दवा ले आऊंगा। एक पान खिला दो।"

मुनियां पान लगाने बैठ गई।

बुढ़िया ने आवाज़ दी, "मुनियां, को आय ?"

"डाक्टर साहब," मुनियां ने पान लगाते हुए जवाब दिया। सरूपचन्द खुश हो गए।

"हमरी दवा अब न होई। बेफज़ूल पैसा-टका खर्चा कर्यो तो खबरदार।"

"अरे अम्मां, ई सरकारी डाक्टर साहब हैं, पैसा न लेहैं।" कनखियों से मुनियां ने सरूपचन्द की ओर देखा। सरूपचन्द को इतमीनान हो गया कि मुनियां अब उनकी हो गई। लपक के उसके पास जा बैठे और उसकी पीठ पर हाथ रख दिया।

पान पर चूना लगाते हुए मुनियां ने अपने दोनों कंधे ज़ोर से हिला-

सरूपचन्द बस हकलाकर रह गए।

"कैसे तकलीफ की ?"

"अरे बड़ी दूर से चला आ रहा हूं। बड़ी प्यास लगी है। ज़रा पानी तो पिला दो मेरी रानी।"

"देखो बाबू, ज़रा इतना आगे बढ़ो कि निभ जाए। पास ही तो पौसाल है। वहां पानी क्यों नहीं पी लिया ?"

"भई पौसाल में हमसे नहीं पिया जाता। वो ब्राह्मन साला बांस के नले से पानी पिलाता है।"

मुनियां पानी लाने चली गई और लुटिया उनके सामने बढ़ाते हुए कहा, "तो यहां लुटिया में पीने के लिए चले आए। अच्छा लो।"

पानी पीकर सरूपचन्द ने जेब से रूमाल निकालते हुए कहा, "मुनियां, जेब बड़ी भारी हो रही है। ये पांच रुपये रख लो। फिर ले लूंगा।"

मुनियां कुछ बोली नहीं, चुपचाप हाथ बढ़ाकर रुपये ले लिए।

"एक पान खिला दो, मेरी रानी।"

मुनियां चुपचाप खड़ी रही। पीछे कोठरी में कोई कराहा। सरूपचन्द ने हक्का-बक्का होकर पूछा, "कौन है ?"

"अच्छा-अच्छा, घबराओ मत। शाम को दवा ले आऊंगा। एक पान खिला दो।"

मुनियां पान लगाने बैठ गई।

बुढ़िया ने आवाज़ दी, "मुनियां, को आय ?"

"डाक्टर साहब," मुनियां ने पान लगाते हुए जवाब दिया। सरूपचन्द खुश हो गए।

"हमरी दवा अब न होई। बेफजूल पैसा-टका खर्चा कर्‌यो तो खबरदार।"

"अरे अम्मां, ई सरकारी डाक्टर साहब हैं, पैसा न लेहैं।" कनखियों से मुनियां ने सरूपचन्द की ओर देखा। सरूपचन्द को इतमीनान हो गया कि मुनियां अब उनकी हो गई। लपक के उसके पास जा बैठे और उसकी पीठ पर हाथ रख दिया।

पान पर चूना लगाते हुए मुनियां ने अपने दोनों कंधे ज़ोर से हिला-

।

सरूपचन्द बेसाख्ता हंस पड़े, "भई, यह भी खूब रही।"

सरूपचन्द ने फिर हंसी रोककर पूछा, "क्या बात है···यही कि भाभी

व के मिज़ाज मुबारक···"

बात काटकर सरूपचन्द फिर हंस पड़े। बोले, "भई इस मिज़ाज की

एक ही रही। कल से दस्त आ रहे हैं।" यह कहकर के वह फिर

ने लगे। हमने समझ लिया कि आज भांग ने उनके ऊपर अपना पूरा-

ा अधिकार स्थापित कर लिया है।

शंकर ने पूछा, "क्यों जी, किसे दस्त आ रहे हैं···भाभीजी को ?"

"अमां यार, सब मज़ा किरकिरा कर दिया। बुढ़िया मरनेवाली

, उसे दस्त आ रहे हैं। यह देखो, उसकी भी दवा लिए जा रहा हूं।"

भांग के नशे में लाला सरूपचन्द अक्सर शेर कहने लगते हैं, और

उनका दावा है कि उनका कहा हुआ शेर एकदम नायाब होता है। एक-दो

मिनट तक मन ही मन कुछ गुनगुनाने के बाद सरूपचन्द खुद ही फड़क

उठे, अहा भई, क्या लाजवाब मिसरा कहा है। मुलाहज़ा हो :

"उनकी फुरकत में हम हुए बेजार,
न रोते बने न हंसते बने।"

चारों तरफ से दाद दी जाने लगी, सरूपचन्द फिर गुनगुनाने लगे,

"न न ना···ना···न ना ना ना न ना···

"हम तो आशिक हैं परीजादों के,
न जाते बने है न आते बने है।"

"अहा भई, वाह ! बस, गज़ब कर दिया उस्ताद। इस वक्त अगर

मिर्ज़ा ग़ालिब भी सामने आ जाएं तो तुम्हें अपना उस्ताद मान लेंगे। बस,

यही सब बातें तो हैं ही, जिनकी वजह से खटकिन भाभी इन्हें मानती हैं,

वरना लाला बनारसीदास क्या···?"

सरूपचन्द चमक उठे। कहा, "बस उस खवीस का नाम ही हमारे

सामने न लेना। साला समझता है कि मुनियां उसपर जान दे रही है।

किसी दिन अगर मौका लग गया तो साले को कच्चा ही चबा जाऊंगा।

बुड्ढा बन्दर कहीं का।"

किया।

सरूपचन्द वेसाख्ता हंस पड़े, "भई, यह भी खूब रही।"

सरूपचन्द ने फिर हंसी रोककर पूछा, "क्या वात है···यही कि भाभी साहव के मिज़ाज मुवारक···"

वात काटकर सरूपचन्द फिर हंस पड़े। वोले, "भई इस मिज़ाज की भी एक ही रही। कल से दस्त ग्रा रहे हैं।" यह कहकर के वह फिर हंसने लगे। हमने समझ लिया कि ग्राज भांग ने उनके ऊपर ग्रपना पूरा-पूरा ग्रधिकार स्थापित कर लिया है।

शंकर ने पूछा, "क्यों जी, किसे दस्त ग्रा रहे हैं···भाभीजी को ?"

"ग्रमां यार, सव मज़ा किरकिरा कर दिया। वुढ़िया मरनेवाली है, उसे दस्त ग्रा रहे हैं। यह देखो, उसकी भी दवा लिए जा रहा हूं।"

भांग के नशे में लाला सरूपचन्द ग्रक्सर शेर कहने लगते हैं, ग्रौर उनका दावा है कि उनका कहा हुग्रा शेर एकदम नायाव होता है। एक-दो मिनट तक मन ही मन कुछ गुनगुनाने के वाद सरूपचन्द खुद ही फड़क उठे, ग्रहा भई, क्या लाजवाव मिसरा कहा है। मुलाहज़ा हो :

"उनकी फुरकत में हम हुए वेजार,
न रोते वने न हंसते वने।"

चारों तरफ से दाद दी जाने लगी, सरूपचन्द फिर गुनगुनाने लगे, "न न ना···ना···न ना ना ना न ना···

"हम तो ग्राशिक हैं परीजादों के,
न जाते वने है न ग्राते वने है।"

"ग्रहा भई, वाह ! वस, गज़व कर दिया उस्ताद। इस वक्त ग्रगर मिर्ज़ा ग़ालिव भी सामने ग्रा जाएं तो तुम्हें ग्रपना उस्ताद मान लेंगे। वस यही सव वातें तो हैं ही, जिनकी वजह से खटकिन भाभी इन्हें मानती हैं वरना लाला वनारसीदास क्या···?"

सरूपचन्द चमक उठे। कहा, "वस उस खवीस का नाम ही हमा सामने न लेना। साला समझता है कि मुनियां उसपर जान दे रही है किसी दिन ग्रगर मौका लग गया तो साले को कच्चा ही चवा जाऊंग वुड्ढा वन्दर कहीं का।"

लाकर दी, जिससे खटकिन भाभी की अम्मां को फायदा हुआ।

खबर है कि सरूपचन्द ने लाला बनारसीदास को चौक के चौराहे पर भंगी के हाथों पचास जूते लगवाकर हुक्के का पानी पिलाने का सरे-आम एलान किया है।

और यह भी सुना है कि खटकिन भाभी···लेकिन जाने दीजिए, उनके बारे में हम अब कुछ भी नहीं कहना चाहते, क्योंकि वह अब रिश्ते में हमारी दादी होती हैं

लाकर दी, जिससे खटकिन भाभी की अम्मां को फायदा हुआ।

खबर है कि सरूपचन्द ने लाला बनारसीदास को चौक के चौराहे पर भंगी के हाथों पचास जूते लगवाकर हुक्के का पानी पिलाने का सरे-आम एलान किया है।

और यह भी सुना है कि खटकिन भाभी···लेकिन जाने दीजिए, उनके बारे में हम अब कुछ भी नहीं कहना चाहते, क्योंकि वह अब रिश्ते में हमारी दादी होती हैं

पर गश चले आ रहे हैं, और बादशाह सलामत, खुदा उन्हें जन्नत बख्शे, परमेशुर करे वह जहां कहीं भी हों, दूधों नहाएं, पूतों फलें, खुद मेरी यह हालत देखकर ज़ार-ज़ार रो रहे थे। अब अंगरेज़ लोग भी हैरत में कि आखिर यह कौन शख्स है, जिसकी बीमारी से खुद बादशाह सलामत तक को इतना सख्त सदमा पहुंच रहा है। खैर साहब, रामराम करके पूरे चार घंटे में मुझे ज़रा-सा होश आया। जो आंखें खोल के देखता हूं तो बड़े-बड़े लाट और कलक्टर और डिप्टी कमिश्नर मेरे आसपास खड़े हुए हैं। मुझे होश में आया देखकर एक अंगरेज़ ने कहा कि जहांपनाह ने खुद हुज़ूर के सिरहाने खड़े होकर वज़ीफा पढ़ा था, और इस वक्त आरामगाह में तशरीफ रक्खे हुए ज़ार-ज़ार रो रहे हैं।

"आप यकीन मानें साहब, कि ऐसा गरीबपरवर, दरियादिल और कोई हुआ ही नहीं। खुदा उन्हें जन्नत बख्शे, वल्ला, एक ही दम पाया था हुज़ूर नवाब साहब ने भी कि बस क्या बयान करूं कि अहा—हा—हा!

"खैर जनाब, जो मुझे यह पता चलता है तो बस कहां की बीमारी और कहां का गम—भागा हुआ हज़रत की आरामगाह की तरफ गया; जाकर तसल्ली दी कि हुज़ूर, आप यह क्या कर रहे हैं? एक नाचीज़ के लिए हुज़ूर अपने दिल को रंज न पहुंचाए। बादशाह सलामत एकदम उछलकर मुझे गले से लगाते हुए बोले कि भाई बख्तावर, मैं तुम्हें छोड़-कर नहीं रह सकता। मैंने उन्हें दिलासा देते हुए अर्ज़ किया कि हुज़ूर, अब इस गुलाम को आज़ादी बख्शिए। कहां तो जहांपनाह के ज़ेर-साये परवरिश पाता रहा और अब इन फरंगियों की सल्तनत में जाकर बसूं? मेरी जान बख्शी जाए, इस खाकसार ने आज तक कभी हुक्म-उदूली करने की गुस्ताखी नहीं की। मुझे जहांपनाह इजाज़त दें कि मैं यहीं रहकर आलीजाह की तरफ से इन फरंगियों से बदला लूं।...तो हज़रत, आप यकीन मानें कि यह खाकसार पेशावर से लेकर मदरास तक घूम आया; और यहां तक कि जब मदरास जा रहा था, तो कलकत्ता स्टेशन रास्ते में पड़ा, लेकिन मैं उतरा नहीं।"

गर्ज़ कि इन तमाम बातों के कहने का मकसद महज़ इतना ही है कि

पर गश चले आ रहे हैं, और बादशाह सलामत, खुदा उन्हें जन्नत बख्शे, परमेशुर करे वह जहां कहीं भी हों, दूधों नहाएं, पूतों फलें, खुद मेरी यह हालत देखकर ज़ार-ज़ार रो रहे थे। अब अंगरेज़ लोग भी हैरत में कि आखिर यह कौन शख्स है, जिसकी बीमारी से खुद बादशाह सलामत तक को इतना सख्त सदमा पहुंच रहा है। खैर साहब, रामराम करके पूरे चार घंटे में मुझे ज़रा-सा होश आया। जो आंखें खोल के देखता हूं तो बड़े-बड़े लाट और कलक्टर और डिप्टी कमिश्नर मेरे आसपास खड़े हुए हैं। मुझे होश में आया देखकर एक अंगरेज़ ने कहा कि जहांपनाह ने खुद हुज़ूर के सिरहाने खड़े होकर वज़ीफा पढ़ा था, और इस वक्त आरामगाह में तशरीफ रक्खे हुए ज़ार-ज़ार रो रहे हैं।

"आप यकीन मानें साहब, कि ऐसा गरीबपरवर, दरियादिल और कोई हुआ ही नहीं। खुदा उन्हें जन्नत बख्शे, वल्ला, एक ही दम पाया था हुज़ूर नवाब साहब ने भी कि बस क्या बयान करूं कि अहा—हा—हा !

"खैर जनाब, जो मुझे यह पता चलता है तो बस कहां की बीमारी और कहां का गम—भागा हुआ हज़रत की आरामगाह की तरफ गया; जाकर तसल्ली दी कि हुज़ूर, आप यह क्या कर रहे हैं ? एक नाचीज़ के लिए हुज़ूर अपने दिल को रंज न पहुंचाए। बादशाह सलामत एकदम उछलकर मुझे गले से लगाते हुए बोले कि भाई बख्तावर, मैं तुम्हें छोड़कर नहीं रह सकता। मैंने उन्हें दिलासा देते हुए अर्ज़ किया कि हुज़ूर, अब इस गुलाम को आज़ादी बख्शिए। कहां तो जहांपनाह के ज़ेर-साये परवरिश पाता रहा और अब इन फरंगियों की सल्तनत में जाकर बसूं ? मेरी जान बख्शी जाए, इस खाकसार ने आज तक कभी हुक्म-उदूली करने की गुस्ताखी नहीं की। मुझे जहांपनाह इजाज़त दें कि मैं यहीं रहकर आलीजाह की तरफ से इन फरंगियों से बदला लूं।···तो हज़रत, आप यकीन मानें कि यह खाकसार पेशावर से लेकर मदरास तक घूम आया; और यहां तक कि जब मदरास जा रहा था, तो कलकत्ता स्टेशन रास्ते में पड़ा, लेकिन मैं उतरा नहीं।"

गर्ज़ कि इन तमाम बातों के कहने का मकसद महज़ इतना ही है कि

उनकी एक-एक गोली से सौ-सौ अंगरेज़ वफ़ात पा रहे हैं। एकाएक एक अंगरेज़ सार्जेंट की गोली दनदनाती हुई इनकी तरफ़ आई और यह लग था कि वह इनकी खोपड़ी के ठीक बीचोबीच एक आर-पार का सूराख़ कर देती कि ऐन मौक़े पर मुंशीजी के इश्क़ में आगभरी हो जानेवाली इन हसीनों के बदन में ख़ुदा जाने कहाँ से इतनी ताक़त फट पड़ी कि जो सामने गिरकर इनका हाथ पकड़कर घसीटा तो बस धम से घोड़े के नीचे ही दिखाई पड़े। मुंशीजी फ़रमाते हैं कि उस अंगरेज़ सार्जेंट ने ख़ास इन्हींको ख़त्म करने के लिए ऐसी ज़बरदस्त गोली छोड़ी थी कि आगे जाकर उसने एक पीपल के पेड़ को भूनकर रख दिया। मगर इनके गिरने का असर इनकी फ़ौज पर बहुत बुरा पड़ा। उन लोगों के हौसले पस्त हो गए; और उन्होंने समझा कि जनाब मुंशीजी साहब उस अंगरेज़ सार्जेण्ट की गोली खाकर इस जहान-फ़ानी से कूच कर गए। फिर क्या था, इनकी फ़ौज में इस तरह भगदड़ पड़ी कि बस क्या अर्ज़ किया जाए। सिपाही लोग उस अंगरेज़ सार्जेण्ट को कोसते और जनाब मुंशीजी साहब मरहूम की याद में रोते हुए वापस लौटने लगे। अब यह हरएक सिपाही को पकड़-पकड़कर समझा रहे हैं कि भाई मैं मरा नहीं ज़िन्दा हूं, मगर उन्हें यक़ीन ही नहीं आता।

२

रोज़ाना अख़बार में ख़बरें छप रही हैं कि महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू वग़ैरह-वग़ैरह गिरफ़्तार हो रहे हैं। जगह-ब-जगह हड़तालें हो रही हैं, धरने दिए जा रहे हैं। लाठियां और बन्दूकें चल रही हैं। जनाब मुंशीजी साहब एक दिन मुहल्ले में रहनेवाले कांग्रेसी वालंटियरों से बोले, "यह क्या तुम लोग ग़लत रास्ते पर जा रहे हो? वल्ला, अगर कहीं मैं महात्मा गांधी की जगह पर होता तो चुटकी बजाते यों सौराज दिलाता, यों! नवाब वाजिदअली शाह साहब के ज़माने में भी लखनऊ वालों ने यह चाहा कि उन्हें आम सड़कों पर शराब पीने का सौराज मिल जाए। और साहब, यह लोग आए हमारे पास'। हमने कहा कि यह कौन बड़ी बात है, अभी चलो। बस पहुंच गए नवाब साहब के दरबार

उनकी एक-एक गोली से सौ-सौ अंगरेज धराशायी हो रहे हैं। एकाएक एक अंगरेज सार्जेंट की गोली सनसनाती हुई इनकी तरफ़ आई और यह तय था कि वह इनकी खोपड़ी के ठीक बीचोबीच एक आर-पार का सूराख कर देती कि ऐन मौक़े पर मुंशीजी के इश्क़ में बावरी हो जानेवाली इन हसीनों के बदन में खुदा जाने कहां से इतनी ताक़त फट पड़ी कि जो सबने मिलकर इनका हाथ पकड़कर घसीटा तो बस पल में घोड़े के नीचे ही दिखाई पड़े। मुंशीजी फ़रमाते हैं कि उस अंगरेज सार्जेंट ने ख़ास इन्हींको ख़त्म करने के लिए ऐसी ज़बरदस्त गोली छोड़ी थी कि आगे जाकर उसने एक पीपल के पेड़ को भूनकर रख दिया। मगर इनके गिरने का असर इनकी फ़ौज पर बहुत बुरा पड़ा। उन लोगों के हौसले पस्त हो गए; और उन्होंने समझा कि जनाब मुंशीजी साहब उस अंगरेज सार्जेण्ट की गोली खाकर इस जहान-फ़ानी से कूच कर गए। फिर क्या था, इनकी फ़ौज में इस तरह भगदड़ पड़ी कि बस क्या अर्ज़ किया जाए। सिपाही लोग उस अंगरेज सार्जेण्ट को कोसते और जनाब मुंशीजी साहब मरहूम की याद में रोते हुए वापस लौटने लगे। अब यह हरएक सिपाही को पकड़-पकड़कर समझा रहे हैं कि भाई मैं मरा नहीं ज़िन्दा हूं, मगर उन्हें यक़ीन ही नहीं आता।

२

रोज़ाना अख़बार में ख़बरें छप रही हैं कि महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू वग़ैरह-वग़ैरह गिरफ़्तार हो रहे हैं। जगह-ब-जगह हड़तालें हो रही हैं, धरने दिए जा रहे हैं। लाठियां और बन्दूकें चल रही हैं। जनाब मुंशीजी साहब एक दिन मुहल्ले में रहनेवाले कांग्रेसी वालंटियरों से बोले, "यह क्या तुम लोग ग़लत रास्ते पर जा रहे हो ? वल्ला, अगर कहीं मैं महात्मा गांधी की जगह पर होता तो चुटकी बजाते यों स्वराज दिलाता, यों ! नवाब वाजिदअली शाह साहब के ज़माने में भी लखनऊ वालों ने यह चाहा कि उन्हें आम सड़कों पर शराब पीने का स्वराज मिल जाए। खैर साहब, वह लोग आए हमारे पास'। हमने कहा कि यह कौन बड़ी बात है, अभी चलो। बस पहुंच गए नवाब साहब के दरबार

हम फिदाए ... तरफ मुड़कर वालंटियर से कहा, "इन्हें बता दो कि हम कौन हैं ?"

पुलिस के इन अफसर साहब ने मुस्कराकर इनका हाथ झंकझोरते फरमाया, "अजी इधर आइए साहब। हमें मालूम है कि आप कौन ... वह देखिए, हुजूर लाट साहब ने आपकी खातिर के लिए एक मोटर ... भेज दी है।"

लारी पर बैठते वक्त भी जनाब मुंशीजी को इस बात का गुमान था कि वह हवालात लिए जा रहे हैं। दूसरे वालंटियरों ने भी आपको यही यकीन दिलाया कि लाट साहब ने आपकी बड़ी इज्जत की है।

मोटर लॉरी जब कोतवाली में पहुंची और सिपाही इन्हें हवालात की तरफ ले जाने लगे तब तो आप बहुत घबराए, लगे रो-रोकर दारोगा जी के पैर पकड़ने। रोके फरमाते हैं, "ऐ हुजूर, मैं तो सरकार का पुराना खैरख्वाह हूं।"

दारोगा साहब मुस्कराकर बोले, "अजी वाह, कैसी बात करते हैं आप ? आप तो नवाब वाजिदअली शाह साहब के खास दाहिने हाथ थे, आपके जरा तेवर बदल देने से ही गदर मच गया था और साहब आपने तो कई बार सौराज दिलाया है···।"

मुंशीजी जार-जार रोने लगे, कहा, "हुजूर बुढ़ापा बिगड़ जाएगा। यह सारी इज्जत खाक में मिल जाएगी।"

"अजी इज्जत की इसमें क्या बात है ? आप तो जनाब वाजिदअली शाह साहब······"

"वल्ला, इल्म कसम हुजूर, किसी दुश्मन ने मेरे खिलाफ हुजूर के मेहरबान दिल में कुछ बदगुमानी पैदा करने की कोशिश की है। अब आप ही ख्याल फरमाइए बन्दापरवर, कि कहां मैं और कहां नवाब वाजिदअली शाह साहब का जमाना ? खुदा उन्हें जन्नत···नहीं नहीं ! हुजूर, भला आप ही ख्याल फरमाइए कि मैं क्या मेरे बाप-दादे भी उस वक्त पैदा भी नहीं हुए होंगे, हुजूर।"

"अच्छा, तो गोया आप अभी तक कमसिन ही हैं ! खैर, सिपाहियों, ले जाओ इन्हें। यह लाट साहब से मिलने जा रहे थे न !"

की तरफ मुड़कर वालंटियर से कहा, "इन्हें बता दो कि हम कौन हैं ?"

पुलिस के इन अफसर साहब ने मुस्कराकर इनका हाथ झंकझोरते हुए फरमाया, "अजी इधर आइए साहब। हमें मालूम है कि आप कौन हैं। वह देखिए, हुजूर लाट साहब ने आपकी खातिर के लिए एक मोटर भी भेज दी है।"

लारी पर बैठते वक्त भी जनाब मुंशीजी को इस बात का गुमान न था कि वह हवालात लिए जा रहे हैं। दूसरे वालंटियरों ने भी आपको यही यकीन दिलाया कि लाट साहब ने आपकी बड़ी इज्जत की है।

मोटर लॉरी जब कोतवाली में पहुंची और सिपाही इन्हें हवालात की तरफ ले जाने लगे तब तो आप बहुत घबराए, लगे रो-रोकर दारोगा जी के पैर पकड़ने। रोके फरमाते हैं, "ऐ हुजूर, मैं तो सरकार का पुराना खैरख्वाह हूं।"

दारोगा साहब मुस्कराकर बोले, "अजी वाह, कैसी बात करते हैं आप ? आप तो नवाब वाजिदअली शाह साहब के खास दाहिने हाथ थे, आपके जरा तेवर बदल देने से ही गदर मच गया था और साहब आपने तो कई बार सौराज दिलाया है···।"

मुंशीजी जार-जार रोने लगे, कहा, "हुजूर बुढ़ापा बिगड़ जाएगा। यह सारी इज्जत खाक में मिल जाएगी।"

"अजी इज्जत की इसमें क्या बात है ? आप तो जनाब वाजिदअली शाह साहब······"

"वल्ला, इल्म कसम हुजूर, किसी दुश्मन ने मेरे खिलाफ हुजूर के मेहरबान दिल में कुछ बदगुमानी पैदा करने की कोशिश की है। अब आप ही ख्याल फरमाइए बन्दापरवर, कि कहां मैं और कहां नवाब वाजिदअली शाह साहब का जमाना ? खुदा उन्हें जन्नत···नहीं नहीं हुजूर, भला आप ही ख्याल फरमाइए कि मैं क्या मेरे बाप-दादे भी उ वक्त पैदा भी नहीं हुए होंगे, हुजूर।"

"अच्छा, तो गोया आप अभी तक कमसिन ही हैं ! खैर, सिपाहि ले जाओ इन्हें। यह लाट साहब से मिलने जा रहे थे न !"

९

नज़ीर मियां

पहले तस्लीम करता हूं उस रब्बुल-आलमीन अलख-निरंजन को कि जिसके पास अब तलक रूसी-अमरीकी राकेट नहीं पहुंच पाए। हज़ार बार अनगिनत सिजदे उस साईं सिरजनहार के नाम पर कि जिसने जगमग सितारों-जड़ा अनोखी आब व आनवाला ये अचंभे के बच्चे-सा खल्क रचा, उसमें हिन्द-जैसा मुल्क सिरजा, उसमें माशूक की कनखियों-जैसी आड़े-तिरछे बिछलनेवाली बड़ी नाज़ो-अदावाली चंचल, शोख, पतली कमर बल खाय की तस्वीर खैंचती हुई जलपरी-सी गोमती नदी बनाई, उसके किनारे शहर लखनऊ बसाया, उसमें बाज़ार नखास आबाद किया और नखास में नज़ीर मियां को बेलगाम छोड़ दिया कि जिनका सिन सत्तर की ढैयां छू रहा है और दिल अब भी सत्रह की अंगनाई में ही गिल्ली-डंडा खेलता है।

आज तक किसीने न तो नज़ीर मियां की बोलती बंद होते देखी है और न पैर ही थमते देखे हैं। इनका अपना कोई नहीं मगर ये सबके हैं। ज़िदगी बीत गई, अपना कोई काम नहीं किया मगर गली के आठ-दस घरों के बड़े मियां हैं। किसी दुलहन, किसी बेटी ने बुलवाया कि नज़ीर मियां ये ला दीजिए और वो ला दीजिए, तो चौक, अमीनाबाद दौड़े जा रहे हैं, पुराने माशूकों के आटा-दाल, गेहूं-गोश्त ला रहे हैं। सब जनी कस्में दिला-दिलाके कहती हैं कि नज़ीर मियां, जल्दी लौट आइएगा। सबको ये भी कस्में खा-खाकर यकीन दिलाते हैं कि जल्दी लौट आऊंगा, मगर गली-सड़क में आते ही बातों का नशा ऐसा चढ़ता है कि वक्त का ध्यान फिर किस मरदूद को रहता है! गली से बाहर आते ही दाहिनी ओर वाली बाज़ार की पांच दूकानों के ये नवाब-मुल्क हैं। वहां पचास काम निकल पड़ते हैं, पचास रोकने-टोकनेवाले मिल जाते हैं। फिर

१९

नज़ीर मियां

पहले तस्लीम करता हूं उस रव्बुल-आलमीन अलख-निरंजन को कि जिसके पास अब तलक रूसी-अमरीकी राकेट नहीं पहुंच पाए। हज़ार बार अनगिनत सिजदे उस साईं सिरजनहार के नाम पर कि जिसने जगमग सितारों-जड़ा अनोखी आव व आनवाला ये अचंभे के वच्चे-सा खल्क रचा, उसमें हिन्द-जैसा मुल्क सिरजा, उसमें माशूक की कनखियों-जैसी आड़े-तिरछे बिछलनेवाली बड़ी नाज़ो-अदावाली चंचल, शोख, पतली कमर बल खाय की तस्वीर खैंचती हुई जलपरी-सी गोमती नदी बनाई, उसके किनारे शहर लखनऊ बसाया, उसमें बाज़ार नखास आबाद किया और नखास में नज़ीर मियां को वेलगाम छोड़ दिया कि जिनका सिन सत्तर की ढैयां छू रहा है और दिल अब भी सत्रह की अंगनाई में ही गिल्ली-डंडा खेलता है।

आज तक किसीने न तो नज़ीर मियां की बोलती बंद होते देखी है और न पैर ही थमते देखे हैं। इनका अपना कोई नहीं मगर ये सबके हैं। ज़िंदगी बीत गई, अपना कोई काम नहीं किया मगर गली के आठ-दस घरों के बड़े मियां हैं। किसी दुलहन, किसी बेटी ने बुलवाया कि नज़ीर मियां ये ला दीजिए और वो ला दीजिए, तो चौक, अमीनाबाद दौड़े जा रहे हैं, पुराने माशूकों के आटा-दाल, गेहूं-गोश्त ला रहे हैं। सब जनी कस्में दिला-दिलाके कहती हैं कि नज़ीर मियां, जल्दी लौट आइएगा। सबको ये भी कस्में खा-खाकर यकीन दिलाते हैं कि जल्दी लौट आऊंगा, मगर गली-सड़क में आते ही बातों का नशा ऐसा चढ़ता है कि वक्त का ध्यान फिर किस मरदूद को रहता है! गली से बाहर आते ही दाहिनी ओर वाली बाज़ार की पांच दूकानों के ये नवाब-मुल्क हैं। वहां पचास काम निकल पड़ते हैं, पचास रोकने-टोकनेवाले मिल जाते हैं। फिर

के डिज़ैन पर एक हसीना की फोटू बनेगी उसमें। माशूक छाप साबुन की खातिर किसी माशूक की ही फोटू भी होनी चाहिए। मैं बनवा दूंगा। इतवार की सुबह आप उसे सिकंदर कलंदर आफ इंडिया की दूकान पर टंगा पाएंगे। पच्चीस रुपये ये और दस-पांच रुपये पन्नी-कागज़ वगैरा···"

"अजी पैकिंग-वैकिंग सब बड़ी सुपर फैन किसिम की हुई है, पांच सौ टिकियां बनी रक्खी हैं। मक्खीमार पौडर भी तैयार है।"

"अजी, तब तो जनाब यारअली साहब, आप नजीर हुसैन को चुनौती दे रहे हैं। माशूक छाप साबुन और मक्खीमार पौडर बना के आपका लड़का बेकार रहे और वो भी इस खाकसार के रहते! अजी खुदा चाहेगा तो परसों ही आपके हाथ में सौ नहीं तो पिछत्तर रुपये ज़रूर रख दूंगा। जो मुनासिब कमीशन हो वह दे दीजिएगा। चलिए अल्ला-अल्ला, खैर-सल्ला। और यह तो एक दिन की बात हुई, जनाबेमन, खुदा झूठ न बुलवाए, एक महीने में इनकम-टैक्सवाला तुम्हारे पीछे-पीछे न दौड़ने लगे तो कहना। तुमने अभी हमें पहचाना नहीं है, अज़ीज़मन!"

दुबले-पतले मुनहने-से नज़ीर मियां हैं मगर उनके बदन में बिजली दौड़ती है। जो बात कहते हैं वह उनकी आंखों में, चेहरे पर, हाथ-पैरों में, अज़ो-अज़ो में तस्वीर बनकर फड़क उठती है। होंठों की दोनों कोरों पर नीचे की ओर झुकती हुई कत्थे की दो लकीरें मानो पैदाइशी निशान-सी ही चेहरे का एक अंग बन गई हैं। उनका पान से सदा फूला रहनेवाला गाल और होंठों की ये लकीरें इनकम-टैक्सवाली बात कहते हुए अपनी शान जताकर इतमीनान दिलाने की अदा में कुछ यों उचकीं-बिचकीं कि यारअली को हंसी आ गई। वे बोले, "तुम खूब मिले, उस्ताद। अमां रहते कहां हो?"

"नखास में। वहां जिससे चाहें पूछ लीजिए। आपको हर कोई मेरी हिस्ट्री बतला देगा। जनाब आबिद हुसैन साहब मरहूम, डिप्टी कलक्टर, खुदा जन्नत में भी सदा उनका रुतबा बुलंद करे, मेरे वालिद थे। वालिदा मेरी यहां की मशहूर डेरेदार थीं। उन्हीं डिप्टी साहब ने एक मकान बनवा दिया था। उसीमें सड़क की तरफ दो दूकानें भी हैं। घर की एक

के डिज़ैन पर एक हसीना की फोटू वनेगी उसमें। माशूक छाप साबुन की ख़ातिर किसी माशूक की ही फोटू भी होनी चाहिए। मैं वनवा दूंगा। इतवार की सुबह आप उसे सिकंदर कलंदर आफ इंडिया की दूकान पर टंगा पाएंगे। पच्चीस रुपये ये और दस-पांच रुपये पन्नी-काग़ज़ वगैरा···"

"अजी पैकिंग-वैकिंग सब बड़ी सुपर फैन किसिम की हुई है, पांच सौ टिकियां बनी रक्खी हैं। मक्खीमार पौडर भी तैयार है।"

"अजी, तब तो जनाब यारअली साहब, आप नज़ीर हुसैन को चुनौती दे रहे हैं। माशूक छाप साबुन और मक्खीमार पौडर बना के आपका लड़का बेकार रहे और वो भी इस ख़ाकसार के रहते! अजी ख़ुदा चाहेगा तो परसों ही आपके हाथ में सौ नहीं तो पिछत्तर रुपये ज़रूर रख दूंगा। जो मुनासिब कमीशन हो वह दे दीजिएगा। चलिए अल्ला-अल्ला, ख़ैर-सल्ला। और यह तो एक दिन की बात हुई, जनाबेमन, ख़ुदा झूठ न बुलवाए, एक महीने में इनकम-टैक्सवाला तुम्हारे पीछे-पीछे न दौड़ने लगे तो कहना। तुमने अभी हमें पहचाना नहीं है, अज़ीज़मन!"

दुबले-पतले मुनहने-से नज़ीर मियां हैं मगर उनके बदन में बिजली दौड़ती है। जो बात कहते हैं वह उनकी आंखों में, चेहरे पर, हाथ-पैरों में, अज़ो-अज़ो में तस्वीर बनकर फड़क उठती है। होंठों की दोनों कोरों पर नीचे की ओर झुकती हुई कत्थे की दो लकीरें मानो पैदाइशी निशान-सी ही चेहरे का एक अंग बन गई हैं। उनका पान से सदा फूला रहने-वाला गाल और होंठों की ये लकीरें इनकम-टैक्सवाली बात कहते हुए अपनी शान जताकर इतमीनान दिलाने की अदा में कुछ यों उचकीं-बिचकीं कि यारअली को हंसी आ गई। वे बोले, "तुम ख़ूब मिले, उस्ताद। अमां रहते कहां हो?"

"नख़ास में। वहां जिससे चाहें पूछ लीजिए। आपको हर कोई मेरी हिस्ट्री बतला देगा। जनाब आबिद हुसैन साहब मरहूम, डिप्टी कलक्टर, ख़ुदा जन्नत में भी सदा उनका रुतबा बुलंद करे, मेरे वालिद थे। वालिदा मेरी यहां की मशहूर डेरेदार थीं। उन्हीं डिप्टी साहब ने एक मकान बनवा दिया था। उसीमें सड़क की तरफ़ दो दूकानें भी हैं। घर की एक

प्यासे प्याले दरसाना औ' होंठों की मुस्कराहट में दो बोतलों का नशा उंडेल देना, समझे मियां ? औ' ओढ़नी हवा में बड़े माई डियर क़िसिम से फरफराए बरखुरदार, समझे ? बस, मेरा काम बन जाएगा। दो टिकियां साबुन की तुझे मुफ्त दिलवा दूंगा। अपनी ओर से नन्हो की लौंडिया को पेजेंट कर देना।"

यारअली के लड़के से दस रुपये एडवांस दिलवाए। पांच का नोट अपनी तरफ से मौज करने के लिए दिया। नन्हो की लौंडिया बुलवाई गई। नज़ीर मियां ने आप खड़े हो के तमाम हाव-भाव नैन-सैन बतलाए। बहरहाल, सनीचर की शाम को माशूक छाप साबुन का साइनबोर्ड बनकर तैयार हो गया। नीचे 'स्टाकिस्ट, कलंदर सिकंदर आफ इंडिया, लखनऊ' भी लिखवा दिया गया।

कलंदर सिकंदर की दूकान इनका खास अड्डा है। वे इन्हींके किरायेदार हैं। कलंदर सिकंदर चार भाई थे। मुल्क के बंटवारे में दो पाकिस्तान चले गए तो नज़ीर मियां ने इनके नाम के आगे 'आफ इंडिया' जोड़ दिया। तब से उनकी पन्सारी की दूकान का नाम भी यही पड़ गया है। उनकी दूकान क्या है, मानो रंग-बिरंगे साइनबोर्डों की नुमाइशगाह है। तीन दर की पुरानी दूकान पर छोटे-बड़े सब मेल के करीब पंद्रह-सोलह साइनबोर्ड लटक रहे हैं। छोटे भाई सिकंदर मियां को इसका खब्त है, माल उसी कंपनी का बेचते हैं जो उन्हें तस्वीरोंवाला साइनबोर्ड देता है। पासिंग शो सिगरेट का टोपदार साहब, पहलवान छाप बीड़ी का पहलवान, लाइफबॉय साबुन लगाकर नल के नीचे नहाता-मुस्कुराता लौंडा, एक सौ इकतीस नंबर की बीड़ी फूंकती और आंख मारती हुई हसीना, लंगूर छाप खिजाब का लंगूर, गरज़ कि आर्ट के नायाब नमूने वहां लटके हुए हैं। इतवार की सुबह सात बजे सब साइनबोर्डों के ऊपर माशूक छाप साइनबोर्ड भी चढ़ गया।

इतवार का रोज़ अल्लाह मियां की तरफ से खास तौर पर नखास के लिए ही मुकर्रर किया गया है। उस दिन लखनऊ के तमाम अक्लमंद लोग, क्यूरियो-डीलर, गरीब शौकीन और देहाती लोग-लुगाइयां नखास में इस तरह अटाटूट भर जाते हैं गोया नखास दिल हो और उसमें वे

प्यासे प्याले दरसाना औ' होंठों की मुस्कराहट में दो बोतलों का नशा उंडेल देना, समझे मियां ? औ' ओढ़नी हवा में बड़े माई डियर किसिम से फरफराए बरखुरदार, समझे ? बस, मेरा काम बन जाएगा। दो टिकियां साबुन की तुझे मुफ्त दिलवा दूंगा। अपनी ओर से नन्हो की लौंडिया को पेजेंट कर देना।"

यारअली के लड़के से दस रुपये एडवांस दिलवाए। पांच का नोट अपनी तरफ से मौज करने के लिए दिया। नन्हो की लौंडिया बुलवाई गई। नज़ीर मियां ने आप खड़े हो के तमाम हाव-भाव नैन-सैन बतलाए। बहरहाल, सनीचर की शाम को माशूक छाप साबुन का साइनबोर्ड बनकर तैयार हो गया। नीचे 'स्टाकिस्ट, कलंदर सिकंदर आफ इंडिया, लखनऊ' भी लिखवा दिया गया।

कलंदर सिकंदर की दूकान इनका खास अड्डा है। वे इन्हींके किरायेदार हैं। कलंदर सिकंदर चार भाई थे। मुल्क के बंटवारे में दो पाकिस्तान चले गए तो नज़ीर मियां ने इनके नाम के आगे 'आफ इंडिया' जोड़ दिया। तब से उनकी पन्सारी की दूकान का नाम भी यही पड़ गया है। उनकी दूकान क्या है; मानो रंग-बिरंगे साइनबोर्डों की नुमाइशगाह है। तीन दर की पुरानी दूकान पर छोटे-बड़े सब मेल के करीब पंद्रह-सोलह साइनबोर्ड लटक रहे हैं। छोटे भाई सिकंदर मियां को इसका खब्त है, माल उसी कंपनी का बेचते हैं जो उन्हें तस्वीरोंवाला साइनबोर्ड देता है। पासिंग शो सिगरेट का टोपदार साहब, पहलवान छाप बीड़ी का पहलवान, लाइफबॉय साबुन लगाकर नल के नीचे नहाता-मुस्कुराता लौंडा, एक सौ इकतीस नंबर की बीड़ी फूंकती और आंख मारती हुई हसीना, लंगूर छाप खिज़ाब का लंगूर, गरज़ कि आर्ट के नायाब नमूने वहां लटके हुए हैं। इतवार की सुबह सात बजे सब साइनबोर्डों के ऊपर माशूक छाप साइनबोर्ड भी चढ़ गया।

इतवार का रोज़ अल्लाह मियां की तरफ से खास तौर पर नखास के लिए ही मुकर्रर किया गया है। उस दिन लखनऊ के तमाम अक्लमंद लोग, क्यूरियो-डीलर, गरीब शौकीन और देहाती लोग-लुगाइयां नखास में इस तरह अटाटूट भर जाते हैं गोया नखास दिल हो और उसमें वे

मियां वो फबतियां कसते कि भीड़ में ठहाके उमड़ पड़ते, सुननेवालों का जी लहालोट हो जाता। ढाई बजे तक नजीर मियां ने निन्नानवे टिकिया बेच डालीं, एक बी हैदरी के लिए बचा ली। इकन्नीवाले मक्खीमार पाउडर के ग्यारह दर्जन पैकेट बेचे। जब पैसे दिए तो यारअली का लड़का पांव पकड़ने लगा। यारअली के लड़के को चोकस हिसाब दे और अपना कमीशन लेकर नजीर मियां पल-भर भी न रुके, अजरा की किताबें लाने के वास्ते अमीनाबाद की ओर लपके। किताबों के साथ पांच रुपये के रसगुल्ले अपनी तरफ से ले गए। लड़कियों को मना लिया।

इन्हीं गलियों और इसी सड़क पर नजीर मियां बच्चे से बड़े मियां हुए हैं। नन्नू पानवाला और सिकंदर कलंदर तो इन्हींके किरायेदार हैं। उनका भला तो ये चाहते ही हैं। पड़ोस के हबीब चायवाले, यूसुफ हलवाई और सिरीकिशन साइकिलवाले के भी ये खास सगे हैं। यों इनका अड्डा सिकंदर कलंदर की दूकान है मगर 'हबीब रेस्टूरेंट' में भी बैठा करते हैं। सिकंदर की दूकान पर सौदा-सुलुफ लेने के लिए आनेवाली औरतों-महरियों से छेड़छाड़ किया करते हैं। सड़क से गुजरते इक्के-तांगों, रिक्शों पर जनानी सवारी देखी नहीं कि उधर ही ताकने लगे। अपने-आपको हुस्न का जौहरी कहते हैं। इसी आदत की बदौलत दो-एक बार पिटे भी हैं।

नजीर मियां माशूकों के पीछे सदा बदहवास घूमे मगर अक्ल के पीछे लाठी लेकर न पड़े। पहुंच के बाहर की औरतों को बेबसी में सराहते जरूर हैं पर जहां बराबर की जोड़ होती है वहीं बुढ़भस की लार टपकाते डोलते हैं। दिन-रात मजनूं की तरह वस्ल और हिज्र के गीत गाते हैं। मलाई के चप्पन, रबड़ी के दोने, साबुन, तेल, इत्र, गजरे लिए खुशामद में दौड़ते हैं। जहां दांव लग गया वहीं महीने-दो महीने दिलोजान निसार किया, बुझते दिये की तेज लौ के मानिंद अपनी हविसों का खिलवाड़ किया, मुनासिब पैसे भी खर्च किए मगर फिर कहीं और बहके।

फिलहाल छह महीने से गुलाबबाड़ी के अख्तर नवाब की एक बेवा महरी हैदरी का कलाम पढ़ रहे हैं। खुद ही कहते हैं कि हैदरी जादूगरनी है वरना इतने दिनों तक कोई उन्हें बांध नहीं सका। ये उसकी खिदमत

मियां वो फबतियां कसते कि भीड़ में ठहाके उमड़ पड़ते, सुननेवालों का जी लहालोट हो जाता। ढाई बजे तक नजीर मियां ने निन्नानवे टिकिटें बेच डालीं, एक वो हैदरी के लिए बचा ली। इकन्नीवाले मक्खीमार पाउडर के ग्यारह दर्जन पैकेट बेचे। जब पैसे दिए तो यारअली का लड़का पांव पकड़ने लगा। यारअली के लड़के को चोकस हिसाब दे और अपना कमीशन लेकर नजीर मियां पल-भर भी न रुके, अजरा की किताबें लाने के वास्ते अमीनाबाद की ओर लपके। किताबों के साथ पांच रुपये के रसगुल्ले अपनी तरफ से ले गए। लड़कियों को मना लिया।

इन्हीं गलियों और इसी सड़क पर नजीर मियां बच्चे से बड़े मियां हुए हैं। नब्बू पानवाला और सिकंदर कलंदर तो इन्हींके किरायेदार हैं। उनका भला तो ये चाहते ही हैं। पड़ोस के हबीब चायवाले, यूसुफ हलवाई और सिरीकिशन साइकिलवाले के भी ये खास सगे हैं। यों इनका अड्डा सिकंदर कलंदर की दूकान है मगर 'हबीब रेस्टूरेंट' में भी बैठा करते हैं। सिकंदर की दूकान पर सौदा-सुलुफ लेने के लिए आनेवाली औरतों-महरियों से छेड़छाड़ किया करते हैं। सड़क से गुजरते इक्के-तांगों, रिक्शों पर जनानी सवारी देखी नहीं कि उधर ही ताकने लगे। अपने-आपको हुस्न का जौहरी कहते हैं। इसी आदत की बदौलत दो-एक बार पिटे भी हैं।

नजीर मियां माशूकों के पीछे सदा बदहवास घूमे मगर अक्ल के पीछे लाठी लेकर न पड़े। पहुंच के बाहर की औरतों को बेबसी में सराहते जरूर हैं पर जहां बराबर की जोड़ होती है वहीं बुढ़मस की लार टपकाते डोलते हैं। दिन-रात मजनूं की तरह वस्ल और हिज्र के गीत गाते हैं। मलाई के चप्पन, रबड़ी के दोने, साबुन, तेल, इत्र, गजरे लिए खुशामद में दौड़ते हैं। जहां दांव लग गया वहीं महीने-दो महीने दिलोजान निसार किया, बुझते दिये की तेज लौ के मानिंद अपनी हविसों का खिलवाड़ किया, मुनासिब पैसे भी खर्च किए मगर फिर कहीं और बहके।

फिलहाल छह महीने से गुलाबबाड़ी के अख्तर नवाब की एक बेवा महरी हैदरी का कलाम पढ़ रहे हैं। खुद ही कहते हैं कि हैदरी जादूगरनी है वरना इतने दिनों तक कोई उन्हें बांध नहीं सका। ये उसकी खिदमत

लिए चोंचले सब दिखाती हैं। अब तुम्हीं इन्साफ करो बी महरी कि हम क्या कोई गौरवे हैं। अरे, अब लौंडपन भी नहीं रहा कि धोखा खाते फिरें। बकौल कैस 'उन्हें भी जोशे-उल्फत हो तो लुत्फ उट्ठे मुहब्बत का, हमीं दिन-रात गर तड़पे तो फिर इसमें मजा क्या है ?"

यों ही अपनी सुनाते हुए बी महरी के साथ-साथ उनके मालिक की ड्योढ़ी तक पहुंच गए। देखते ही बोले, "अल्लाह, नवाब अख्तर साहब की कोठी में काम करती हो ! अमां, तब तो तुम अपने घर की ही निकलीं। अरे-अरे, सुनो तो बी महरी, नवाब साहब अगर दीवानखाने में तशरीफ रखते हों तो जई मेरे आने की इत्तिला करना, कहना, नखासवाले नज़ीर मियां आए हैं। अमां, पूरी बात तो सुन लो। तुम तो खुदा की कसम, दिल तो उड़ाती ही हो मगर आप भी उड़ती हो।"

"ऐ तो क्या करें, तुम तो हो नाठे निगोड़े औ' यहां पचासों काम पड़े हैं।"

नज़ीर मियां ने एक सर्द आह खींची, कहने लगे, " 'ठहरे हैं हम तो मुजरिम टुक प्यार करके तुमको; तुमसे भी कोई पूछे तुम क्यों हुए पियारे।' ज़री अपना नाम तो बतला दो, तुम्हें हमारी जान कसम।"

इसके बाद मलाई के चप्पन, इतर-फुलेल, कंघी-आईना, यहां तक कि माशूक छाप साबुन की सौवीं टिकिया भी बी हैदरी की खिदमत में पहुंची। बारे महीना पचीस रोज के चक्करों ने बी हैदरी के बूढ़े दिल में भी इश्क की लहरें उठा दीं। तब से वही उनकी इश्किया ज़िंदगी का इकलौता सहारा है। ऐसे बस में हुए हैं कि जान सौंप दी पर माल नहीं सौंपा। हां, लालच बढ़ाते हैं। एकाध ज़ेवर दे भी दिया है। कभी-कभी यह इरादा भी जाहिर करते हैं कि हैदरी अगर नौकरी छोड़ दे तो वह उसे अपने घर में डाल लेंगे और आखिरी वक्त में ज़ेवर-जायदाद भी उसीके नाम लिख जाएंगे। मगर यों तो नज़ीर मियां पहले भी कई बार सोच चुके हैं। बी हैदरी के बाद आगे कब और किस-किसके लिए फिर ये नेक इरादे जागेंगे, इसे सिर्फ ऊपर वाला ही जानता है।

लिए चोंचले सब दिखाती हैं। अब तुम्हीं इन्साफ करो बी महरी कि हम क्या कोई गौरवे हैं। अरे, अब लौंडपन भी नहीं रहा कि धोखा खाते फिरें। बकौल कैस 'उन्हें भी जोशे-उल्फत हो तो लुत्फ उट्ठे मुहब्बत का, हमीं दिन-रात गर तड़पे तो फिर इसमें मज़ा क्या है ?"

यों ही अपनी सुनाते हुए बी महरी के साथ-साथ उनके मालिक की ड्योढ़ी तक पहुंच गए। देखते ही बोले, "अल्लाह, नवाब अख्तर साहब की कोठी में काम करती हो ! अमां, तब तो तुम अपने घर की ही निकलीं। अरे-अरे, सुनो तो बी महरी, नवाब साहब अगर दीवानखाने में तशरीफ रखते हों तो जई मेरे आने की इत्तिला करना, कहना, नखासवाले नज़ीर मियां आए हैं। अमां, पूरी बात तो सुन लो। तुम तो खुदा की कसम, दिल तो उड़ाती ही हो मगर आप भी उड़ती हो।"

"ऐ तो क्या करें, तुम तो हो नाटे निगोड़े औ' यहां पचासों काम पड़े हैं।"

नज़ीर मियां ने एक सर्द आह खींची, कहने लगे, " 'ठहरे हैं हम तो मुजरिम टुक प्यार करके तुमको; तुमसे भी कोई पूछे तुम क्यों हुए पियारे।' ज़री अपना नाम तो बतला दो, तुम्हें हमारी जान कसम।"

इसके बाद मलाई के चप्पन, इतर-फुलेल, कंघी-आईना, यहां तक कि माशूक छाप साबुन की सौवीं टिकिया भी बी हैदरी की खिदमत में पहुंची। बारे महीना पचीस रोज के चक्करों ने बी हैदरी के बूढ़े दिल में भी इश्क की लहरें उठा दीं। तब से वही उनकी इश्किया ज़िंदगी का इकलौता सहारा है। ऐसे बस में हुए हैं कि जान सौंप दी पर माल नहीं सौंपा। हां, लालच बढ़ाते हैं। एकाध ज़ेवर दे भी दिया है। कभी-कभी यह इरादा भी ज़ाहिर करते हैं कि हैदरी अगर नौकरी छोड़ दे तो वह उसे अपने घर में डाल लेंगे और आखिरी वक्त में ज़ेवर-जायदाद भी उसीके नाम लिख जाएंगे। मगर यों तो नज़ीर मियां पहले भी कई बार सोच चुके हैं। बी हैदरी के बाद आगे कब और किस-किसके लिए फिर ये नेक इरादे जागेंगे, इसे सिर्फ ऊपर वाला ही जानता है।

थोड़ी देर बाद पत्नी आईं, "पूछा, अखबार में कोई खबर छपी है।"

मैंने कहा, "कोई क्या, खबरें ही खबरें छपी हैं, उसका नाम ही अखबार है।"

मेरी पत्नी चिढ़ उठीं, बोलीं "तुम बात का जवाब देना ही नहीं जानते। रहने दो, मैं बड़े से पूछ लूंगी।"

मैं सोचने लगा कि सुबह लंबरदार ने बेमतलब ही जिन चांटामार जान लेनेवालों की बात मुझे सुनाई थी वे स्वभाव में मेरी घरवाली या कहूं कि आम तौर पर हर किसीकी अधेड़ या बूढ़ी घरवाली से ज़रूर मिलते-जुलते होंगे। बड़े बेटों-बेटी वालियां बहुओं, दामादों, नाती-पोतों वाली सुहागिनें, अपने पतियों को बेबात की बात का नाच नचाना आरम्भ कर देती हैं।

आप ही न्याय कीजिए कि बिना जाने मैं यह कैसे समझ सकता हूं कि वो कौन-सी खबर सुनना चाहती हैं। मगर उनके यों तुनुक के चले जाने पर कौन ज़बान खोले। यदि रस-शास्त्र की नायिका-भेदी दृष्टि से प्रौढ़-अधीरा कहूं तो उनका मातृ-पद, सास-पद भृकुटियां तान-तानकर देखता है। बड़ी मुसीबत है, बंगाले के चांटामार जानलेवाओं की अफवाह तो आज उड़ी, मैं तो कहता हूं कि हर भाग्यवान घर में सदा से ऐसी चांटेमार जानलेवा जादूगरनियां रही हैं। और लीजिए, मैं यह सब सोच ही रहा था कि श्रीमती फिर आ धमकीं, झुंझलाकर कहा, "बड़ा तो बड़ा जानलेवा है। वो अपने नाइट-शो सिनेमा के फेर में खबर को ही झूठी बताता है। मेरी हंसी उड़ाता है। तुम बता दो, खबर छपी है कि नहीं।"

उनका चेहरा देखकर मुझे दया आ गई। फिर भी थोड़ी छेड़खानी से बाज न आया। समझ तो गया था कि किस खबर से परेशान हैं, शर्लाक होम्स की बुद्धि से यह भी समझ गया था कि अभी महरी बर्तन मांजने आई है। उसीने चांटेमार जादूगरों की खबर सुनाई होगी। मगर अनजान बनकर बोला, "भई कौन-सी खबर बतलाऊं। चीन की चिट्ठी पढ़कर सुनाऊं या द्विवेदी स्मारक की खबर…"

"महरी कहती है कि अखबारों में खबर छप गई है।"

"कौन-सी खबर?"

थोड़ी देर बाद पत्नी आई, "पूछा, अखबार में कोई खबर छपी है।"

मैंने कहा, "कोई क्या, खबरें ही खबरें छपी हैं, उसका नाम ही अखबार है।"

मेरी पत्नी चिढ़ उठीं, बोलीं "तुम बात का जवाब देना ही नहीं जानते। रहने दो, मैं बड़े से पूछ लूंगी।"

मैं सोचने लगा कि सुबह लंबरदार ने बेमतलब ही जिन चांटामार जान लेनेवालों की बात मुझे सुनाई थी वे स्वभाव में मेरी घरवाली या कहूं कि आम तौर पर हर किसीकी अधेड़ या बूढ़ी घरवाली से ज़रूर मिलते-जुलते होंगे। बड़े बेटों-बेटी वालियां बहुओं, दामादों, नाती-पोतों वाली सुहागिनें, अपने पतियों को बेबात की बात का नाच नचाना आरम्भ कर देती हैं।

आप ही न्याय कीजिए कि बिना जाने मैं यह कैसे समझ सकता हूं कि वो कौन-सी खबर सुनना चाहती हैं। मगर उनके यों तुनुक के चले जाने पर कौन ज़बान खोले। यदि रस-शास्त्र की नायिका-भेदी दृष्टि से प्रौढ़-अधीरा कहूं तो उनका मातृ-पद, सास-पद भृकुटियां तान-तानकर देखता है। बड़ी मुसीबत है, बंगाले के चांटामार जानलेवाओं की अफवाह तो आज उड़ी, मैं तो कहता हूं कि हर भाग्यवान घर में सदा से ऐसी चांटेमार जानलेवा जादूगरनियां रही हैं। और लीजिए, मैं यह सब सोच ही रहा था कि श्रीमती फिर आ धमकीं, झुंझलाकर कहा, "बड़ा तो बड़ा जानलेवा है। वो अपने नाइट-शो सिनेमा के फेर में खबर को ही झूठी बताता है। मेरी हंसी उड़ाता है। तुम बता दो, खबर छपी है कि नहीं।"

उनका चेहरा देखकर मुझे दया आ गई। फिर भी थोड़ी छेड़खानी से बाज़ न आया। समझ तो गया था कि किस खबर से परेशान हैं, शर्लाक होम्स की बुद्धि से यह भी समझ गया था कि अभी महरी बर्तन मांजने आई है। उसीने चांटेमार जादूगरों की खबर सुनाई होगी। मगर अनजान बनकर बोला, "भई कौन-सी खबर बतलाऊं। चीन की चिट्ठी पढ़कर सुनाऊं या द्विवेदी स्मारक की खबर···"

"महरी कहती है कि अखबारों में खबर छप गई है।"

"कौन-सी खबर?"

है। पर बड़ा जो रात को देर से आता है इसीसे विश्वास नहीं होता।"

मैंने कहा, "देवी, तर्कशास्त्र के इस नये सूत्र के लिए ही तुम्हें डाक्टरेट मिलनी चाहिए।"

वे अपनी झेंप मिटाने के लिए मुस्कुराईं और अपना बड़प्पन स्थापित करते हुए बोलीं, "तुम्हें याद है, एक बार जब लकड़बग्घों की गप्प उड़ी थी तब किसी बाबा जी की एक पगली को लकड़बग्घी कहकर कैसा शोर मचाया था।"

मैंने कहा, "मुझे तो याद है, तुम याद कर लो।"

इन चलते-फिरते गज़टों ने अक्सर अनर्थ तक कर डाला है। कई वर्ष पहले गोमती तट से पागलों का इलाज करनेवाले एक बाबा जी के आश्रम से रात में एक पगली भाग निकली। गर्मी के दिन थे। वह भटकते-भटकते एक ऐसे गरीबों के मुहल्ले में पहुंच गई जहां गली में ही खाटें बिछाए अनेक परिवार सो रहे थे। पगली का एक बच्चा कुछ महीनों पहले मर चुका था, किसी स्त्री के पास लेटे हुए छोटे बच्चे को उसने अपना समझकर उठा लिया और कसकर चूमने-दुलारने लगी। बच्चा रोया, मां की आंख खुली, अपने बच्चे को किसीकी गोद में देखकर वह चीखी। पगली भागी, जगार हो गई, लोगों ने पगली से बच्चा छीन लिया, पगली को खूब मारा-पीटा, कोतवाली में सुबह चार बजे लाकर बंद करवा दिया। यह खबर मुंह अंधेरे ही दूर-दूर तक यों फैली कि एक लकड़बग्घी एक बच्चे को ले भागी। उसका कलेजा खा लिया। कोतवाली में पकड़कर आई है। उसके बड़े-बड़े नाखून हैं इत्यादि। लगभग साढ़े चार बजे तक चौक कोतवाली के फाटक पर लगभग हज़ार आदमियों का मजमा लग गया। जितना ही लोगों से यह कहा जाए कि लकड़बग्घी नहीं एक औरत है, उतना ही लोगों का यह विश्वास दृढ़ हो कि लकड़बग्घी है, ये तो पब्लिक में सनसनी न फैले इसलिए खबर छिपा रहे हैं। मैं पगली को देखने गया, पहचान लिया और थाने वालों से सारी स्थिति भी बयान की। उन्होंने कानूनी स्थिति मुझे समझा दी। मैं जब बाहर निकला तो अनेक आदमियों ने घेरा, "लखड़बग्घी है न?" मैंने कहा, "नहीं, पगली है।" एक पढ़े-लिखे जवान मुझसे तन गए, "वाह, लकड़बग्घी है। इतने लोग झूठ

है। पर बड़ा जो रात को देर से आता है इसीसे विश्वास नहीं होता।"

मैंने कहा, "देवी, तर्कशास्त्र के इस नये सूत्र के लिए ही तुम्हें डाक्टरेट मिलनी चाहिए।"

वे अपनी झेंप मिटाने के लिए मुस्कुराईं और अपना बड़प्पन स्थापित करते हुए बोलीं, "तुम्हें याद है, एक बार जब लकड़बग्घों की गप्प उड़ी थी तब किसी बाबा जी की एक पगली को लकड़बग्घी कहकर कैसा शोर मचाया था।"

मैंने कहा, "मुझे तो याद है, तुम याद कर लो।"

इन चलते-फिरते गज़टों ने अक्सर अनर्थ तक कर डाला है। कई वर्ष पहले गोमती तट से पागलों का इलाज करनेवाले एक बाबा जी के आश्रम से रात में एक पगली भाग निकली। गर्मी के दिन थे। वह भटकते-भटकते एक ऐसे गरीबों के मुहल्ले में पहुंच गई जहां गली में ही खाटें बिछाए अनेक परिवार सो रहे थे। पगली का एक बच्चा कुछ महीनों पहले मर चुका था, किसी स्त्री के पास लेटे हुए छोटे बच्चे को उसने अपना समझकर उठा लिया और कसकर चूमने-दुलारने लगी। बच्चा रोया, मां की आंख खुली, अपने बच्चे को किसीकी गोद में देखकर वह चीखी। पगली भागी, जगार हो गई, लोगों ने पगली से बच्चा छीन लिया, पगली को खूब मारा-पीटा, कोतवाली में सुबह चार बजे लाकर बंद करवा दिया। यह खबर मुंह अंधेरे ही दूर-दूर तक यों फैली कि एक लकड़बग्घी एक बच्चे को ले भागी। उसका कलेजा खा लिया। कोतवाली में पकड़कर आई है। उसके बड़े-बड़े नाखून हैं इत्यादि। लगभग साढ़े चार बजे तक चौक कोतवाली के फाटक पर लगभग हज़ार आदमियों का मजमा लग गया। जितना ही लोगों से यह कहा जाए कि लकड़बग्घी नहीं एक औरत है, उतना ही लोगों का यह विश्वास दृढ़ हो कि लकड़बग्घी है, ये तो पब्लिक में सनसनी न फैले इसलिए खबर छिपा रहे हैं। मैं पगली को देखने गया, पहचान लिया और थाने वालों से सारी स्थिति भी बयान की। उन्होंने कानूनी स्थिति मुझे समझा दी। मैं जब बाहर निकला तो अनेक आदमियों ने घेरा, "लखड़बग्घी है न?" मैंने कहा, "नहीं, पगली है।" एक पढ़े-लिखे जवान मुझसे तन गए, "वाह, लकड़बग्घी है। इतने लोग झूठ

५

दफीने की खुदाई

साइंस का ज़माना है। आप जादू-टोने पर यकीन नहीं करेंगे। मैं भी नहीं करता था। मगर आपसे सच कहता हूं, पिछले महीने-डेढ़ महीने के अन्दर मैंने जो देखा है, वह अगर सच नहीं तो सच से सवा-सोलह आना बढ़कर ज़रूर है।

हुआ यह कि लखनऊ में शाही खज़ाना खुदने लगा। हमारे मुहल्ले में, अजी शहर के कोने-कोने में हर शख्श, जिसके पास भी दादालाई जायदाद थी, यही सोचने लगा कि हो न हो हमारे घर में भी करोड़ नहीं तो लाख अशर्फियों का घड़ा ज़रूर गड़ा है। घर-घर जन्मपत्रियां खुलने लगीं, पंडित-मौलवियों के घरों की चौखटें अपने-अपने घरों के दफीनों का हाल जानने-वालों की आवाजाही में घिस गईं, सरकार का दफ्तर गड़ा धन खुदवाने वालों की अर्जियों से पट गया···और हम बैठे-बैठे मजा लेते रहे। शहर दफीनों की अफवाहों से दबा जा रहा था, आए दिन दो-चार हम भी लाद देते थे।

मगर एक दिन हमपर भी लद गई जनाब! सुबह जो आंख खुली तो घर की लक्ष्मी कॉफी का प्याला लिए खड़ी मुस्करा रही थीं। यहां टुक बात का तार तोड़कर एक बात मतलब की कह दूं, अगर कभी आप मुझे अपने घर चाय पीने के लिए बुलाएं और आपको अक्सर बुलाना भी चाहिए, तो चाय का मुहावरा बरकरार रखते हुए भी कॉफी ही पिलाइएगा। आपकी दुआ से मैं अस्सरे-नौ इंटेलेक्चुअल हो गया हूं और चायवाली इंटेलेक्चुअलता अब पुरानी पड़ गई है। अच्छा तो खैर, कॉफी की एक चुस्की से दिमाग के दड़बों में सोए इज़्मों में कबूतर फड़फड़ाने लगे, मगर तब तक घरवाली बड़े नाज़ोअंदाज़ से मुस्कुराकर बोलीं, "सुनो, मुझे एक सपना हुआ है।"

५

दफीने की खुदाई

साइंस का ज़माना है। आप जादू-टोने पर यकीन नहीं करेंगे। मैं भी नहीं करता था। मगर आपसे सच कहता हूं, पिछले महीने-डेढ़ महीने के अन्दर मैंने जो देखा है, वह अगर सच नहीं तो सच से सवा-सोलह आना बढ़कर ज़रूर है।

हुआ यह कि लखनऊ में शाही खज़ाना खुदने लगा। हमारे मुहल्ले में, अजी शहर के कोने-कोने में हर शख्श, जिसके पास भी दादालाई जायदाद थी, यही सोचने लगा कि हो न हो हमारे घर में भी करोड़ नहीं तो लाख अशर्फियों का घड़ा ज़रूर गड़ा है। घर-घर जन्मपत्रियां खुलने लगीं, पंडित-मौलवियों के घरों की चौखटें अपने-अपने घरों के दफीनों का हाल जानने-वालों की आवाजाही में घिस गईं, सरकार का दफ्तर गड़ा धन खुदवाने वालों की अर्जियों से पट गया···और हम बैठे-बैठे मजा लेते रहे। शहर दफीनों की अफवाहों से दबा जा रहा था, आए दिन दो-चार हम भी लाद देते थे।

मगर एक दिन हमपर भी लद गई जनाब! सुबह जो आंख खुली तो घर की लक्ष्मी कॉफी का प्याला लिए खड़ी मुस्करा रही थीं। यहां दुब बात का तार तोड़कर एक बात मतलब की कह दूं, अगर कभी आप मुझे अपने घर चाय पीने के लिए बुलाएं और आपको अक्सर बुलाना भी चाहिए, तो चाय का मुहावरा बरकरार रखते हुए भी कॉफी ही पिलाइएगा। आपकी दुआ से मैं अस्सरे-नौ इंटेलेक्चुअल हो गया हूं और चायवाली इंटेलेक्चुअलता अब पुरानी पड़ गई है। अच्छा तो खैर, कॉफी की एक चुस्की से दिमाग के दड़बों में सोए इज़्मों में कबूतर फड़फड़ाने लगे, मगर तब तक घरवाली बड़े नाज़ोअंदाज़ से मुस्कुराकर बोलीं, "सुनो, मुझे एक सपना हुआ है।"

तकदीर को सिकन्दर से चुकन्दर बना देते हैं। आज मैं आपको वह करिश्मा दिखलाऊंगा कि आप भी कहेंगे कि हां, अल्लाहवाले से वास्ता पड़ा था।"

यह कहते ही जनाब, वह चट से उठे, जेब से रूमाल निकाला, उसमें टीन की दस डिबियां बंधी हुई थीं। बोले, "इनमें खुदा की खुदाई भरी हुई है। सात डिबियों में सात आसमानों को अपनी आंखों देखने के लिए सुरमे रक्खे हैं, आठवीं में वह सुरमा है कि लगाकर अपनी छत पर बैठ जाइए और तमाम दुनिया का हाल देखिए, डिब्बी नम्बर नौ के सुरमे में वह तासीर है कि अगर लगाकर अपनी माशूका (बीवी नहीं) के सामने खड़े हो जाइए, तो उसके दिल का नज़ारा दिखलाई पड़े और दुश्मन के सामने खड़े हो जाइए तो उसके दिल का भेद लीजिए। और डिब्बी नम्बर दस में उल्लू की आंख का सुरमा है, जिसे लगाते ही आपको धरती में गड़ी दौलत नज़र आएगी।"

हम चित तो खैर हो नहीं सकते क्योंकि इंटेलेक्चुअल हैं—मगर फ्लैट ज़रूर हो गए। जी में आया कि डिब्बी नौ का सुरमा लगाकर पहले अपनी···मगर घरवाली सामने थीं, इसलिए डिब्बी नम्बर आठ का सुरमा आंजकर यू० एन० ओ० की पंचायत देखने की इच्छा की। मगर मेरी गृहलक्ष्मी उल्लूवाले बरमे पर अड़ गईं। मौलवी साहब ने पीपल की छड़ निकाली जिसके एक सिरे पर पंजा बना था और दूसरी ओर बारीक सुरमे की सलाई जैसी नोक थी। कुछ पढ़कर मौलवी साहब ने डिब्बी नम्बर दस पर तीन बार पंजा फेरा, डिब्बी खोली और फिर सुरमा-सलाई लेकर मे नदीज़क इस तरह खड़े हुए जैसे नाई हजामत बनाने के लिए उस्तरा लेक खड़ा होता है।

आपसे हर 'इज़्म' की कसम खाकर कहता हूं, उल्लू का बरमा व जादू है जो सिर चढ़कर बोलता है। सबसे पहले तो अपनी किताबों क आलमारी के पीछेवाली दीवार में ही नज़र गई। पलस्तर और लखौ के दो गज अन्दर एक सेठानी जी की प्लाटिनम की कद्दे-आदम मूर्ति रख थी, वह अपनी गोद में एक लल्ला लिए बैठी थीं।

मौलवी साहब ने उसे देखकर फिर पीतल के पंजे की हवा में
ह

तकदीर को सिकन्दर से चुकन्दर बना देते हैं। आज मैं आपको वह करिश्मा दिखलाऊंगा कि आप भी कहेंगे कि हां, अल्लाहवाले से वास्ता पड़ा था।"

यह कहते ही जनाब, वह चट से उठे, जेब से रूमाल निकाला, उसमें टीन की दस डिबियां बंधी हुई थीं। बोले, "इनमें खुदा की खुदाई भरी हुई है। सात डिबियों में सात आसमानों को अपनी आंखों देखने के लिए सुरमे रक्खे हैं, आठवीं में वह सुरमा है कि लगाकर अपनी छत पर बैठ जाइए और तमाम दुनिया का हाल देखिए, डिब्बी नम्बर नौ के सुरमे में वह तासीर है कि अगर लगाकर अपनी माशूका (बीबी नहीं) के सामने खड़े हो जाइए, तो उसके दिल का नजारा दिखलाई पड़े और दुश्मन के सामने खड़े हो जाइए तो उसके दिल का भेद लीजिए। और डिब्बी नम्बर दस में उल्लू की आंख का सुरमा है, जिसे लगाते ही आपको धरती में गड़ी दौलत नजर आएगी।"

हम चित तो खैर हो नहीं सकते क्योंकि इंटेलेक्चुअल हैं—मगर फ्लैट जरूर हो गए। जी में आया कि डिब्बी नौ का सुरमा लगाकर पहले अपनी···मगर घरवाली सामने थीं, इसलिए डिब्बी नम्बर आठ का सुरमा आंजकर यू० एन० ओ० की पंचायत देखने की इच्छा की। मगर मेरी गृहलक्ष्मी उल्लूवाले बरमे पर अड़ गईं। मौलवी साहब ने पीपल की छड़ निकाली जिसके एक सिरे पर पंजा बना था और दूसरी ओर बारीक सुरमे की सलाई जैसी नोक थी। कुछ पढ़कर मौलवी साहब ने डिब्बी नम्बर दस पर तीन बार पंजा फेरा, डिब्बी खोली और फिर सुरमा-सलाई लेकर मेरे नदीजक इस तरह खड़े हुए जैसे नाई हजामत बनाने के लिए उस्तरा लेकर खड़ा होता है।

आपसे हर 'इज्म' की कसम खाकर कहता हूं, उल्लू का बरमा वह जादू है जो सिर चढ़कर बोलता है। सबसे पहले तो अपनी किताबों की आलमारी के पीछेवाली दीवार में ही नजर गई। पलस्तर और लखौरं के दो गज़ अन्दर एक सेठानी जी की प्लाटिनम की कद्दे-आदम मूर्ति रक्खी थी, वह अपनी गोद में एक लल्ला लिए बैठी थीं।

मौलवी साहब ने उसे देखकर फिर पीतल के पंजे की हवा में कु

ह—

और दो करोड़ की लक्ष्मी घर से भाग गई।

मेरी गृहलक्ष्मी ने कहा कि इन मौलवी साहब से न बनेगा, महरी बतलाती थी कि कालीबाड़ी में आजकल एक बंगाली पंडित आया हुआ है, वो सातों विद्या जानता है। उसे कामरू-कमच्छा की देवी सिद्ध है।

मौलवी साहब को सुनकर तैश आ गया, बोले, "साहब, मेरे पास भी इल्म है। मैं भी अपना हुनर दिखलाऊंगा।"

दूसरे दिन से दो इल्मों की लड़ाई चली। एक तरफ मौलवी साहब बैठे, दूसरी ओर यंत्राचार्य, तंत्रतीर्थ, तंत्र-वाचस्पति पंडित पांचकौड़ी ढोल।

मौलवी साहब ने अपनी नम्बर ३ की डिब्बी का सुरमा आंजकर फलक नम्बर एक को देखा और फरमाया, "ऊपर वाले तेरी कुदरत! पहली ड्योढ़ी पर जादू का ढोल बज रहा है। देख, मैं ये लैला, ये शीरीं, ये हीर, और ये सोहनी की चिट्टी उंगलियों के नाखूनों का, इनके आशिकों के खून में भिगोकर मुसल्सल चालीस चांदनी रातों में तैयार किया हुआ सफूफ फेंकता हूं, ऊपर वाले की मेहर से ढोल फट जाएगा।"

यह कहके झोली से एक पुड़िया निकाली और जो चुटकी फूंकी तो ऐसा मालूम हुआ कि ज़मीन से आसमान तक हज़ारों उड़न-तश्तरियां उड़ रही हैं। पलक मारते ही दुनिया दहला देनेवाला धमाका सुना। देखते ही देखते आसमान का पर्दा फट गया। स्टेज के सीन की तरह फटा और सामने ही, पहली ड्योढ़ी पर ढोल बजता नजर आया। उड़न-तश्तरियां ढोल पर यों टूटीं गोया बाज़ टूटे हों।

इधर पंडित पांचकौड़ी ने भी आकाशी ढोल को देखकर ठहाका लगाया और वह हज़ारों तश्तरियां ढोल में समाती चली गईं। ढोल बजता रहा।

अब ढोल मोशाय बोले, "अब बोलो ओश्ताद, अब हम दूशरा आकाश में जाता हाय।"

फिर सीन बदला, फिर बदला। हम सब ठगे-से खड़े देखते ही रह गए! कभी मौलवी साहब कल्लू बीर को भेजते तो पंडित जी चौंसठ योगनियों में से एक को उसके पीछे छोड़ देते, भैरों, बरनापीर, चंडी,

और दो करोड़ की लक्ष्मी घर से भाग गई।

मेरी गृहलक्ष्मी ने कहा कि इन मौलवी साहब से न बनेगा, महरी बतलाती थी कि कालीबाड़ी में आजकल एक बंगाली पंडित आया हुआ है, वो सातों विद्या जानता है। उसे कामरू-कमच्छा की देवी सिद्ध है।

मौलवी साहब को सुनकर तैश आ गया, बोले, "साहब, मेरे पास भी इल्म है। मैं भी अपना हुनर दिखलाऊंगा।"

दूसरे दिन से दो इल्मों की लड़ाई चली। एक तरफ मौलवी साहब बैठे, दूसरी ओर यंत्राचार्य, तंत्रतीर्थ, तंत्र-वाचस्पति पंडित पांचकौड़ी ढोल।

मौलवी साहब ने अपनी नम्बर ३ की डिब्बी का सुरमा आंजकर फलक नम्बर एक को देखा और फरमाया, "ऊपर वाले तेरी कुदरत! पहली ड्योढ़ी पर जादू का ढोल बज रहा है। देख, मैं ये लैला, ये शीरीं, ये हीर, और ये सोहनी की चिट्टी उंगलियों के नाखूनों का, इनके आशिकों के खून में भिगोकर मुसल्सल चालीस चांदनी रातों में तैयार किया हुआ सफूफ फेंकता हूं, ऊपर वाले की मेहर से ढोल फट जाएगा।"

यह कहके झोली से एक पुड़िया निकाली और जो चुटकी फूंकी तो ऐसा मालूम हुआ कि ज़मीन से आसमान तक हज़ारों उड़न-तश्तरियां उड़ रही हैं। पलक मारते ही दुनिया दहला देनेवाला धमाका सुना। देखते ही देखते आसमान का पर्दा फट गया। स्टेज के सीन की तरह फटा और सामने ही, पहली ड्योढ़ी पर ढोल बजता नज़र आया। उड़न-तश्तरियां ढोल पर यों टूटीं गोया बाज़ टूटे हों।

इधर पंडित पांचकौड़ी ने भी आकाशी ढोल को देखकर ठहाका लगाया और वह हज़ारों तश्तरियां ढोल में समाती चली गईं। ढोल बजता रहा।

अब ढोल मोशाय बोले, "अब बोलो ओश्ताद, अब हम दूशरा आकाश में जाता हाय।"

फिर सीन बदला, फिर बदला। हम सब ठगे-से खड़े देखते ही रह गए! कभी मौलवी साहब कल्लू बीर को भेजते तो पंडित जी चौंसठ योगनियों में से एक को उसके पीछे छोड़ देते, भैरों, बरनापीर, चंडी,

मौलवी साहब ने इस बार दोनों देगें हथिया लीं और उन्हें लेकर तेजी से उड़े। बीच में मेमोरियल वेल पड़ा। मौलवी साहब ने लपककर दोनों देगें कुएं में डाल दीं। उसमें गदर में मारे गए अंग्रेज़ों के अनगिनत प्रेत हैं जिन्होंने अब भी 'क्विट इण्डिया' नहीं किया।

मौलवी ने ठहाका लगाकर कहा, "हः-हः, अब कैसे पाम्रोगे !"

ढोल बोले, "खैर, कोई हर्जा नेई। इसमें कुछ काल ओवरटा लगेगा पर तुमको हाम शूंश शांप बोना देगा। मुर्गा जोन शे तुम छूट गया, कारोन कि मुर्गा बौत हैं, परन्तु शूंश शांप बौत कम हाय।"

अब आपसे क्या अर्ज़ करूं ! कानपुर के मेमोरियल वेल से माल रोड पर आनेवाला सूंस-सांप हमारे बेचारे मौलवी साहब हैं। बेचारे अजायबघर में रक्खे गए।

ढोल उसकी दशा देखकर बोले, "एक मानुप को पोशु बोना कर हाम अच्छा नेई किया। अतः अब श्री तीर्थराज के शोंगम की एक शूंश को हाम मानुप बनाएगा।"

२६ अक्टूबर की रात को १२ बजे संगम पर तंत्रतीर्थ पांचकौड़ी ढोल एक सूंस को मनुष्य बनाएंगे। उन्होंने मुझे यह चमत्कार दिखलाने का वचन दिया है।

मौलवी साहब ने इस बार दोनों देगें हथिया लीं और उन्हें लेकर तेजी से उड़े। बीच में मेमोरियल वेल पड़ा। मौलवी साहब ने लपककर दोनों देगें कुएं में डाल दीं। उसमें गदर में मारे गए अंग्रेज़ों के अनगिनत प्रेत हैं जिन्होंने अब भी 'क्विट इण्डिया' नहीं किया।

मौलवी ने ठहाका लगाकर कहा, "हः-हः, अब कैसे पाओगे !"

ढोल बोले, "खैर, कोई हर्जा नेई। इसमें कुछ काल ओवरश लगेगा पर तुमको हाम शूंश शांप बोना देगा। मुर्गा जोन शे तुम छूट गया कारोन कि मुर्गा बोत हैं, परन्तु शूंश शांप बोत कम हाय।"

अब आपसे क्या अर्ज करूं ! कानपुर के मेमोरियल वेल से माल रोड पर आनेवाला सूंस-सांप हमारे बेचारे मौलवी साहब हैं। बेचारे अजायबघर में रक्खे गए।

ढोल उसकी दशा देखकर बोले, "एक मानुष को पोशु बोना कर हाम अच्छा नेई किया। अतः अब श्री तीर्थराज के शोंगम को एक शूंश को हाम मानुष बनाएगा।"

२६ अक्टूबर की रात को १२ बजे संगम पर तंत्रतीर्थ पांचकौड़ी ढोल एक सूंस को मनुष्य बनाएंगे। उन्होंने मुझे यह चमत्कार दिखलाने का वचन दिया है।

पब्लिक स्टेटमेण्ट नहीं दे सकता। हाउएवर, मैं तुमको तहेदिल से उस चेतावनी के लिए धन्यवाद देता हूं। तुम्हें इस वक्त खत लिखने का मेरा खास मकसद यह है कि मेरे सामने राष्ट्रीय जलशक्ति अनुसंधानशाला की रिपोर्ट रक्खी है। उनका कहना है कि होली में हर साल जितना पानी बरबाद किया जाता है उतने पानी से देश के तीन हज़ार सिनेमाघरों में बिजली सप्लाई की जा सकती है। यह तो बड़े नुकसान और फिक्र और अफसोस की बात है। अलावा इसके, कुछ भी कहो, हमारी फिल्में भारत में भावनात्मक एकता ला ही रही हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर तरफ एक-से गीत गाए जाते हैं। इसलिए ये कला की रक्षा का सवाल भी है। मैं हिन्दुस्तानी संगीत को बहुत सुनने के बाद भी अपने-आपको उसका कुदरती एडमायरर नहीं बना पाया क्योंकि नहाते वक्त कभी गुनगुनाने की ज़रूरत महसूस करने पर मैं अब तक पुरानी अंग्रेज़ी तर्ज़ें ही गुनगुनाता हूं। तुम इस फन के भी माहिर हो, लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि तुम सिनेमाघरों की अहमियत पर ज़ोर देते हुए होली की दकियानूस रंगबाज़ी बन्द करने के लिए कानून बनाने की सिफारिश अपनी भावनात्मक एकता की रिपोर्ट में करो।

तुम्हारा—जवाहर !"

सर्वदानन्द के घर से ही मैंने मद्रास में अपने पुराने मित्र और तमिल 'कल्कि' तथा अंग्रेज़ी 'स्वराज्य' के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री सदाशिवम् से ट्रंककॉल मिलाई। गोसाईं जी की 'धीरज धर्म मित्र अरु नारी' वाली उक्ति के जोड़ ही की कोई उक्ति तमिल भाषा में लिखित महाकवि कम्बन की रामायण से पढ़कर भाव समझने की प्रार्थना मैंने सदाशिवम् जी से की। वे चक्रवर्ती राजाजी के खास आदमी हैं। उन्होंने मुझे इस प्रकार समाचार दिया :

"हाल ही में अमेरिका ने सूर्य का अनुसंधान करने के लिए शून्य में एक अनुसंधानशाला खोली है। उससे उपलब्ध कुछ तथ्य और आंकड़े आज ही अमेरिकन एम्बेसी ने श्री राजीजी के पास भेजे हैं। उनसे यह पता चलता है कि सूरज के सात रंगों में से साढ़े तीन दशमलव जीरो-जीरो सात रंगों का स्टाक अकेले भारत देश की होली में ही प्रति वर्ष

पब्लिक स्टेटमेण्ट नहीं दे सकता। हाउएवर, मैं तुमको तहेदिल से उस चेतावनी के लिए धन्यवाद देता हूं। तुम्हें इस वक्त खत लिखने का मेरा खास मकसद यह है कि मेरे सामने राष्ट्रीय जलशक्ति अनुसंधानशाला की रिपोर्ट रक्खी है। उनका कहना है कि होली में हर साल जितना पानी बरबाद किया जाता है उतने पानी से देश के तीन हजार सिनेमाघरों में बिजली सप्लाई की जा सकती है। यह तो बड़े नुकसान और फिक्र और अफसोस की बात है। अलावा इसके, कुछ भी कहो, हमारी फिल्में भारत में भावनात्मक एकता ला ही रही हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर तरफ एक-से गीत गाए जाते हैं। इसलिए ये कला की रक्षा का सवाल भी है। मैं हिन्दुस्तानी संगीत को बहुत सुनने के बाद भी अपने-आपको उसका कुदरती एडमायरर नहीं बना पाया क्योंकि नहाते वक्त कभी गुनगुनाने की ज़रूरत महसूस करने पर मैं अब तक पुरानी अंग्रेजी तर्जें ही गुनगुनाता हूं। तुम इस फन के भी माहिर हो, लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि तुम सिनेमाघरों की अहमियत पर ज़ोर देते हुए होली की दकियानूस रंगबाज़ी बन्द करने के लिए कानून बनाने की सिफारिश अपनी भावनात्मक एकता की रिपोर्ट में करो।

तुम्हारा—जवाहर !"

सर्वदानन्द के घर से ही मैंने मद्रास में अपने पुराने मित्र और तमिल 'कल्कि' तथा अंग्रेज़ी 'स्वराज्य' के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री सदाशिवम् से ट्रंककॉल मिलाई। गोसाईं जी की 'धीरज धर्म मित्र अरु नारी' वाली उक्ति के जोड़ ही की कोई उक्ति तमिल भाषा में लिखित महाकवि कम्बन की रामायण से पढ़कर भाव समझने की प्रार्थना मैंने सदाशिवम् जी से की। वे चक्रवर्ती राजाजी के खास आदमी हैं। उन्होंने मुझे इस प्रकार समाचार दिया :

"हाल ही में अमेरिका ने सूर्य का अनुसंधान करने के लिए शून्य में एक अनुसंधानशाला खोली है। उससे उपलब्ध कुछ तथ्य और आंकड़े आज ही अमेरिकन एम्बेसी ने श्री राजीजी के पास भेजे हैं। उनसे यह पता चलता है कि सूरज के सात रंगों में से साढ़े तीन दशमलव जीरो-जीरो सात रंगों का स्टाक अकेले भारत देश की होली में ही प्रति वर्ष

कार दोनों ही बालबाल सही-सलामत बच गए। इस अचानक मिलने को सरोज जी ने तीन खबरें मुझे देकर सार्थक बना दिया। सरोज ने एक तो चलती हुई साहित्यिक खबर यह दी कि श्री निर्मलचन्द्र चतुर्वेदी ने श्री चन्द्रभान गुप्ता जी से कहकर हमारे श्रद्धेय भैया साहब राय बहादुर पण्डित श्री नारायण जी चौबे को भांग की ठेकी खोलने का लाइसेन्स दिला दिया है। सरोज ने बतलाया कि पं० इलाचन्द्र जोशी इस समाचार को सुनकर मैया साहब से साझा करने की योजना लिए मन ही मन में घुट रहे हैं, किन्तु उनके मन का एक भी विस्फोटक तत्त्व उनके स्वभावगत संकोच को तोड़कर भैया साहब से स्पष्ट रूप से कह नहीं पाता।

दूसरे यह बतलाया कि श्री बेढब बनारसी अपने नाश्ते के लिए काशी से एक हण्डिया में पांच सेर मगदल लाए थे। बेधड़क, भ्रमर और योगीन्द्रपति त्रिपाठी ने वह हण्डिया उड़ाई तो साथ-साथ, पर बाद में बंटवारे पर झगड़ा हो गया। इसी बीच में पड़ोसी अधिकार प्रेस वाला कोई कम्युनिस्ट हण्डिया लेकर चम्पत हो गया।

तीसरा एक छपा हुआ साहित्यिक वक्तव्य सरोज ने मुझे दिखलाया जो कि होली के मेले में वितरित किया जाएगा। वक्तव्य श्री भगवती चरण वर्मा, श्रीरामधारी सिंह दिनकर और श्री यशपाल ने सम्मिलित रूप से दिया है। वक्तव्य का शीर्षक है, 'होली में आग का दुरुपयोग, एक अनन्त मार्मिक समस्या।' वक्तव्य इस प्रकार है :

"हम भारत के साहित्यकार होली के अवसर पर अपने समाज द्वारा मनों-टनों लकड़ी फूंककर मूल्यवान राष्ट्रीय सम्पत्ति का नाश करने की सनातन प्रवृत्ति को महती चिंता और महद् चिंतन की दृष्टि से निरंतर देखते ही चले जा रहे हैं। इससे मानवता का साहित्यिक, सांस्कृतिक आर्थिक, नैतिक एवं सैद्धान्तिक अकल्याण हो रहा है। होली ऐसे मौसम में आती है जबकि आग तापने का मज़ा खत्म हो जाता है। होली की आग में चाय या खाना भी नहीं पकाया जा सकता क्योंकि यह अधर्म है। होली युगों-युगों से धू-धू कर जलती हुई मानो अपनी मौन लपटों में आहें भर-भरकर कहती है कि 'मैं विरहिन ऐसी जली कोयला भई न राख।'

कार दोनों ही बालबाल सही-सलामत बच गए। इस अचानक मिलने को सरोज जी ने तीन खबरें मुझे देकर सार्थक बना दिया। सरोज ने एक तो चलती हुई साहित्यिक खबर यह दी कि श्री निर्मलचन्द्र चतुर्वेदी ने श्री चन्द्रभान गुप्ता जी से कहकर हमारे श्रद्धेय भैया साहब राय बहादुर पण्डित श्री नारायण जी चौबे को भांग की ठेकी खोलने का लाइसेन्स दिला दिया है। सरोज ने बतलाया कि पं० इलाचन्द्र जोशी इस समाचार को सुनकर भैया साहब से साझा करने की योजना लिए मन ही मन में घुट रहे हैं, किन्तु उनके मन का एक भी विस्फोटक तत्त्व उनके स्वभावगत संकोच को तोड़कर भैया साहब से स्पष्ट रूप से कह नहीं पाता।

दूसरे यह बतलाया कि श्री बेढब बनारसी अपने नाश्ते के लिए काशी से एक हण्डिया में पांच सेर मगदल लाए थे। बेधड़क, भ्रमर और योगीन्द्रपति त्रिपाठी ने वह हण्डिया उड़ाई तो साथ-साथ, पर बाद में बंटवारे पर झगड़ा हो गया। इसी बीच में पड़ोसी अधिकार प्रेस वाला कोई कम्युनिस्ट हण्डिया लेकर चम्पत हो गया।

तीसरा एक छपा हुआ साहित्यिक वक्तव्य सरोज ने मुझे दिखलाया जो कि होली के मेले में वितरित किया जाएगा। वक्तव्य श्री भगवती चरण वर्मा, श्रीरामधारी सिंह दिनकर और श्री यशपाल ने सम्मिलित रूप से दिया है। वक्तव्य का शीर्षक है, 'होली में आग का दुरुपयोग, एक अनन्त मार्मिक समस्या।' वक्तव्य इस प्रकार है :

"हम भारत के साहित्यकार होली के अवसर पर अपने समाज द्वारा मनों-टनों लकड़ी फूंककर मूल्यवान राष्ट्रीय सम्पत्ति का नाश करने की सनातन प्रवृत्ति को महती चिंता और महद् चिंतन की दृष्टि से निरंतर देखते ही चले जा रहे हैं। इससे मानवता का साहित्यिक, सांस्कृतिक आर्थिक, नैतिक एवं सैद्धान्तिक अकल्याण हो रहा है। होली ऐसे मौसम में आती है जबकि आग तापने का मज़ा खत्म हो जाता है। होली की आग में चाय या खाना भी नहीं पकाया जा सकता क्योंकि यह अधर्म है। होली युगों-युगों से धू-धू कर जलती हुई मानो अपनी मौन लपटों में आहें भर-भरकर कहती है कि 'मैं बिरहिन ऐसी जली कोयला भई न राख।'

इस साहित्यिक वक्तव्य के नीचे श्री शिवसिंह सरोज के व्यक्तिगत प्रभाव से प्राप्त डिप्टी मेयर कैप्टेन वेदरत्न मोहन की डायर मीकिन कम्पनी का कलात्मक विज्ञापन भी छपा है। 'विरहियों की चिर संगिनी...'' आगे ह्विस्की-बियर की बोतलों के चित्र हैं।

बोतलों के चित्र देखते ही हमारा भंग का नशा उखड़ गया। इच्छा रहते हुए भी फिर कहीं हम जा न सके।

इस साहित्यिक वक्तव्य के नीचे श्री शिवसिंह सरोज के व्यक्तिगत प्रभाव से प्राप्त डिप्टी मेयर कैप्टेन वेदरत्न मोहन की डायर मीकिन कम्पनी का कलात्मक विज्ञापन भी छपा है। 'विरहियों की चिर संगिनी···" आगे ह्विस्की-बियर की बोतलों के चित्र हैं।

बोतलों के चित्र देखते ही हमारा भंग का नशा उखड़ गया। इच्छा रहते हुए भी फिर कहीं हम जा न सके।

जितनी वरफ वची उसे अरदली-वेरा लोग इन ऐसों के हाथ वेचकर अपने कौड़े सीधे करते हैं। तभी तो वेचते है पांच आने मन। हमारे यहां तो सरकार, सीधे 'डीपू' से माल आता है। जैसा आर्डर हुआ वैसा किया। डीपू वाले अभी कह दें कि दो आने मन वेचो, हम दो आने वेचें, नहीं तो चाहे घुल जाए, आठ आने से पौने आठ नहीं हो सकते गरीवपरवर, हां।"

भाई रमजानी ने कादिर मियां को टोकते हुए गम्भीरतापूर्वक मुंह वनाकर कहा, "अमां, होगा भी। तुम भी यार, वस वही काजी जी दुवले क्यों ? कहे शहर के अंदेसे से। न भाई, दूर करो इस झगड़े को। असल असल ही है और नकल नकल ही। ये वेटा पीरू कै दिन वरफ वेचेंगे ?"

कादिर मियां की पीठ पर हाथ रखकर रमज़ानी ने उसे तसल्ली दी। छोटे मियां मुस्कराकर चले गए।

पीरू मियां शाने हिलाते और कदम तौल-तौलकर रखते हुए कादिर की दूकान तक आए और अकड़कर कहने लगे, "शक्ल चुड़ैलों की, मिज़ाज परियों के। कसम खुदा की, वह भर्राटेदार रसीद किया होगा कि सव सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाएगी, वेटा। हमारे गाहकों को भड़काता है ?"

"हूं ! क्या सहल समझ लिया है किसीको भर्राटेदार रसीद कर देना। किसी सकत के पाले नहीं पड़े हो अव तक, वरना यह सारी सेखी हवा हो जाती मियां, समझे ?" अकड़कर छाती वाहर की ओर निकालते हुए कादिर ने कहा।

दो कदम आगे वढ़कर पीरू वोला, "क्या कहा—ज़रा फिर से कहना ?"

"कहा क्या, जो जी में आया कहा। तुमसे जो वनाए वने वना लो।" कादिर की घुटी हुई खोपड़ी पर पीरू का कड़ाकेदार हाथ पड़ा चट से। दो-तीन आदमी वचाव करने के लिए वीच में पड़ गए। ज़मीन से गिरी हुई दुपल्ली टोपी को उठाकर सिर पर जमाते हुए कादिर ने कहा, "वड़े सोरे-पुस्त वनते हैं। रुस्तमे-हिन्द हो रहे हैं। क्या कमज़ोर समझ के झप से मार दिया। जवानी की कसम, इसका वदला न लिया तो नाम कादिर नहीं। मुसलमान नहीं काफिर कहना, काफिर, हां।"

पीरू कुर्सी पर चुपचाप वैठा-वैठा हाथ की नसें चटकाता रहा। कादिर रमज़ानी से धीरे से कहने लगा, "शाह के यहां चलते हो ?"

जितनी वरफ वची उसे अरदली-वेरा लोग इन ऐसों के हाथ वेचकर अपने कौड़े सीधे करते हैं। तभी तो वेचते है पांच आने मन। हमारे यहां तो सरकार, सीधे 'डीपू' से माल आता है। जैसा आर्डर हुआ वैसा किया। डीपू वाले अभी कह दें कि दो आने मन वेचो, हम दो आने वेचें, नहीं तो चाहे घुल जाए, आठ आने से पौने आठ नहीं हो सकते गरीवपरवर, हां।"

भाई रमजानी ने कादिर मियां को टोकते हुए गम्भीरतापूर्वक मुंह वनाकर कहा, "अमां, होगा भी। तुम भी यार, वस वही काजी जी दुवले क्यों? कहे शहर के अंदेसे से। न भाई, दूर करो इस झगड़े को। असल असल ही है और नकल नकल ही। ये वेटा पीरू कै दिन वरफ वेचेंगे?"

कादिर मियां की पीठ पर हाथ रखकर रमज़ानी ने उसे तसल्ली दी। छोटे मियां मुस्कराकर चले गए।

पीरू मियां शाने हिलाते और कदम तौल-तौलकर रखते हुए कादिर की दूकान तक आए और अकड़कर कहने लगे, "शक्ल चुड़ैलों की, मिज़ाज परियों के। कसम खुदा की, वह भर्राटेदार रसीद किया होगा कि सव सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाएगी, वेटा। हमारे गाहकों को भड़काता है?"

"हूं! क्या सहल समझ लिया है किसीको भर्राटेदार रसीद कर देना। किसी सकत के पाले नहीं पड़े हो अव तक, वरना यह सारी सेखी हवा हो जाती मियां, समझे?" अकड़कर छाती वाहर की ओर निकालते हुए कादिर ने कहा।

दो कदम आगे वढ़कर पीरू वोला, "क्या कहा—ज़रा फिर से कहना?"

"कहा क्या, जो जी में आया कहा। तुमसे जो वनाए वने वना लो।" कादिर की घुटी हुई खोपड़ी पर पीरू का कड़ाकेदार हाथ पड़ा चट से। दो-तीन आदमी वचाव करने के लिए वीच में पड़ गए। ज़मीन से गिरी हुई दुपल्ली टोपी को उठाकर सिर पर जमाते हुए कादिर ने कहा, "वड़े सोरे-पुस्त वनते हैं। रुस्तमे-हिन्द हो रहे हैं। क्या कमज़ोर समझ के झप से मार दिया। जवानी की कसम, इसका वदला न लिया तो नाम कादिर नहीं। मुसलमान नहीं काफिर कहना, काफिर, हां।"

पीरू कुर्सी पर चुपचाप वैठा-वैठा हाथ की नसें चटकाता रहा। कादिर रमज़ानी से धीरे से कहने लगा, "शाह के यहां चलते हो?"

से अब वह अपने कौतूहल को अधिक न बढ़ने दे सका। उसने आग्रहपूर्वक कादिर मियां से कहा, "अमां, भाई, कब चलते हो उनके यहां ? तुम भी यार खामखा को देर कर रहे हो। इन बेटा पीरू को खूब सबक मिलेगा उस्ताद, चोर साला !"

२

अवध की नवाबी से भी सम्भवत: दस-पांच वर्ष पहले ही पाटेनाले का वह मकान बना होगा। सामने की छोटी-छोटी पुरानी लखौरी ईंटें मकान से अपना सम्बन्ध छोड़कर दीवार को खोखला कर चुकी थीं। एकमंजिला छोटा-सा मकान सन् चौंतीस के भयंकर भूकम्प, और उससे भी बहुत पहले सन् सत्तावन के गदर की स्मृतियों की छाप अपने शरीर पर लगाकर जीर्ण-शीर्ण दशा में आज भी अपना एक महत्त्व रखता है। सामने छोटा-सा बैठकखाना, जिसमें एक फटी हुई दरी बिछी हुई, एक चौकी पर पुराना-सा गद्दा, उसपर तेल और स्याही के सैकड़ों धब्बों से भरी हुई दस-बारह पैवन्द लगी हुई छोटी-सी सफेद चादर पर मैला-सा गाव-तकिया रखा हुआ था। यही शाहजी का आसन था। चौकी के सामने एक छोटी-सी तिपाई पर लोहे का एक पंजा, दस-बीस लाल कपड़े के बने हुए गण्डे-तावीज़ और मिट्टी के प्याले में धूप और लोबान रक्खी हुई थी। चौकी के दूसरी ओर हुक्का और गडुआ रखा था। नीचे फर्श पर शाहजी के दो-तीन मुरीद और चार-पांच तावीज़ पानेवाले इच्छुक बैठे हुए शाहजी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

एक ने कहा, "तुमने कुछ सुना, कल मौलवी गंज में डाका पड़ा था ?" दूसरा बोला, "अमां हां भाई, दिन-दहाड़े डाका। अंग्रेज़ी राज न हुआ, अपने हिसाब जैसे नवाबी हो गई। साठ का सिन होने आया। जो कानों से सुना करते थे, वह अब आंखों से देखने में आ रहा है, भाईजान !"

तीसरे ने कहा, "यह कांग्रेसी राज है। सरकार कोई नादान थोड़े ही थी कि झट से सौराज दे दिया। गांधी जी बहुत सौराज-सौराज चिल्ला रहे थे। सरकार ने कहा, 'लो, हमने दे दिया, अब करो इन्तजाम बस भाई, उन्होंने सौराज तो दे दिया और झट से जेल से डाकू लोग

से अब वह अपने कौतूहल को अधिक न बढ़ने दे सका। उसने आग्रहपूर्वक कादिर मियां से कहा, "अमां, भाई, कब चलते हो उनके यहां ? तुम भी यार खामख़ा को देर कर रहे हो। इन बेटा पीरू को खूब सबक मिलेगा उस्ताद, चोर साला!"

२

अवध की नवाबी से भी सम्भवतः दस-पांच वर्ष पहले ही पाटेनाले का वह मकान बना होगा। सामने की छोटी-छोटी पुरानी लखौरी ईंटें मकान से अपना सम्बन्ध छोड़कर दीवार को खोखला कर चुकी थीं। एकमंजिला छोटा-सा मकान सन् चौंतीस के भयंकर भूकम्प, और उससे भी बहुत पहले सन् सत्तावन के गदर की स्मृतियों की छाप अपने शरीर पर लगाकर जीर्ण-शीर्ण दशा में आज भी अपना एक महत्त्व रखता है। सामने छोटा-सा बैठकखाना, जिसमें एक फटी हुई दरी बिछी हुई, एक चौकी पर पुराना-सा गद्दा, उसपर तेल और स्याही के सैकड़ों धब्बों से भरी हुई दस-बारह पैवन्द लगी हुई छोटी-सी सफेद चादर पर मैला-सा गाव-तकिया रक्खा हुआ था। यही शाहजी का आसन था। चौकी के सामने एक छोटी-सी तिपाई पर लोहे का एक पंजा, दस-बीस लाल कपड़े के बने हुए गण्डे-ताबीज़ और मिट्टी के प्याले में धूप और लोबान रक्खी हुई थी। चौकी के दूसरी ओर हुक्का और गडुआ रक्खा था। नीचे फर्श पर शाहजी के दो-तीन मुरीद और चार-पांच ताबीज़ पानेवाले इच्छुक बैठे हुए शाहजी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

एक ने कहा, "तुमने कुछ सुना, कल मौलवी गंज में डाका पड़ा था ?" दूसरा बोला, "अमां हां भाई, दिन-दहाड़े डाका। अंग्रेज़ी राज न हुआ, अपने हिसाब जैसे नवाबी हो गई। साठ का सिन होने आया। जो कानों से सुना करते थे, वह अब आंखों से देखने में आ रहा है, भाईजान!"

तीसरे ने कहा, "यह कांग्रेसी राज है। सरकार कोई नादान थोड़े ही थी कि झट से सौराज दे दिया। गांधी जी बहुत सौराज-सौराज चिल्ला रहे थे। सरकार ने कहा, 'लो, हमने दे दिया, अब करो इन्तजाम बस भाई, उन्होंने सौराज तो दे दिया और झट से जेल से डाकू लोग

दूसरा व्यक्ति बोला, "अमां, आए होंगे वही अपनी सल्तनत के सिल-सिले में। यह कांग्रेस वाले हैं। अंग्रेजी पढ़े-लिखे हैं तो क्या हुआ, अपना धर्म-ईमान थोड़े ही छोड़ते हैं ये लोग।"

सब लोग इस बातचीत से प्रभावित होकर कुछ देर के लिए मंत्रमुग्ध हो मूर्तिवत् बैठे रहे। वैसे ही अन्दर खड़ाऊं की खटखट ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। दूसरे ही क्षण दरवाज़ा खुला और शाहजी ने बैठक में प्रवेश किया।

अभ्यर्थना के लिए सब उठ खड़े हुए।

काला लम्बा-सा चोगा पहने, गले में सीपी, शंख, कौड़ियों और बड़े-बड़े मूंगों की पांच-छः मालाएं अस्तव्यस्त क्रम से पड़ी हुई थीं। दोनों कानों में इत्र की फुरहरियां लगी हुई, आंखों में महीन सुर्मा, सर के लम्बे-लम्बे बाल और छाती छूती हुई लम्बी दाढ़ी मेहंदी में रंगी हुई थी। दाढ़ी की जड़ों में सफेदी झलककर उनके श्याम मुखमण्डल की रौनक बढ़ा रही थी। एक ने झुककर फरशी सलाम करते हुए नम्रतापूर्वक कहा, "आदाब बजा लाता हूं हुज़ूर!"

"अख्खाह, मियां हुसेनी हैं। खुश रहो भाई, खुश रहो। कहो मियां, अच्छे तो रहे?" शाहजी ने पूछा।

"सब आपकी इनायत है, हुज़ूर। हम लोग इन्हीं कदमों के ज़ेर साये पड़े रहते हैं।"

"ना-ना भाई, ऐसी बात मत कहो। हम सब उसी परवरदिगार के बन्दे हैं। उसीके कदमों के ज़ेर साये परवरिश पाते हैं। तोबा, बिस्मिल्ला-उल-रहीमाने-रहीम! तू ही है, तू ही है!" दोनों कान पकड़कर हाथ और आंखें एक बार ऊपर की ओर उठाकर गद्गद भाव से, खड़ाऊं से पैर निकाल, दो जानू होकर वह चौकी पर बैठे। फिर धूप और लोबान के धुएं को हाथों में मल-मलकर चेहरे और दाढ़ी पर लगाने लगे।

"अरे हुज़ूर, हमारे लिए इस वक्त आप ही रसूल हैं गद्गद भाव से मियां हुसेनी ने कहा।

बैठे हुए दो-तीन व्यक्ति हां में हां मिलाने लगे। शाहजी बीच-बीच में उस बड़े जादूगर को बार-बार सिजदा कर किसी न किसी रूप में अपने

दूसरा व्यक्ति बोला, "अमां, आए होंगे वही अपनी सल्तनत के सिलसिले में। यह कांग्रेस वाले हैं। अंग्रेजी पढ़े-लिखे हैं तो क्या हुआ, अपना धर्म-ईमान थोड़े ही छोड़ते हैं ये लोग।"

सब लोग इस बातचीत से प्रभावित होकर कुछ देर के लिए मंत्रमुग्ध हो मूर्तिवत् बैठे रहे। वैसे ही अन्दर खड़ाऊं की खटखट ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। दूसरे ही क्षण दरवाज़ा खुला और शाहजी ने बैठक में प्रवेश किया।

अभ्यर्थना के लिए सब उठ खड़े हुए।

काला लम्बा-सा चोगा पहने, गले में सीपी, शंख, कौड़ियों और बड़े-बड़े मूंगों की पांच-छः मालाएं अस्तव्यस्त क्रम से पड़ी हुई थीं। दोनों कानों में इत्र की फुरहरियां लगी हुईं, आंखों में महीन सुर्मा, सर के लम्बे-लम्बे बाल और छाती छूती हुई लम्बी दाढ़ी मेहंदी में रंगी हुई थी। दाढ़ी की जड़ों में सफेदी झलककर उनके श्याम मुखमण्डल की रौनक बढ़ा रही थी। एक ने झुककर फरशी सलाम करते हुए नम्रतापूर्वक कहा, "आदाब बजा लाता हूं हुज़ूर!"

"अख्खाह, मियां हुसेनी हैं। खुश रहो भाई, खुश रहो। कहो मियां, अच्छे तो रहे?" शाहजी ने पूछा।

"सब आपकी इनायत है, हुज़ूर। हम लोग इन्हीं कदमों के ज़ेर साये पड़े रहते हैं।"

"ना-ना भाई, ऐसी बात मत कहो। हम सब उसी परवरदिगार के बन्दे हैं। उसीके कदमों के ज़ेर साये परवरिश पाते हैं। तोबा, बिस्मिल्ला-उल-रहीमाने-रहीम! तू ही है, तू ही है!" दोनों कान पकड़कर हाथ और आंखें एक बार ऊपर की ओर उठाकर गद्‌गद भाव से, खड़ाऊं से पैर निकाल, दो जानूं होकर वह चौकी पर बैठे। फिर धूप और लोबान के धुएं को हाथों में मल-मलकर चेहरे और दाढ़ी पर लगाने लगे।

"अरे हुज़ूर, हमारे लिए इस वक्त आप ही रसूल हैं गद्‌गद भाव से मियां हुसेनी ने कहा।

बैठे हुए दो-तीन व्यक्ति हां में हां मिलाने लगे। शाहजी बीच-बीच में उस बड़े जादूगर को बार-बार सिजदा कर किसी न किसी रूप में अपने

कि तुम इस गरीब को सताते हो तो चुटकी बजाते तुम्हारे यह कल्ले-कल्ले दुरुस्त कर दें। फिर आपकी शान में हुजूर उसने ऐसी बात कही कि मेरी आंखों में खून उतर आया। हमने कहा कि तुमने शाहजी को समझा क्या है? उनकी शान में ऐसी बात निकालते हो! दस आदमी उसीको जेर करने लगे हुजूर, लेकिन अपने आगे वह कम्बख्त किसीकी कुछ सुनता ही नहीं। जाहिल आदमी, बेपढ़ा-लिखा—बस अपनी ताकत के घमण्ड में भूला हुआ है।"

शाहजी बोले, "अमां, तुम उसकी कुछ फिक्र न करो। हमें कोई कुछ कहता है, कहने दो। हम तो कहते हैं कि भाई हम नाचीज और तुम हमारे लिए सब कुछ हो। मगर हां, खुदा के किसी गरीब और कमजोर बन्दे को सताओगे तो इसका नतीजा तुम्हारे लिए बुरा होगा। अभी नरसों की बात है। राजा बाजार से मैं आ रहा था। एक आदमी एक कमजोर को दे हण्टर-दे हण्टर पीट रहा था। बेचारे ने हमारे पैर पकड़ लिए। कहा, शाहजी बचाइए। यह हमारी मजदूरी भी नहीं देता और खामखां मार रहा है। हमने उसे समझाया तो वह हमींको मारने दौड़ा। हमने कहा, 'भई, मार लो मगर इस गरीब को मत मारो।' इसपर वह अकड़ गया और एक हण्टर कसके फिर उस बेचारे को मार दिया। हमने कहा, 'खबरदार अब मत मारना।' लेकिन वह न माना, फिर जो हण्टर उठाया तो खुदा की मर्जी उसका वह हाथ सर्र से कटकर गिर पड़ा।"

रमजानी, कादिर और बैठे हुए अन्य लोग मुग्ध भाव से 'वाह-वाह' कर उठे।

कादिर ने विनीत भाव से हाथ जोड़कर कहा, "बस हुजूर, यही हालत अपनी है। वह हर दम मारता-पीटता रहता है। गाली-गलौज और जबरदस्ती करता है। अब उससे कौन बोले? वह तो हुजूर रुस्तमेहिन्द हो रहा है, और हम कहते हैं कि हमारा भी अल्लाह है। और शाहजी, वह सब देखते हैं, सबके मन का हाल जानते हैं। वही हमारी खबर लेंगे।"

शाहजी बोले, "घबराओ मत भाई। खुदा बड़ा कारसाज है। उसने तुम्हें यहां तक भेज दिया, वही तुम्हारी अब खबर लेगा। वह किसीपर

कि तुम इस गरीब को सताते हो तो चुटकी बजाते तुम्हारे यह कल्ले-कल्ले दुरुस्त कर दें। फिर आपकी शान में हुजूर उसने ऐसी बात कही कि मेरी आंखों में खून उतर आया। हमने कहा कि तुमने शाहजी को समझा क्या है? उनकी शान में ऐसी बात निकालते हो! दस आदमी उसीको जेर करने लगे हुजूर, लेकिन अपने आगे वह कम्बख्त किसीकी कुछ सुनता ही नहीं। जाहिल आदमी, बेपढ़ा-लिखा—बस अपनी ताकत के घमण्ड में भूला हुआ है।"

शाहजी बोले, "अमां, तुम उसकी कुछ फिक्र न करो। हमें कोई कुछ कहता है, कहने दो। हम तो कहते हैं कि भाई हम नाचीज और तुम हमारे लिए सब कुछ हो। मगर हां, खुदा के किसी गरीब और कमज़ोर बन्दे को सताओगे तो इसका नतीजा तुम्हारे लिए बुरा होगा। अभी नरसों की बात है। राजा बाज़ार से मैं आ रहा था। एक आदमी एक कमज़ोर को दे हण्टर-दे हण्टर पीट रहा था। बेचारे ने हमारे पैर पकड़ लिए। कहा, शाहजी बचाइए। यह हमारी मजदूरी भी नहीं देता और खामखां मार रहा है। हमने उसे समझाया तो वह हमींको मारने दौड़ा। हमने कहा, 'भई, मार लो मगर इस गरीब को मत मारो।' इसपर वह अकड़ गया और एक हण्टर कसके फिर उस बेचारे को मार दिया। हमने कहा, 'खबरदार अब मत मारना।' लेकिन वह न माना, फिर जो हण्टर उठाया तो खुदा की मर्जी उसका वह हाथ सर्र से कटकर गिर पड़ा।"

रमजानी, कादिर और बैठे हुए अन्य लोग मुग्ध भाव से 'वाह-वाह' कर उठे।

कादिर ने विनीत भाव से हाथ जोड़कर कहा, "बस हुजूर, यही हालत अपनी है। वह हर दम मारता-पीटता रहता है। गाली-गलौज और ज़बरदस्ती करता है। अब उससे कौन बोले? वह तो हुजूर रुस्तमेहिन्द हो रहा है, और हम कहते हैं कि हमारा भी अल्लाह है। और शाहजी, वह सब देखते हैं, सबके मन का हाल जानते हैं। वही हमारी खबर लेंगे।"

शाहजी बोले, "घबराओ मत भाई। खुदा बड़ा कारसाज़ है। उसने तुम्हें यहां तक भेज दिया, वही तुम्हारी अब खबर लेगा। वह किसीपर

लेंगे। अपने को बड़ा धन्ना सेठ समझते थे, सरऊ। कल ही लो, गरीब और कमजोर को सताने का क्या मजा मिलता है ?"

इसने पूछा, उसने प्रश्न किया और मियां कादिर बताना ही चाहते थे कि रमजानी ने उसके हाथ की चुटकी लेते हुए कहा, "तुम भी यार, कम्पनी बाग में चरने के लिए छोड़ देने के काबिल हो। लाख बार समझा दिया कि फजूल की बकवास न किया करो। तुम क्या खाके किसीसे कुछ समझोगे, डेढ़ पसली के आदमी..."

मुस्कराकर अपने दोनों कान पकड़ते हुए मियां कादिर ने उससे कहा, "अच्छा बाबा, गलती हुई माफ कर दो मियां।"

"नहीं, आप खामखां की शान में आ जाते हैं फजूल की बकवास शुरू कर दी। अभी कहीं वह भी किसी औलिया से हुआ तावीज ले आए तो ?"

"ले बस, अब आप रहने दीजिए। शाहजी का इल्म काटनेवाला दुनिया में है कौन ? भुट्टे-सा भूनकर रख देंगे वह उसको भी।"

रमजानी के मन में एक कौतूहल था। शाहजी की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा सुनकर उसे सिद्ध साधकों पर एक अनुपम श्रद्धा और तांत्रिक विधानों पर अटल विश्वास जम चला था। वह बड़े उत्साह के साथ शाहजी का भक्त बन गया।

उस दिन वह सवेरे जाकर कादिर के लिए तावीज ले आया। और शाम को श्मशान-पूजन के लिए शाहजी की आज्ञानुसार, एक बोतल दारू, सवा गज लाल टुकड़ा, बीस आने पैसे, इत्र की फुरहरी, फूल और बताशे आदि शाहजी की सेवा में पहुंचाकर उनके काले चोगे का दामन चूमकर चला आया। शाहजी ने भी उसको और उसके मित्र को अभय-दान देकर दूसरे दिन सवेरे ही मियां पीरबख्श की शक्ति क्षीण कर देने का विश्वास दिलाया।

दूसरे दिन सवेरे—

कादिर अपनी दूकान पर बैठा बीड़ी पी रहा था। प्रसन्नता किल

भूलेंगे। अपने को बड़ा धन्ना सेठ समझते थे, सरऊ। कल ही लो, गरीब और कमजोर को सताने का क्या मजा मिलता है ?"

इसने पूछा, उसने प्रश्न किया और मियां कादिर बताना ही चाहते थे कि रमजानी ने उसके हाथ की चुटकी लेते हुए कहा, "तुम भी यार, कम्पनी बाग में चरने के लिए छोड़ देने के काबिल हो। लाख बार समझा दिया कि फजूल की बकवास न किया करो। तुम क्या खाके किसीसे कुछ समझोगे, डेढ़ पसली के आदमी···"

मुस्कराकर अपने दोनों कान पकड़ते हुए मियां कादिर ने उससे कहा, "अच्छा बाबा, गलती हुई माफ कर दो मियां।"

"नहीं, आप खामखां की शान में आ जाते हैं फजूल की बकवास शुरू कर दी। अभी कहीं वह भी किसी औलिया से हुआ तावीज ले आए तो ?"

"ले बस, अब आप रहने दीजिए। शाहजी का इल्म काटनेवाला दुनिया में है कौन ? भुट्टे-सा भूनकर रख देंगे वह उसको भी।"

रमजानी के मन में एक कौतूहल था। शाहजी की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा सुनकर उसे सिद्ध साधकों पर एक अनुपम श्रद्धा और तांत्रिक विधानों पर अटल विश्वास जम चला था। वह बड़े उत्साह के साथ शाहजी का भक्त बन गया।

उस दिन वह सवेरे जाकर कादिर के लिए तावीज ले आया। और शाम को श्मशान-पूजन के लिए शाहजी की आज्ञानुसार, एक बोतल दारू सवा गज लाल टुकड़ा, बीस आने पैसे, इत्र की फुरहरी, फूल और बताशे आदि शाहजी की सेवा में पहुंचाकर उनके काले चोगे का दामन चूमकर चला आया। शाहजी ने भी उसको और उसके मित्र को अभय-दान देक दूसरे दिन सवेरे ही मियां पीरबख्श की शक्ति क्षीण कर देने का विश्वा दिलाया।

दूसरे दिन सवेरे—

कादिर अपनी दूकान पर बैठा पीड़ी पी रहा था। प्रसन्नता कि

वरना चटनी की तरह पीस दिया होता।"

कादिर मियां का दिमाग आज सातवें आसमान से बातचीत कर रहा था। वह दूकान से उतरकर पीरू से गुंथ गया, दो-तीन हाथ भी चला दिए।

कुर्ता फट जाने और अपमान की जलन से आवेश में आकर उसने कादिर की पसली पर कस-कसकर चार घूंसे जमा दिए।

दुबला-पतला शक्तिहीन कादिर इस भीषण मार को सह न सका। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे उसकी पसलियां टूट गई हों। उसकी आंखों के सामने एकदम अंधेरा-सा छा गया। उसका दम घुटने लगा। सिर चकरा गया और वह एक भीषण यातनामयी आह खींचकर निर्जीव-सा हो पृथ्वी पर गिर पड़ा। सिर से खून बहने लगा।

लाल-लाल आंखों को देखकर आस-पास खड़े हुए व्यक्तियों को यह साहस न हुआ कि पीरू को कुछ भी कहें।

एक व्यक्ति दौड़ता हुआ जाकर कोतवाली में रिपोर्ट लिखवा आया और बाकी तीन-चार आदमी कादिर को होश में लाने की चेष्टा करने लगे।

पीरू अनमने भाव से कुर्सी पर टांग चढ़ाकर बैठा सिगरेट पीता हुआ आसमान की ओर चुपचाप ताक रहा था।

पुलिस आई और तहकीकात कर पीरू को पकड़ ले गई। डाक्टर आया और उसने चोट की परीक्षा कर कादिर को फौरन अस्पताल ले जाने की सलाह दी।

डाक्टर के प्रयत्नों से कादिर होश में आया। आंखें खोलकर कातर भाव से उसने एक बार आसपास खड़े हुए लोगों को निहारा। कराहते हुए कादिर ने धीरे-धीरे कहा, "अरे रमजानी कहां है ? उसे शाहजी के पास भेजो। साले ने हड्डी-पसली तोड़ डाली। खुदा इसे गारत करे।" फिर दोनों हाथ थोड़ा ऊपर उठाने की चेष्टा करते हुए दीन भाव से आकाश की ओर ताककर उसने कहा, "अल्लाह करे, उस साले का बेड़ा गर्क हो···अरे मेरी अम्मां ! आह ! आह ! ! !"

अस्पताल में शाम को रमजानी ने कादिर को बतलाया कि शाहजी

वरना चटनी की तरह पीस दिया होता।"

कादिर मियां का दिमाग आज सातवें आसमान से बातचीत कर रहा था। वह दूकान से उतरकर पीरू से गुंथ गया, दो-तीन हाथ भी चला दिए।

कुर्ता फट जाने और अपमान की जलन से आवेश में आकर उसने कादिर की पसली पर कस-कसकर चार घूंसे जमा दिए।

दुबला-पतला शक्तिहीन कादिर इस भीषण मार को सह न सका। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे उसकी पसलियां टूट गई हों। उसकी आंखों के सामने एकदम अंधेरा-सा छा गया। उसका दम घुटने लगा। सिर चकरा गया और वह एक भीषण यातनामयी आह खींचकर निर्जीव-सा हो पृथ्वी पर गिर पड़ा। सिर से खून बहने लगा।

लाल-लाल आंखों को देखकर आस-पास खड़े हुए व्यक्तियों को यह साहस न हुआ कि पीरू को कुछ भी कहें।

एक व्यक्ति दौड़ता हुआ जाकर कोतवाली में रिपोर्ट लिखवा आया और बाकी तीन-चार आदमी कादिर को होश में लाने की चेष्टा करने लगे।

पीरू अनमने भाव से कुर्सी पर टांग चढ़ाकर बैठा सिगरेट पीता हुआ आसमान की ओर चुपचाप ताक रहा था।

पुलिस आई और तहकीकात कर पीरू को पकड़ ले गई। डाक्टर आया और उसने चोट की परीक्षा कर कादिर को फौरन अस्पताल ले जाने की सलाह दी।

डाक्टर के प्रयत्नों से कादिर होश में आया। आंखें खोलकर कातर भाव से उसने एक बार आसपास खड़े हुए लोगों को निहारा। कराहते हुए कादिर ने धीरे-धीरे कहा, "अरे रमजानी कहां है? उसे शाहजी के पास भेजो। साले ने हड्डी-पसली तोड़ डाली। खुदा इसे गारत करे।" फिर दोनों हाथ थोड़ा ऊपर उठाने की चेष्टा करते हुए दीन भाव से आकाश की ओर ताककर उसने कहा, "अल्लाह करे, उस साले का बेड़ा गर्क हो···अरे मेरी अम्मां! आह! आह!!!"

अस्पताल में शाम को रमजानी ने कादिर को बतलाया कि शाहजी